### DAMAGE BOOK

UNIVERSAL LIBRARY OU\_176847
AWWINN

Call No. H923:254 Accession No. H503
Author गालवाय, राज कियोर

This book should be returned on or before the date last marked below.

### महात्मा गान्धीकी नात्र्याखाली-यात्रा

लेखक:— हिन्दी के यशस्वी पत्रकार पं० रामकिशोर मालवोय

प्रकाशक :-ग्रादर्श हिन्दी पुस्तकालय
४१६, श्रहियापुर,
इलाहाबाद।

ाम |रण }

मई १९४७

प्रकाशक:--

सुशीलकृष्ण शुक्त त्र्यादर्श हिन्दी पुस्तकालय

४१६, ऋहियापुर,

इलाहाबाद्।

मुद्रक— संगमलाल जायसवाल, जायसवाल प्रेस कीटगंज, प्रयाग ।

# विषय-सूची --:\*:-

विषय				तेब्स	संख्या
यात्रा का ऐति।	•••	१			
कांग्रेस ऋौर मु	् (स्लिम	लीग	•••	•••	Ę
लीग का सीध	•		ौर उसके बाद	•••	१७
गान्धीजी का			_	•••	२७
श्रीरामपुर में	डेढ़ मा	स	•••	•••	38
चण्डीपुर	•••	88	बादलकोट	•••	११४
मसीमपुर	•••	६७	श्रदखोरा	•••	१२१
फतहपुर	•••	৩४	सिरोंघी	•••	१२३
दांसपाड़ा	•••	७९	केथूरी	•••	१२८
जगतपुर	•••	<b>5</b> 3	पनियाला	•••	१३१
लामचार	•••	<b>=</b> ξ	डाल्टा	•••	१३४
कारपाड़ा	•••	९०	मुरेम	•••	१४२
शाहपुर	•••	98	हीरापुर	•••	१४४
भटियालपुर	•••	९७	बन्सा	•••	१४६
नरायनपुर		१०२	पल्ला	•••	१४१
रामदेवपुर	•••	१०४	पद्धगाँव	•••	१४३
पारकोट <u> </u>	•••	११०	जयाग	•••	१४४

### (8)

श्रमको	•••	१४९	नन्दीयाम	•••	993
नवाग्राम	•••	१६२ .	विजयनगर		१९४
<b>त्रमो<u>शापा</u>ड़ा</b>	•••	98=	हेमचन्दी	•••	१९७
सतघरिया	•••	१७३	काफिलाटाली	•••	१९९
साधूर्यखल	•••	<b>169</b>	पुरवाकेरोत्रा	•••	२८२
श्रीनगर	•••	ध्यर ।	पश्चिमकेरोत्र	T	ર્૦લ
धरमपुर	•••	1=4	रामपुरा	•••	205
प्रसादपुर	•••	१८८	देवीपुर	•••	<b>२११</b>
विदव शानित	की एकम	ात्र श्राशा—	गान्धी	•••	२१४



### समर्पगा

### विद्वद्वर पं० गणेशप्रसाद दुबे (शास्त्री)

( मन्त्री प्रयाग विद्वत्समिति, उपाध्यत्त मालवीय सभा ऋौर संस्थापक ठाकुर भवन पुस्तकालय प्रयाग )

### को सादर समर्पित

पृज्य मामाजी,

मेरी शैशवावस्था में ही माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने पर आपने पुत्र से भी बढ़ कर जिस प्रकार मेरा लालन-पालन किया श्रीर इस योग्य बनाया, उससे मैं श्राजीवन उन्ध्रण नहीं हो सकता, यद्यपि मधुर कामना सदा यही रहती है कि श्रापकी किञ्चित सेवा में काम श्राकर यह शरीर धन्य हो जाय। श्रस्तु श्रापकी ही कृपा-कोर से सम्भव यह तुच्छ भेट श्रापको सादर सम्पित कर सन्तोष प्रह्मण कर रहा हूँ, जो पुस्तक के विषय को देखते हुए श्रापकी परोपकारिता, सेवा-भावना, सर्वजन-प्रियता श्रादि गुणों के कारण सर्वथा उपयुक्त है। श्राशा है श्राप श्रपनी सहज उदोरता से इसे स्वीकार करेंगे।

प्रयाग, ४ मई, १९४० ई० सदैव श्रापका ही-

### गान्धी महिमा

ऐसी अभेद्य उच्च श्रविचल हिये सी शक्ति,
हमने न देखी कहीं विश्व के पहाड़ में।
त्योंही निर्मीक घोर कर कम्पकारी स्वर,
दुर्लभ सिन्धु गर्जन में, न सिंह के दहाड़ में।।
सत्यता न देखी ऐसी हरिचन्द दधीचिहू में,
देश भक्ति हू ना लखी जीवित मेवाड़ में।
कह ते बटोर विश्व शक्ति भर दीन्हो नाथ!,
"माधव" या "गान्धी" के मूठी-भर हाड़ में।।

गान्धो तू आज हिन्द की एक शान बन गया।

मारी मनुष्य जाति का अभिमान बन गया।।

तू सत्य अहिन्सा द्या निःस्वार्थ त्याग से।

इस आज मृत्युलोक में भगवान बन गया।।

तेरा प्रभाव सादगी हस्ती को दंखकर।

दुश्मन भी बेजबान हो हैरान बन गया।।

तेरी नसीहतों में वो जादू का असर है।

जिसको लगी हवा तेरी इन्सान बन गया।।

तू दोस्त है हर कौम का हर दिल अजीज है।

सारा जहान तेरा कदरदान बन गया।।

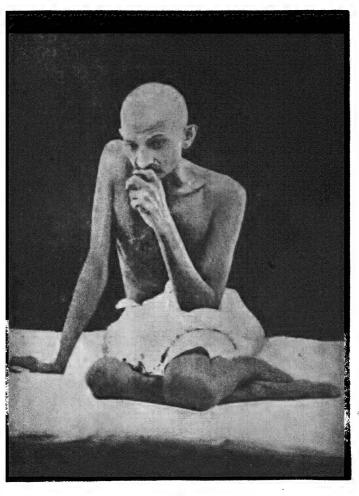
सच तो ये है कि तेरी गई जिस तरफ नजर।

वीरान अगर था तो परस्तान बन गया।।

धिकार है "माधो" हमें तेंतिस करोड़ को।

तुफ सा फकीर जेल का मेहमान बन गया।।

[स्वर्गीय-माधव शुक्र]



वह देश सदा ही श्रमर है, वह माता सदा निहाल है, जिस भाग्यवती की गोद में गांधी जैसा लाल है।

## कुछ कह दूँ

इसिलिये नहीं कि पुस्तक के आरम्भ में प्राक्तथन के रूप में कुछ कहन की परिपाटी निभानी है, बल्कि इसिलिये कि लगभग बीस-बाईस साल के 'गैप' के बाद एक पुस्तक लेकर हिन्दी-संसार के सामने आने की कुछ सफाई देनी आवश्यक है।

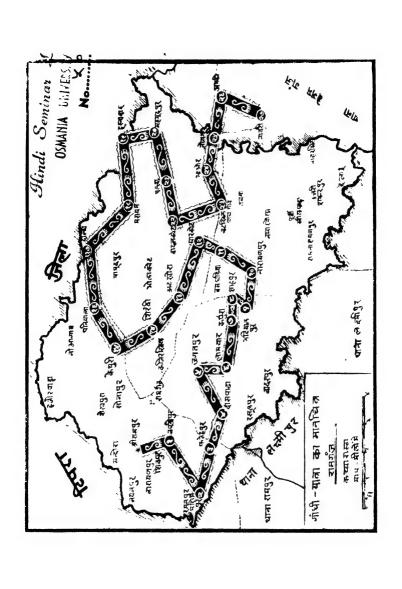
मेरा प्रथम दां पुस्तकें उपन्यास के रूप में 'शैलकुमारी' श्रौर 'शान्ता' सन् १९२४ श्रौर २६ में स्थानीय चाँद-कार्यालय से प्रकाशित हुई थीं, जिन्हें हिन्दी संसार ने बहुत पसन्द किया श्रौर दोनों के तीन-तीन चार-चार संस्करण हुए थे। पगन्तु उसके बाद एक तो पत्रकारिता के व्यस्त जीवन श्रौर दूसरे तज्जन्य साथ में लगने वाली श्रस्वस्थता के कारण कोई पुस्तक लिखने में समर्थ नहीं हो सका।

उन दिनों में 'श्रभ्युद्य' में था। सन् ३० के सत्यामह त्यान होलन में जेल जाते समय श्रद्धेय पं० कृष्णकान्तजी माल-वीय (जिन्हें श्रव स्वर्गीय लिखते हुए श्रत्यन्त पीड़ा होती है) 'श्रभ्युद्य' के सम्पादन श्रीर प्रवन्ध का भी सारा भार मेरे निर्वल कन्धों पर छोड़ गये थे। 'श्रभ्युद्य' उन दिनों दैनिक था, रात श्रीर दिन लगातार काम करते-करते मुफे संम्रहणी हो गयी। तभी से स्वाग्थ्य वरावर विगड़ता-सुधरता रहा श्रीर डाक्टरों तथा गुरुजनों के श्रादेश से श्रधक परिश्रम बचाना पड़ा। परिश्रम बचाने के प्रयत्न में स्वभावतः श्राराम-तलबी श्रा गयी। श्रव तो पत्र-पत्रिकाशों में विशेष लेख लिखाने के लिये सम्पादक मित्र जब सर पर सवार होते हैं, तभी कुछ लिख देता हूँ, फिर मी कुछ मित्रों की श्राह्मा का पालन करने में श्रसमर्थ होने के कारण उनके रोष का भाजन बनना हो पड़ता है।

श्रव इतने दिनों बाद प्रस्तुत पुस्तक जो लेकर मैं उपस्थित हो सका हूँ, उसका एकमात्र श्रेय मेरे श्रादरणीय मित्र श्रोर श्रादर्श हिन्दी पुस्तकालय, प्रयाग के संचालक पंडित गिरिधरजी शुक्ल को है। गान्धीजी की नोश्राखाली-यात्रा समाप्त हो चली थी श्रोर शुक्लजी चाहते थे कि इस सम्बन्ध में एक पुस्तक शीद्रांतिशीघ प्रकाशित हो जाय। शीघ्रता के ख्याल से शुक्लजी ने इन पंक्तियों के लेखक को ही इसे लिखने के लिये वाध्य किया। मैन भी सोचा कि विश्व-वन्द्य गान्धीजी ने भीरत की स्वाधीनता ही नहीं, उसके प्राचीन गौरव-पूर्ण पद प्राप्त कराने की कुखी साम्प्रदायिक एकता का जो महान कार्य एक नये प्रयोग के साथ उठाया है, उसमें इस पुस्तक द्वारा भगवान कृष्ण के गोवर्धन पर्वत उठाने में गोपों की लकुटियों के रूप में किंचित सहारा देकर श्रवना जीवन सफल कर खूँ। इसी कारण यह पुस्तक सामने श्रा स की श्रौर इसके लिये मैं शुक्कजी के प्रति श्रपनी हार्दिक कुतज्ञता प्रकट करता हूँ।

पुस्तक के सम्बन्ध में भी कुछ निवेदन कर देना आवश्यक है। सम्भव है, इसे कुछ लोग सामयिक साहित्य की चीज समकें। किन्तु ऐपा नहीं है। विषय को देखते हुए इसका बहुत बड़ा स्थायी महत्व है। गान्धीजी श्रापने जीवन के चरम ध्येय-साम्प्रदायिक एकता को प्राप्ति किस उपाय से करना चाहते हैं, इ री का वर्णन इस पुस्तक में है, अतः यह ऐतिहासिक महत्व की वस्तु होगी ख्रीर इसकी उपयोगिता तब तक बनी रहेगी, जब तक एकता के ध्येय की प्राप्ति न हो जाय।

प्रयाग, १० मई, १९४७ **ई**० विनीत रामिकशोर मालवीय



### महात्मा गान्धी को नोग्राखाली-यात्रा

### यात्रा का ऐतिहासिक महत्व

हमारा मसीहा निकल पड़ा है मानवता की रज्ञा के लिये। निर्द्रन्द, निर्भय बढ़ता जा रहा है वह सर में कफन बाँधकर आतताइयों के बीच। अपने को खतरे में डालकर भी वह सुरित्त है। क्योंकि उसके पास सबसे शिकशाली अस्त्र है सत्य और प्रेम का और इस यात्रा का पिवत्र तथा महान उद्देश्य है हिन्दू-मुस्लिम एकता का, गुमराहों को राहे-रास्त पर लाने का और निर्वलों तथा असहायों की रज्ञा का। उसमें न राग है. न द्वेष हैं। उसके निकट हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसीं, ईसाई, अँमेज, यहूदी, जर्मन, फोंच, तुर्क और अरब सब एक है। ऊँच-नीच, बड़े छोटे में बह कोई विभेद नहीं करता। सभी उसके लिये अपने हैं, पराया कोई नहीं है। फिर उतके नाम में आकर्षण हैं, बाणी में जादू है और है तकों में बल, जिनके द्वारा वह कट्टर से कट्टर विरोधी को अपने वस में कर लेता, है। बह

निकला है साम्प्रदायिकता को दफनाने के लिये समस्त भू-मंडल के मानव-समाज के कल्याण श्रीर उत्थान के लिए श्रीर पद-दिलतों के त्राण के लिये। उसका पुनीतन्नत है समस्त संसार के मनुष्यों में से श्रमीर-गरीच ऊँच-नीच श्रीर छोटे-चड़े का भेद-भाव मिटा देना श्रीर ऐसे समाज का निर्माण करना जिसमें मनुष्य-मात्र को बराबर का श्रिष्ठकार रहे श्रीर जात-गाँत का श्रम्त होकर संसार में केवल एक जाति हो जिसे मनुष्य जाति कहा जाय। निस्सन्देह यह महा पुरुष गान्धी मनुष्य के रूप में कोई देवता हैं, जो विश्व के मनुष्य-मात्र के कल्याण के लिये श्रथतित हुश्रा है श्रीर श्रपने नपोवल में इस बत को पूरा करेगा।

महात्मा गार्न्धा की नोश्राखाली यात्रा की घोषणा जब हुई थी, ता सारा मंनार श्रीर विशेषतः भारत एक बार ही चिन्तित हो चुका था। लोग यह भय करने लगे थे कि गान्धी जी श्रातताइयों के बीच से कुशल बापस श्राते हैं या नहीं। परन्तु गान्धीजी ने श्रपने एक बार नहीं सैकड़ों बार किये गय इस दावे की सत्यता प्रत्यच्चतः प्रमाणित कर दी कि एक सच्चा सत्याप्रही श्रपने प्रेम के द्वारा कट्टर-से-कट्टर विरोधों को श्रपने बश में कर लेता है श्रीर श्रत्यन्त प्रबल श्राक्रमणकारी को भी शक्तिहीन बना देता है। जो श्रालोचक गान्धीजी के इस दावे का मजाक उड़ाते थे, वे उसे सच्चा प्रमाणित होते देखकर श्राश्चर्य-चिकत रह गये, दातों तले उंगली दवा ली। गान्धीजी श्रपनी यात्रा में श्रिकतर मुसलमानों के घरों में ही ठहरे श्रीर

उन्हें अपने प्रेम-पाश में आवद्ध कर लिया। मुस्लिम स्त्रियों ने गानधीजी को अपने घरों के अन्दर बुलाकर उनके दर्शन किये, उनके उपदेश सुने और अपने को कृतकृत्य माना।

गान्धीजी की इस यात्रा का ऐतिहासिक महत्व है, जिसे श्राज से वर्षों पहिले लिखा गया श्रपनी श्रात्म-कथा में उन्होंने इन शब्दों में प्रकट किया था कि-'द्त्तिण श्रप्रतिका के अपने श्रनुभवों के श्राधार पर मुभे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया है कि हिन्दू-मुम्लिम एकता के लिये ही मेरी ऋहिन्सा की कठोरतम परीचा हागा। मेरा वह विश्वास आज भी ज्यों-का-त्यों बना हुआ है। मैं अपने जीवन में प्रतिच्चा यह अनुभव कर रहा हूँ कि भगवान मेरी परीचा ले रहा है। यात्रा के पग-पग पर गान्धीजी के उपरोक्त कथन की याद आती है आंर उनके उस संकल्प की परिएाति इन शब्दों में प्रतिध्वनित होती है कि-'जिस कार्य में मैं यहाँ लगा हूँ, सम्भव है वही मेरा श्रन्तिम कार्य हो। यहाँ से मैं यदि जीवित श्रीर श्रज्ञत लौटा तो मेरा यह पुर्नजन्म होगा। मेरी अहिन्ता की परीचा जैसी यहाँ हो रही है, वैसी कभी नहीं हुई थी। अपन वे गाँव-गाँव श्रीर घर-घर जाकर अपना प्रेम-संदेश सुनाकर साम्प्रदा-यिकता के विष-वृत्त का मूलोच्छेदन कर रहे हैं। श्राज संसार चिकत होकर यह देख रहा है कि मुस्लिमलीग द्वारा प्रचारित साम्प्रदायिक विद्वेष के विषाक्त प्रभाव से प्रभावित धर्मान्ध मुसलमान पानी-पानी हो रहें हैं श्रीर ग्लानि का श्रनुभव कर रहे हैं।

#### यात्रा के तीन प्रधान उद्देश्य

गान्धीजी की नोत्राखाली यात्रा के तीन प्रधान उद्देश्य थे, जिन्हें गान्धीजी के बंगाल के विश्वास-प्राप्त डा॰ श्रमिल चक्रवर्शी ने गत १४ जनवरी को कलकत्ता यूनीवरिसटी के आशुतोष-हाल में भाषण करते हुए बताए थे। श्रापने कहा था कि-'गान्धीजी की यात्रा का तीन प्रधान उद्देश्य हैं। पहिला यह कि वहाँ के मुस्लिम सम्प्रदाय में श्राध्यात्मिक भावना उत्पन्नकर पड़ोसियों के प्रति मनुष्यता ऋौर भाई-चारे का भाव जागृरत करना तथा साम्प्रदायिक विद्वेष का उन्मूलन करना। साथ ही उनमें यह विश्वात भी उत्पन्न करना कि ऋल्प संख्यकों से बैर करने में बहुमत सम्प्रदाय वालों की ही आर्थिक हानि है और संसार उन्हें ऋन्यायी तथा ऋत्याचारी मानेगा, दूसरे, ऋत्या-चार- पीड़ित तथा भयभीत हिन्दुओं में विश्वास की भावना उत्पन्न करना, जिसके लिये गान्धीजी गाँवां के आन्तरिक भागों में गये ऋौर इसका दोनों सम्प्रदायों के लोगों पर प्रत्यत्त प्रभाव पड़ा। श्रीर तीसरा उद्देश्य यह है कि शरणार्थियों को अपने गाँवों श्रीर घरों में फिर से लाकर बसाने के लिये प्रबन्ध कराना श्रीर शरणार्थियों का भय दूर कर उन्हें वापस त्राने का साहस तथा प्रोत्साहन देना । इस पुनर्निर्माण कार्य में गान्धीजी ने घरों श्रीर भोपड़ों के बनाने के मसाले का प्रबन्ध करने, मजदूरों की ध्यबस्था करने, जिनकी फसलें नष्ट कर दी गयी हैं उन किसानों को तकात्री श्रीर कृषि सम्बन्धो कर्ज दिलाने इत्यादि में विशेष ध्यान दिया।

इन सब के ऊपर गान्धीजी ने अपनी प्रार्थना-सभाश्रों में प्रित दिन भय-त्रस्त और पीड़ित हिन्दुओं से भय का त्याग कर साहस लाने और मुसलमानों से हिन्दुओं के साथ मानवता का तथा अच्छे पड़ोसियों का-सा व्यवहार करने की मार्मिक अपीलें का। उसका जादू-सा प्रत्यच्च प्रभाव पड़ा है और भागे हुए हिन्दू अपने गांवों में आकर फिर बस रहे हैं। गान्धीजी अपनी प्रेरणा से ओर नोश्राखाली मे अपनी उपस्थित से नोश्राखाली के रक्त-रंजित और धराशायी गाँवों में ऐसे नृतन नोश्राखाली का निर्माण कर रहे हैं, जो बङ्गाल और भारत की संस्कृति का दृढ़ और स्मारक होगा।

डा० चक्रवर्ती के ये शब्द और समाचार-पत्रों में प्रकाशित होने वाले विवरण कि शरणार्थी लोग तेजी से अपने गाँवों में आकर बस रहे हैं, यह सिद्ध करते हैं कि महात्मा गान्धी की नोत्राखाली-यात्रा ने मुस्लिम लीग द्वारा फैलाये हुए साम्प्रदायिकता के विष को नष्ट करने में कितना आश्चर्यजनक कार्य कुछ ही हफ्तों में किया है, जो अन्य किसी व्यक्ति ही नहीं किसी संस्था द्वारा भी महीनों क्या वर्षों में भी पूरा नहीं हो सकता था।

### कांग्रे स ऋौर मुस्लिम लोग

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि गान्धीजी को क्यों नोश्राखाली जाना पड़ा। इतिहास में बेजोड़ जैसा वीभत्स नर-संहार वहाँ हुआ था। लीगी बर्बरता के हवन में अगिएत जीवित मनुष्यों की आहुतियाँ जिस प्रकार छोड़ी गयी थी, अबला स्त्रियों पर जो पशुत्रों को भी लिजित करने वाले श्रत्याचार हुए थे. सम्पत्तियों की लूट श्रौर होलियाँ जैसी मचायी गयी थी. जघन्यता श्रीर क्रग्तायें जिस प्रकार खुलकर खेली थी, उन्हें श्चनुभव करते श्रीर जानते हुए उन स्थानों के नाम से मानवता थर-थर कॉॅंपती थी। यह स्वाभाविक ही था कि इन ऋत्याचारों से सताये हुए लोगों को फिर वहाँ जाने का साहस क्यों श्रीर कैसे होता ? ऐसी दशा में हिन्दू-मुस्लिम एकता के अनन्य प्रव-र्तक श्रौर दीनों तथा श्रसहायों के श्रन्यतम सहायक महात्मा गान्धी साम्प्रादायिक विद्वेष के चरम सीमा तक पहुँच जाने पर किस प्रकार श्रपनी जगह पर बैठे रह सकते थे श्रीर श्रन्त में श्रापको श्रपने सामने उपस्थित देश की खाधीनता के प्रशन को अपनी अन्तिम अवस्था में सामने खड़ा देखकर भी उसके हल का प्रश्न कांग्रेस के अन्य उच अधिकारियों पर छोडकर श्रपने जीवन के मर्वोपरि लद्द्य हिन्दू-मुश्लिम एकता के प्रयत्न के निमत्ति नोशाखाली की यात्रा के लिये त्रकेले ही प्रस्थान कर देना पड़ा।

भारतीय राजनीति के पाठकों से यह छिपा नहीं कि कांग्रेस ने भारत को श्रंप्रेजों के चंगुल से मुक्त कराकर फिर खाधीन करने के सर्वोपरि साधन हिन्द्-मुख्लिम ऐक्य के लिये श्रपने जन्म-काल से ही पिछले ६१ वर्षों के श्रन्दर क्या-क्या प्रयत्न किये। परन्तु कांमें म की बागड़ोर जब से गान्धोजी के हाथ में श्रायी उस समय से साम्प्रदायिक एकता को कांग्रेस के कार्य-क्रम में सर्व-प्रथम उसके लिये स्थान देकर भगीरथ प्रयास किये गये। इसके विपरीत मुस्तिम लीग ने श्रपने जन्म के समय से ही श्रंप्रेजों के हाथ की कठपुतली बनकर इन दोनों प्रयत्नों में कितनी बाधायें डालीं त्रौर त्राज तक डालती चली त्रा रही है, यह भी सर्वविदित ही है। फिर भी कांग्रेस श्रीर मुस्लिम लीग के इन कार्यों पर एक विहंगम हिट डाल लेना यहाँ श्रशसंगिक न होगा श्रीर उससे मुस्लिम लीग की श्रड्झा डालने वाली श्रीर देश दोहिता की नोति के चरम रूप को संचेप में समभ लेने में सहायता मिलेगी।

कांग्रस ने देश की एक मात्र राष्ट्रीय संस्था होने के नाते देश वासियों में स्वाधीनता की आग जिस प्रकार फूँकी और विदेशी शासन की जड़ पर प्रहार किया, उसे देखते हुए अंग्रेजों की रूह काँप उठी और उन लोगों ने भारत पर अपना राज्य बनाये रखने के लिये कांग्रेस की शक्ति नष्ट करने तथा स्वाधीनता के मार्ग में वाधा डालने के लिये मुसलमानों को कांग्रेस से अलग करने के निमित्त मुस्लिम लीग की स्थापना करायी। १९०६ में अंग्रेजों के अनन्य भक्त आगा खाँ की अध्यत्तता में मुस्लिम लीग

स्थापित हुई, जिसके दो मुख्य उद्देश्य थे-(१) ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी श्रौर (२) मुस्लिम हितों की रत्ता। श्रपने समय के सुप्रसिद्ध सरकार-परस्त सर सैयद ऋहमद खाँ लीग के खास हिदायतियों में से थे, जिन्होंने सरकारी मशीनरी के कल-पुर्जे तैयार करने के लिये अलीगढ़ में मुम्लिम लीग कालेज की स्थापना की, जिसे बाद में शीघ्र ही यूनीवर्सिटी का रूप दिया गया। वहाँ से पढ़कर निकलने वाले अधिकतर शिचित मुस्लिम युवक सरकारी नौकरियों में लिये जाते थे जिनमें श्रली-बन्ध्र (मौ० मोहम्मद्अली और शौकतअली) भी थे। मुम्लिम लीग श्रीर श्रलीगढ़ कालेज का कार्य प्राय: साथ-साथ चला। मुस्लिम लीग बाहर मुस्लिम जनता में सरकारी प्रचार करनी थी श्रीर श्रलीगढ़ कालेज मुस्लिम युवकों को इस कार्य के लिये सरकारी नौकरियों में भेजकर सरकारी संस्थाओं के अन्दर जाकर काम करता था, जिसका प्रत्यत्त प्रमाण त्राज मिल रहा है। कांग्रेस धिरोधी प्रचार करने श्रौर साम्प्रदायिकता का विष फैलाने में अलीगढ़ यूनीवर्सिटी के शिक्कित युवक अपढ़ श्रीर लफंगों को भी मात कर रहे हैं।

कांग्रेस की शक्ति जिस प्रकार देश में बढ़ती गयी, उसी परि-माण में सरकार भी मुस्लिम लीग को बल प्रदान करती गयी श्रीर फूट डालकर शासन करने की नीति पर चलते हुए वह मुसलमानों को कांग्रेस से श्रलग करने के लिए उनके सामने टुकड़े फेंकती गयी। जितना ही श्रिधिक प्रयक्ष कांग्रेस ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये श्रीर स्वाधीनता की लड़ाई में मुसलमानों को

5

शामिल करने के लिए किया, उतना ही प्रयक्ष ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों को कांग्रेस ख्रौर ख्राजादी की लड़ाई से ख्रलग रखने के लिए किया, जो देश के राजनीतिक घटनाख्रों ख्रौर साम्प्रदायिक एकता के प्रयत्नों के पिछले तीस-चत्तीस बरसों के इतिहास पर दृष्टि डालनं से स्पष्ट हो जाता है। इन घटनाख्रों का पूरा विवरण देने के लिए तो एक ख्रलग प्रन्थ लिखने की ख्रावश्यकता पड़ेगी, इसलिए इस छोटी सी पुस्तक में उनका ख्रत्यन्त संचेप में उल्लेख करके ही सन्तोष प्रहण करना पड़ेगा।

मुस्लिम लीग यदि वैध रूप से और शान्ति के साथ अपना कार्य करती और कांग्रेस के राग्ते में अड़ गें न लगाती, तब भी गनीमत होती किन्तु वहाँ तो अंग्रेमों का प्रोत्साहन काम कर रहा था, कांग्रेस की बढ़ता हुई शक्ति का देखकर उनके पैर के नीचे की जमीन खिसकती जा रही थी, श्रतः उतने ही वेग से वे भी मुस्लिम लीग को बल प्रदान करते हुए कांग्रेस से सम-मौता न करने के लिए उसे उभाइकर एकता होने में बाधा खड़ी करते जाते थे।

जैसा कि उत्पर कहा जा चुका है कांग्रेस अपन जन्म-काल से ही मुसलमानों को सम्मिलित कर आजादी की लड़ाई में उनका सहयोग लेने का प्रयक्ष करती चलो आ रही है। कितने ही मुसलमान नेता कांग्रेस के अध्यक्ष हो चुके हैं। कांग्रेस का हिन्दुओं की संस्था कहने वाले मुस्लिम लीग के वर्तमान नेता मि० जिल्ला भी पहिले कांग्रेस में थे, किन्तु १६१९ में कांग्रेस ने सरकार से अहयोग करने का निश्चय किया, तो सरकार परस्त

मि० जिन्ना पैतरा बदलकर कांग्रेस से श्रतग हो गए। इसमें सन्देह नहीं कि समय-समय पर मुस्लिम जनता ने भी काँगेस के आन्दोलनों में सहयोग करते हुए कुर्बानियाँ की है। कितने ही मुसलमानों ने गोलियाँ खायीं, लाठियाँ सही हैं, जेल गए हैं और सम्पत्ति की हानियाँ उठायी हैं, परन्तु श्रंप्र जों श्रीर मुस्लिम लोगियों के कुचकों के कारण यह सहयोग सामृहिक श्रौर स्थायी नहीं रह सका। काँग्रेस ने समय-समय पर अपने सात श्रधिवेशनों में श्रध्यत्त-पद मुस्लिम नेताश्रों को दिए हैं। सन १८८४ से कांग्रेस की स्थापना के दो ही साल बाद १८८७ के तीसरे ऋधियेशन के ऋध्यन्न श्री बटरुई।न तैयबजी बनाए गए। उसके बाद १८९६ में मोहम्मद रहीमत उल्ला सयाना, १९१३ में नावाब सैयद मोहम्मद, १५१८ में सर इसन इमाम, १५२१ में हकीम अजमल खाँ, १५२३ श्रीर १५४० में मौलाना श्रबुल कलाम आजाद (दो बार) १९२४ में मौलाना मोहम्भद अली श्रीर १९२७ में डा॰ श्रन्मारी कांग्रेस के श्रध्यत्त बनाये गये। इन सभी सुम्लिम नेताओं ने कांग्रेस के अध्यत्त-पद से कांग्रेस के प्रति किये जाने वाले मुस्लिम सन्देहों का निराकरण किया, यह सिद्ध किया कि कांग्रेस हिन्दु औं, मुसलमानों और सभी धर्मावलम्बियों की श्राजादी के लिये लड़ रही है जीर स्वराज्य में सभी मजहबीं के लोगों को बराबर से ऋधिकार रहेंगे, इसलिये मुसलमानों को विना किसी शक-सुवह के कांग्रेस में शामिल होना चाहिये। परन्तु इस के विरोध में श्रॅंब्रेजों द्वारा श्रन्दरूनी तौर पर श्रीर मुस्लिम लीग द्वारा खुल्लम-खुल्ला मूठे प्रचारों के कारण श्रपढ़

मुस्लिम जनता कांग्रेस के घनिष्ट सम्पर्क में न आ सकी। फिर भी काँग्रोस हताश नहीं हुई श्रीर उसने वास्तव में हिन्दू हितों को हानि पहुँचाकर श्रीर हिन्दु श्री के प्रति अपने दायित्व की अवहेलना करके भी मुसलमानों को खुश करने के अभिशाय से उनसे कितनी ही बार समभीते के प्रयन्न किये। इसके लिये सन् १९१६ में प्रथम बार समभौता लखनऊ में हुआ, जो 'लखनऊ-पैक्ट' क नाम से प्रसिद्ध है। यद्यपि स्वर्गीय लोकमान्य तिलक सहश राष्ट्रवादी नेता भी इसके विरुद्ध थे, क्योंकि इससे हिन्दुत्रों के हितों पर कुढ़ाराघात होता था त्रीर जिसका केवल त्राज तक मूल्य ही नहीं चुकाना पड़ा बल्कि जो मुसलमानों को अपनी माँगें बराबर बढ़ाने का प्रोत्नाइन देने में सहायक भी हुआ। परन्तु यह समभौता केवल इसी भावना से किया गया कि मुसलमान सन्तुष्ट हो जायं श्रीर कांग्रेस के साथ मिलकर अपजोदी के लिये प्रयत्न करें। मगर असर हुआ उल्टा। मुसल-मानों ने इसका ऋथ यह लगाया कि आजादी की जड़ाई में मुसलमानों के शामिल होने के नाम पर हमेशा काँत्र स से सीदा-कर भारी मूल्य चुकाया जा सकता है। अतः उनकी माँगें सुरसा के मुँह की भांति बरावर बढ़ती ही गयी। 'मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों द्वा की' काँघे स श्रीर लीग के समभातों का इतिहास यही प्रतिध्वनित करता है। समय-समय पर एक दां श्रीर तीन बार नहीं, कितनी ही बार समफौते के प्रयक्त हुए, जिनमें मुसलमानों को काँगेस ने भारी कीमतें अदा की। इसके अतिरिक्त जब-जब भारी मामले पेश हुए, तब-तब ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों के सामने भारी दुकड़े फेंके और मुसलमान समभीते की वार्ता तोड़कर सरकार से जा मिले। इसके उदाहरण प्रयाग में महा-मना मालवीय जी और अलवर-नरेश द्वारा बुलाये गये एकता सम्मेलन, १९३१ की गोल मेज कान्फरेंस तथा १९४४ के शिमला सम्मेलन की वार्ताओं से मिलते हैं, जब कि समभौता होते होते ब्रिटिश सरकार के कुचक के कारण मंग हो गया। इसके बाद १९४२ में किप्स-मिशन आये पिछले दो वर्षों के अन्दर महात्मा गान्धी द्वारा वारम्वार मिट जिल्ला का द्वार खटखटाने और ब्रिटिश मंत्रिदल मिशन के भारत आने और कांग्रेस तथा लीगी प्रतिनिधियों के लन्दन बुलाये जाने के समय हुई समभौते की वार्ताओं के सभी बार भंग होने की ताजी घटनाएँ अखबार पढ़ने वालों तथा देश की गित-विधियों को जानकारी रखने बालों से छिपी नहीं है।

#### हिन्दुओं के प्रति कांग्रेस की जिम्मेदारी

संतेष में यही कहा जा सकता है कि कांग्रेस जितना ही सम-भौते के लिये मुस्लिम लीग और मि॰ जिन्ना का खुशामद करती गयी, उतना ही लोग और जिन्ना का दिमाग सातवें आकाश पर चढ़ता गया। सच तो यह है कि गान्धीजी ने जिन्ना के घर बार-बार जाकर उनका महत्व बढ़ा दिया। यह बात बड़ी वेदना के साथ कहनी पड़ती है कि हिन्दुओं के त्याग और वोटों से ही शक्ति प्राप्त करनेवाली कांग्रेस ने हिन्दुओं के प्रति अपनी जिन्मे-दारी मुलाकर मुसलमानों को अधिकाधिक अधिकार दिये श्रीर हिन्दु अों के हितों की हानि पहुँचायी यद्यपि काँग्रेस ने यह सब किया केवल देश की म्वतन्त्रता के लिये और उसे श्रंग्रेजों की गुलामी से मुक्त करने के लिये। एक छोर जब कि मुस्लिम लीग मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध उभाड़ने श्रीर सङ्गठित करने के लिये सब कुछ किया, कामेस ने सदा हिन्दुत्र्यों को ही दवाया । साम्प्रदायिक दङ्गों में काँप्र स हमेशा तटस्थ रही और उधर मुस्लिम लीग न मुसलमानों को दंगे के लिये सङ्गठित किया श्रीर दङ्गों में भा .हर प्रकार से मुसलमानों को सहायता पहुँचायी। काँमोस ने यह कभी नहीं सोचा कि हिन्दू महासभा को माम्प्रदायिक संस्था घोषित कर श्रीर उसे बदनाम कर हिंदुश्रों को उसने एकमात्र अपने प्रभाव में रखा है, अतः हिन्दु श्रों की न्द्रा का प्रधान उत्तरदायित्व उसी पर है। यदापि यह कहा जा सकता है कि काँग्रेस एक राष्ट्रीय संस्था होने के नाते केवल हिन्दु श्रों के लिये ही कुछ नहीं कर सकती। परन्तु तथ्य को वास्तविकता की कसीटो पर कसकर देखना ही होगा। आखिर हिन्दु श्रों की श्रीर उनके हितों की रच्चा कैसे की जाय ? राष्ट्रीय भावना से श्रोत-श्रोत होने के कारख हिन्दु श्रों पर हिन्दू महा-सभा का कोई प्रभाव नहों है, ऐसी दशा में काँग्रेस के सिवा हिन्दु अों के लिये दूसरी कौन ऐसी संस्था है जो सामृहिक सकूट श्राने पर उनकी रच्चा का प्रवन्ध करे ? परन्तु कांप्रेस ने कदाचित प्रश्न के इस पहलू की ओर कभी ध्यान नहीं दिया केवल इस ख्याल से कि मुसलमान नाराज न हो जावँ श्रीर वह सब होते हुए भी कांग्रेस ने इमेशा मुसलमानों को प्रसन्न रखने का ही प्रयत किया। मगर यह सब होते हुए भी मुस्लिम लीग श्रांर लीगी नेता बिल्कुल सफेद मूठ बंालकर कॉंग्रेस को मुस्लिम विरोधी हिन्दू संस्था कहते हुए संसार की श्रांखों में धूल भोकना चाहते हैं श्रोर मुस्लिम जनता में कांग्रेस के विरुद्ध विष बो रहे हैं।

#### लीगी अड़ंगों का इतिहास

एक श्रोर यह राष्ट्रीय श्रीर साम्प्रदायिक एकता के लिये कांग्रेस द्वारा मुसलमानों को राजी करने का इतिहास है त्रीर दूसरी तरफ अपने सरासर कूठे प्रचार द्वारा मुसलमानों को कांग्रेस से ऋलग करत श्रीर कांग्रेस के स्वराज्य प्राप्त करते के मार्ग में रोड़े श्रटकाने का देश द्रोहिता का मुस्लिम लीग का इतिहास है। शुरू में मुस्लिम लीग का मुसलमानों पर कोई प्रभाव नहीं था श्रौर न उसका कोई त्राकर्षक प्रोप्राम ही था। १९१९ में कांग्रेस ने जब सरकार से श्रमहयोग का प्रस्ताव पास किया, तां मि० जिन्ना सहित कुछ मुस्लिम नेता जेल जाने के भय से कांग्रेस से ऋलग होकर मुस्लिम लीग में शामिल हो गये। श्रान्दोलन चलाने का तरीका कांग्रेस से साख कर निकले हुए मि० जिल्लान मुस्लिम लीग का नेतृत्व ऋपने हाथ में लिया श्रीर लीग को कांग्रेस के विरुद्ध खड़ी किया। ब्रिटिश सरकार भी मुस्लिम लीग को श्रधिकाधिक प्रोत्साहन देने लगी। मुसलमानों को उनकी संख्या के श्रानुपात से श्रिधिक सीटें व्यवस्थापिका सभात्रों में दो जाने लगी स्रीर सरकारो नौकरियों में भी श्रिधिक जगहें उन्हें दी गया। १९३ के बाद

मुस्लिम लीग का प्रभाव मुसलमानों में अधिक बढ़ने लगा और १९३७ में व्यवस्थापिका सभाश्रों के चुनाव में मि० जिल्ला को त्र्याधक सफलता निली। मुस्लिम लीग की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर कांग्रेस ने भी लीग से समभौता करने के प्रयत्न फिर श्रारम्भ किये। १९३८-३९ में गान्धोजो, नेहरूजी श्रीर श्री सभापचन्द्रबोस त्रादि कांग्रेसी नेतात्रों और मि० जिन्ना के वीच समभौते की बार्ताएं आरम्भ हुई किन्तु नि० जिल्ला की अन्य यपूर्ण १४ शर्ती के कारण समभौता नहीं हुआ और वार्ता भङ्ग हो गयी। १९४० में मुस्लिम लीग ने अपने लाहौर अधि-वेशन में पाकिस्तान का प्रस्ताव पास किया। लीग का पाकिस्तान का यह प्रस्ताव बम-बिस्फोट के रूप में सापने श्राया, जिसका दंश में सभी दलों श्रोर वर्गों द्वारा घोर विरोध किया जाने लगा। यहाँ तक कि लीग से इधर समस्त मुस्लिम संस्थात्रों ने भी इसका विरोध किया, जिनमें जमायत-उल उलमा, मजलिसे त्रंहरार, मोमिन कान्फरेन्स, शिया कान्फरेन्स, त्राजाद मुस्लिम कान्फरेन्म, श्रंजुम ने वतन इत्या द के नाम विशेष उल्लेखनीय है। ब्रिटिश सरकार ने भी समय-सयय पर पाकिस्तान का विरोध किया और ब्रिटिश मंत्रिदल ने भी उसे आप तजनक अव्याव-हारिक श्रीर घातक बताया। यही नहीं श्रन्य देशों के राज-नीतिज्ञों न भी मि० जिल्ला की पाकिस्तान सम्बन्धी मांग की श्रालीचना की। परन्तु मुस्लिम लीग श्रपनी पाकिस्तान की माँग पर बराबर दृढ रही।

द्वितीय महा युद्ध समाप्त होने के बाद संसार की परिस्थित

श्रीर द्रष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन हुश्रा श्रीर कांग्रेस की स्वाधीनता की मांग ने श्रसाधारण उप्रता धारण की। इसके फल-स्वरूप १९४२ में क्रिप्स-मिशन श्राया। किन्तु उसकी श्रदृढ़ नीति के कारण कांग्रेस से उसका समभौता नहीं हुश्रा। उसके बाद गत वर्ष १९४४ में ब्रिटिश मंत्रिदल समभौता करने कांश्राया श्रीर उसने कांग्रेस से समभौता कर विधान परिषद बुलान की बात स्वीकार की श्रीर श्रस्थायी राष्ट्रीय सरकार भी बनायो, जिसमें कांग्रेस ने सहयोग दिया। परन्तु मुस्लिम लीग ने किर भी कांग्रेस से समभौता नहीं किया श्रीर श्रस्थायी सरकार नथा विधान परिषद में सम्मिलित होने में इनकार कर दिया।

### लीगका सीधा हमला दिवस ऋौर उसके बाद

#### कलकत्ता और पूर्वी बङ्गाल का रक्तपात

कांग्रेस तथा ब्रिटिश सरकार द्वारा समभौते के ज्यों-ज्यों प्रयत्न होते रहे, त्यों-त्यो मुस्लिम लीग श्रौर मि० जिन्ना श्रकड़ते गये श्रौर पाकिस्तान की उनकी मांग जोर पकड़ती रही। लीग की स्त्रोर से बारम्बार यही स्पष्ट रूप से कहा गया कि बिना पाकिस्तान की मांग को त्राधार माने हुए कोई समभौता नहीं हो सकता ऋौर न मुस्लिम लीग ब्रिटिश मंत्रिदल की योजना म्बीकार करेगी। मुस्लिम लीग द्वारा मंत्रिदल की योजना श्रस्वी-कार करने पर कांग्रोस ने बहुत सो व-विचार के बाद यह योजना स्वीकार कर ली और केन्द्र में ऋस्थायी सरकार का निर्माण पंडित जवाहरलाल नेहरू की ऋध्यत्तता मे हुआ। इससे मुस्लिम लीग को बड़ी खिल्याहट हुई श्रौर उसने श्रस्थायी सरकार बनायी जाने का विरोध करना शुरू किया। देश के सभी भागों में सभायें कर लीगी नेताश्रों ने खुल्लम-खुल्ला हिंसा तथा मार-काट करने का प्रचार किया। गैर-म्सलमानों की श्रोर से बड़े-बड़े लोगों श्रौर श्रखबारों ने यह शिकायत भी की कि मरकार लीगी नतार्क्षों को मार-काट का प्रचार करने की छूट क्यों दे रही है, किन्तु वायसराय श्रौर केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों की कमजोरी के कारण हिंसा प्रचारक लीगी नेताश्रों के विरुद्ध कोई रोक-थाम नहीं की गयी।

मुस्लिम जनता में खुल्लम-खुल्ला बगावत का प्रचार करने के बाद मुस्लिम लीग की कार्य-समिति ने २९ जुलाई को यह निश्चय किया कि मंत्रिमंडल योजना और अस्थायी सरकार के विरोध में मारे देश में प्रत्यच्च आन्दोलन (डाइरेक्ट ऐक्शन) दिवस मनाया जाय। अतः इस निश्चय के अनुसार १६ अगम्त सन् १९४६ को देश में यह दिवस लीग की और से मनाया गया। बङ्गाल और सिन्ध प्रान्तों की मुस्लिम लीगी सरकारों ने इस दिन सरकारी दफ्तरों को भी बन्द करने की आज्ञा दे दी। केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध इन दोनों प्रान्तीय सरकारों का विरोध-प्रदर्शन करना कितना अवैध और मनमाने ढंग से कार्य करना था, इसका कोई ख्याल नहीं किया गया और इन दोनों प्रान्तों के गवर्नर ने भी लीगी मंत्रियों के इन कार्यों में कोई हस्तचेप नहीं किया।

कलकत्ते में सीधा हमला दिवस के नाम पर हिन्दुश्रों का श्रायन्त भयानक कल्लेश्राम किया गया श्रोर उनका माल-मना घर-बार सब जलाकर भरम कर दिया गया। नगर के विभिन्न भागों में हिन्दुश्रों पर सहसा हमला कर दिया गया। उनकी दूकानें श्रोर बड़े-बड़े कारखाने जला डाले गये। बेगुनाह स्त्रियों श्रीर बड़ों को काट-काटकर सड़कों श्रीर गिलयों पर फेंका गया, बस्ती का बिस्तयाँ स्वाहा कर दी गयीं; जलते हुए घरों से जिन लोगों ने निकलने का प्रयत्न किया उन्हें उन्हीं श्रागों में भोंक दिया गया, कितने ही लोगों को मारकर गङ्गा में, कुश्रों में, जमान के श्रान्दर की नालियों (मैन-होल्स) में फेंक दिया गया, स्त्रियों का श्रा श्राहरण किया गया, श्रीर कितनी ही श्राबलाश्रों का सतीत्व

नष्ट किया गया। निस्तन्देह कलकत्ते में जो नृशंसताएँ हुई, बर्वरता ऋौर जघन्यता श्रो का जैसा करू नर्तन वहाँ देखने में श्राया वह संसार के इतिहास में बेजोड़ है। एक लीगी नता न त्रपन भाषण में जो एक बार यह कहा था कि नादिरशाह ऋौर चंगेज खाँ के दिन फिर ला देंगे, उसे कलकत्ते के लीगियों ने कर दिखाया। उन पाशविक कृत्यों को देखकर यूरोपियन श्रीर एंग्लो-इंडियन तक थर्रा उठे थे श्रीर एंग्लो-इंडियन श्रखवारों तक ने लीगी मंत्रिमंडल तथा प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी की घोर भर्तरना की थी। कलकत्ते के एरिया कमांडर त्रियो डियर मि॰ स्मिथ ने एक प्रेस कान्फरेन्स में लीगी शासकों के हथकंडों की घोर निन्दा की थी और यह कहा था कि कलकत्ते में जिस समय उपद्रव हो रहे थे, पुलिस से काम नहीं लिया गया था। 'स्टेट्ममैन' पत्र तक ने जो कि लीगी मंत्रिमंडल का सदा हिमायत करता था, लीगी मंत्रिमंडल को कलङ्कित घोषित किया। 'स्टेट्समैन' के कथनानुसार कलकत्ते का रक्त-रंजित उपद्रव लगी शांसकों का पहिले से तैयार किया हुआ पड़यंत्र था। जो कुछ भी हुन्ना वह सब प्रधान मंत्री सुहरावर्दी की जानकारी में हुआ था । लीगी गुएडे प्रत्यत्त रूप से लारियों में बैठ कर दूकानों में आग लगाते और लूटते जाते थे, जिन्हें रोकने के लिये न पुलिस थी श्रीर न फीज। गुण्डों का पूरा राज्य था। दो दिन तक हिन्दु ऋगें की ऋपार धन-जन की हानि हुई।

यह सब था लीग के सीधे इसले के गुप्त कार्य-क्रम का एक

हिस्सा और इस बात का नमूना कि पाकिस्तानी शासन में हिंदुओं के साथ कैसा व्यवहार किया जायगा।

गान्धीजी ने कलकत्ते के उपद्रवों के सम्बन्ध में गत २४ अगस्त के 'हरिजन ने लिखा है कि कलकत्ते के उपद्रवों से यह तय हो गया है कि डाइरेक्ट-ऐक्शन क्या है ख्रीर ख्रागे क्या होगा। यदि यही स्थिति कुछ ख्रीर समय तक जारी रही, तो कलकत्ता बड़ी-बड़ी इमारतों का नगर नहीं रह जायगा।'

लन्दन के मुस्लिम निवासियों ने भी कलकत्ते के ऋत्याचारों के लिये लीगी मंत्रिमण्डल की निन्दा करते हुए यह कहा था कि दुष्टाचारी लीगी मंत्रिमंडल हटा दिया जाना चाहिये।

#### नोत्राम्बाली का रक्त-स्नान

कलकत्ते में खून की नदी बहाने के बाद भी लीगियों की रक्त-पिपासा शान्त नहीं हुई। पाकिस्तान की जड़ जमाने के लिये वे हिन्दु श्रों को बङ्गाल श्रीर खाम कर पूर्वी बंगाल से नेम्तनाबूद कर देने का स्वप्न देख रहे थे। श्रतः नोश्राम्वाली श्रीर टिपरा जिलों में लीगियों ने श्राग भड़कानी शुरू कर दी। पहिले झोटे मोटे गाँवों में थोड़ी संख्या में रहने वाले हिन्दु श्रों को छूटना-पीटना श्रीर मताया जाना शुरू किया गया श्रीर धीरे-धीरे उत्पात बदने लगा।

१० श्रक्टूबर से नोश्राखाली जिले में संगठित रूप से उपद्रव शुरू हुए ! जिनमें रामगंज, बेगमगंज, लह्मीपुर श्रादि थानों के गाँव भयहूर कांडों के शिकार बनाये गये । घातक हथियारों से लैस होकर हजारों की संख्या में मुसलमानों ने हिन्दुश्रों की हत्या करना, छूट-पाट मचाना श्रीर घरों को जलाना श्रारम्भ किया। साथ ही क्षियों का श्रपहरण, बलात्कार श्रीर धर्म-परि-वर्तन भी किया जाने लगा। मन्दिरों श्रीर श्रन्य देव-स्थानों को भी श्रछ्ता नहीं छोड़ा गया। उपद्रवों की बढ़ती हुई श्राग देखकर हिन्दू नेताश्रों ने श्रीर कलकत्ते में रहने वाले नोश्राखाली के लोगों ने बंगाल के प्रधान-मन्त्री मि० सुह्रावर्दी का ध्यान श्राकर्षित किया, किन्तु कोई सुनवायी नहीं हुई।

प्रतिदिन श्रिधिकाधिक लोमहर्षक विवरण श्राने लगे। श्राजाद भारतीय हिन्दू महासभा के प्रधान मन्त्री श्री श्राशुतीष लाहिड़ी ने एक वक्तव्य में वताया कि-'नोत्राखाली जिले की २४० वर्ग मील तक की हिन्दुन्त्रों की बस्ति थों को हजारों मुसल-मानों की भीड़ों ने घेर कर सैकड़ों हिन्दुओं का वध किया, छ्टा-पाटा श्रीर इजारों को मुसलमान बनाया । मारे गये हिन्दुश्रों की संख्या सैकड़ों नहीं चल्कि हजारों में है। एक लाख से ऋधिक हिन्दु मुरुलमान बना लिये गये हैं।' बंगाल सरकार की एक विज्ञप्ति में भी बताया गया कि १० अक्टूबर से नोत्रा-खाली जिले के हिन्दु श्रां पर दर्दनाक श्रत्याचार किये गये हैं। १७ श्रक्टूबर को समान्नार मिला कि नोश्राखाली श्रीर टिपरा जिलों में हजारों श्रादमी मार डाले गये हैं, हजारों घर जला कर भस्म कर दिये गये हैं श्रीर सैकड़ों हिन्दू खियाँ भगा लेजाकर मुसलमान बना ली गयी हैं। 'स्टेटस मैन' पत्र ने प्रकाशित किया कि नोम्राखाली श्रीर टिपरा जिलों के डेढ़ लाख हिन्दू इन ऋत्याचारों के शिकार हुए हैं । हजारों की संख्या में हिन्दू भाग कर कोमिल्ला तथा ऋन्य स्थानों को गये।

परिस्थिति श्रधिकाधिक बिगड़ती देखकर कांग्रेस के अध्यक्त **त्राचार्य क्रुपलानी ऋौर श्री शरत् चन्द्रबोस वायुयान द्वारा** नोत्र्याखाली जिले को दौड़े गये श्रीर घटना स्थलों का निरी ज्ञाग किया। ध्वस्त ऋौर जलाये गये स्थानों को ऋपना ऋाँखों से देखने तथा ऋत्याचारों का विवरण ऋपने कानों से सुनने के बाद राष्ट्रपति आचार्य कुपलानी ने एक वक्तव्य प्रकाशित किया । यह वक्तव्य किसी हिन्दू समाजवादी नेता का नहीं वरन साम्प्र-दायिकता से कोसों दूर रहने वाले राष्ट्रीय संस्था स्वतः कांप्रेस के अध्यत्त आचार्य कृपलानी का है, जो घटनास्रों की पूर्ण रूप से छान-बीन करने के बाद प्रकाशित किया गया है आरे उससे प्रत्यक्ष प्रकट होता है कि इन समस्त पाशविक तथा बर्बर काएडों के लिये मुस्लिम लीग नेता किस हद तक जिम्मेदार है ऋौर बङ्गाल की लोगी सरकार न केवल हिन्दु ऋों की जान-माल की रचा करने के प्रति उदासीन रही बल्कि लीगा गुंडों की तिनक भी रोक-थाम न कर उन्हें किस तरह प्रोत्साहित किया।

# राष्ट्रपति कृपलानी की रिपोर्ट

राष्ट्रपित स्त्राचार्य क्रपलानी ने पत्र-प्रतिनिधियों के बीच भाषण करते हुए कहा था कि चौँदपुर स्त्रौर नोस्त्राखाली के भीतरी भागों का दौरा समाप्त कर चुकने के उपरान्त मैं निम्न निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ, जो कि मेरा विश्वास है किसी भी निष्पन्त जाँच-श्रदालत के सामने स्थानिक शहादत के साथ सत्य प्रमा-णित किये जा सकते हैं।

ये निष्कर्ष इस प्रकार है:--(१) नो आखाली और टिपरा जिलों की हिन्दू आबादी पर किया गया आक्रमण पूर्व आयोजित ऋौर पूर्व संगठित था। इसकी योजना मुस्लिम लीग ने तैयार की थी। यह मुस्लिम लीग के प्रोपेगेण्डा का परिगाम था। स्थानीय शहादतों से यही साबित हुआ कि इसमें गाँवों के प्रमुख लीगी नेताओं का बहुत बड़ा हाथ था। (२) जो कुछ होने वाला था उसकी चेतावनियाँ ऋधिकारियों को पहले दी जा चुकी थीं। तत्सम्बन्धी चेत्रों के प्रमुख हिन्दुश्चों ने उन श्रधिकारियों को जबानी श्रौर लिखित रूप में ये चेतावनियाँ दी थीं। (३) मुसलमानों में त्र्यामतौर पर यह विश्वास फैला हुत्र्या था कि यदि हिन्दुन्त्रों के यिलाक कुछ किया गया तो सरकार मुसलमानों के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करेगी। (४) मुसलमानों ने यह तरीका ऋ व्तियार किया था कि वे सैकड़ों के स्रोर कहीं-कहीं हजारों की संख्या में जमा हं। कर श्रीर तब वे हिन्दु श्रों के गाँवों या मिश्रित श्राबादी वाले गावों के हिन्दु श्रों के घरों पर हमला करते। ये लोग पहले मुस्लिम लीग के लिये श्रौर कभी-कभी कलकत्ते के उपद्रवों के मुस्लिम पीड़ितों के लिये चन्दे की माँग करते। जबर्दस्ती वसूल किये जाने वाले इन चन्दों की रकम बहुत गहरी कभी-कभी तो १०००० क० तक या उससे भी श्राधिक होती थी। चन्दे वसूल कर लिये जाने के बाद भी हिन्दू आबादी सुरित्तत नहीं थी। बाद में वहाँ पर उपद्रियों की सेना या भाइ दिखाई देवी ऋौर वह हिन्दू घरों को

खूटती। अधिकांश मामलों में हिन्दुओं के खूटे हुए घर जला दिये जाते थे। उपद्रवी केवल रूपये पैसे आभूषण या अन्य मूल्यबान वस्तुएं ही नहीं बल्कि काम में आने वाला प्रत्येक सामान—जैसे अनाज, बर्तन, कपड़ा आदि—लूट लेते थे। वे कभी-कभी किसी हिन्दू घर को खूटने से पहले उसमें रहने वाले व्यक्तियों से मुसलमान बन जाने के लिये कहते। किन्तु धर्मपरिवर्तन के बाद भी वे लूट और आगजनी का शिकार बनने से बच नहीं संकते थे। (५) आक्रमणकारी मुस्लिम भोड़ वही नारे लगाती जो कि मुसलिम लीग के नारे हैं—जैसे "लोग जिन्दाबाद" "पाकिस्तान जिन्दाबाद" "लड़ के लेगे पाकिस्तान" "मार के लेंगे पाकिस्तान"।

हिन्दू आवादी से यह भी कहा जाता कि कलकत्ते के उपद्रवों में मुसलमानों की जो जानें गयी हैं उसी के बदले के रूप में यह छूट मार, आगजनी और हत्यायें हो रही है। उपद्रवियों का मुकाबला करने वाले सभी व्यक्तियों को कत्ल कर दिया जाता। कभी-कभी तो उन पर गोलियाँ चलायी जातीं, क्योंकि आक्रमण-कारियों के पास बन्दूकें थीं। ये बन्दूकें या तो मुस्लिम जमींदारों की थीं या वे हिन्दुओं के घरों से चुरा या छीन ली गयी थीं। कभी-कभी तो मुकाबला न करने पर भी हिन्दुओं को मार ढाला जाता। (६) हिन्दुओं को जुमा की नमाज में बुलाया गया और उनसे जबर्दस्ती कलमा और नमाज पदवाया गया। हिन्दू खियों को उनकी चूड़ियाँ तोड़कर उनकी माँग का सिंदूर मेंछकर मुसलमान बनाया गया। इस धर्म-परिवर्तन की शिनालन के तौर पर उनसे पीर द्वारा पवित्र किये गये बका का स्पश करने के लिये कहा गया। उन खियों से भी कलमा पदवाया गया। (७) हिन्दुत्रों के घरों की समस्त देवतात्रों की मृतियाँ नष्ट कर डाली गर्यी श्रीर उपद्रव-पीड़ित चेत्रों के समस्त मन्दिरों को लूटा श्रीर जलाया गया। (८) जर्बदस्ती स्याही जाने वाली हिन्द् लड़कियों की ठीक-ठीक संख्या निर्धारित करना बर्नमान स्थिति मे श्रसम्भव है। एक लड़की की रचा नौश्राखाली के यूरोपियन मजिस्ट्रेट ने २४ अक्टूबर की श्रीमती कृपलानी द्वारा विख्त रिपोर्ट दी जाने पर की। (५) स्पष्ट कारसों से मेरे लिये बलात्कार के मामलों की कोई निश्चित संख्या झात करना सम्भव नहीं हो मका। उनके हाथों की शंख की चूड़ियाँ तोड़ डाली गई स्त्रीर माँग का सिंदूर पोंछ डाला गया। एक म्थान पर उपद्रवियों ने उन्हें जमीन पर पटक कर श्रपने पैर के श्रंगूठे से माँग का सिंदूर मिटाया। (१०) इन त्तेत्रों के हिन्दू चाहे वे मुसलमान बना लिये गये है या नहीं, लगातार भयत्रम्त अवस्था में बन हुए हैं। (११) उपद्रव पीड़ित गाँवों के मार्गों पर भारी गश्ती दुकड़ियों द्वारा प्रभावपूर्ण ढङ्ग से पहरा दिया जाता है। कुछ मामलों में नये मुसलमान बने हिन्दुओं को गाँव से बाहर जान श्रीर वापस लौडनं के लिये 'पर्मिट' ( अनुमति पत्र ) जारी किये हैं। (१२) इत्तिफाक से जो लोग उपद्रव आरम्भ होने के समय अपने गाँव से बाहर आये हुए थे वे अपने गाँबों को लौट नहीं सके इसलिये उन्हें श्रपने परिवार वालों के सम्बंध में कोई सूचना नहीं प्राप्त हुई है। (१३) दंगे के दिनों में पुलिस का प्रबन्ध नहीं

रह गया था। श्रव पुलिस-दल गश्त लगाने का कार्य कर रहे हैं। पुलिस वालों का कहना है कि उन्हें न तो श्रात्म-रचा या श्रव्य मामलों में गोली चलाने का श्रादेश मिला था श्रोर न मिला है।

मैं इस वात को प्रमाणित कर सकता हूँ कि आगजनी २० अक्टूबर तक जारी रही। मैंने १९ और २० अक्टूबर को चाँद-पुर और नांआखालों के चेत्रों में आकाश-मार्ग से घरों को जलते हुए देखा था। इन अग्नि-काएडों को बंगाल के प्रधान मंत्री ने, जो २० अक्टूबर को हमारे साथ ढाका से वायुयान द्वारा यात्रा कर रहे थे, अपनी आँखों से देखा था।

पूर्वी बङ्गाल के इन काएडों की इङ्गलैएड, अमेरिका तथा श्रम्य देशों में तीत्र निन्दा करते हुए बड़ी चिन्ता प्रकट की गयी। ब्रिटिश पार्लामेंट की कामन्स सभा में भी पूर्वी बङ्गाल के कांडों पर गहरा प्रकाश डाला गया श्रीर इनके लिये मुस्लिम लीग को जिस्मेदार बताया गया है श्रीर कहा गया है कि लीगियों के साम्प्रदायिक प्रोपगंडा के ही कारण यह सब हुआ है।

काम स वर्किङ्ग कमेटी ने भी राष्ट्रपति की रिपोर्ट सुनने के बाद पूर्वी बङ्गाल के भयानक कांडों की घोर निन्दा की श्रौर उनके लिये वायसराय, बङ्गाल के गवर्नर, लीगी मंत्रिमंडल तथा मुस्लिम लीग को जिम्मेदार ठहराया।

### गांधीजीका नोत्राखालीके लिये प्रस्थान

साम्प्रदायिक विद्वेष की इस भयानक रूप से फैलती हुई ज्वाला श्रोर श्रसंख्य बेगुनाहों के श्रभूतपूर्व कत्लेश्राम को देखते हुए श्राहिन्मा श्रोर दया की मूर्ति महात्मा गान्धी कैसे चुप बेठे रह सकते थे। राष्ट्रपति कृपलानी, श्री शरत् बांस तथा श्रन्य कितन ही विश्वसनीय व्यक्तियों के श्रांखों देखे विधरण सुनने के बाद गान्धीजी ने २८ श्रक्टूबर सन् १९४६ को नोश्राखाली के लिये प्रस्थान किया। प्रस्थान करते समय श्रापने इतना ही कहा कि 'पीड़ितों के श्रांसू पोंछन के लिये मैं नोश्राखाली जा रहा हूँ।'

यात्रा के त्रारम्भ में गान्धीजी एक सप्ताह तक कलकते में रहकर वहीं से नोत्राखाली के विवरण प्राप्त करते और वहाँ को पिस्थिति का अध्ययन करते रहे। गान्धीजी के कलकत्ते त्राते ही लीगी मंत्रिमंडल का त्राप्तन डोला और प्रधान मंत्री सहरावहीं गान्धीजी के निवास स्थान को दौड़ने लगे। लीगी सरकार ने भी हाथ-पैर हिलाये, गुण्डों की यत्र-तत्र थोड़ी वहुन गिरफ्तारियाँ होने लगीं और शरणार्थियों की त्रोर भी ध्यान दिया गया। गाधीजी कलकत्ते से ६ नवम्बर को स्टोमर द्वारा नोत्राखाली रवाना हुए। गाँधीजी की यात्रा के लिय मि० सहरावहीं ने सुविधाओं और हिफाजत का यथेष्ट प्रवन्ध किया था। ७ नवम्बर को महात्माजी नोत्राखाली जिले के चौमुहानी नामक स्थान में

पहुँचे ! लीगी सरकार के ज्यापार मंत्री गाँधीजी को चौमुहानी तक पहुँचाने गये थे। यहाँ गाँधीजी कई दिन रहे। आस-पास के गाँवों से आने वाले प्रामीणों से गाँधीजी ने उनकी विपद-गाथाएं सुनीं, जिन्हें सुनकर आप अत्यन्त दुखी हुए। अपने पतिदेव के साथ तथा बाद में भी पूर्वी बङ्गाल के दौरे में प्राप्त अपने प्रतदेव के साथ तथा बाद में भी पूर्वी बङ्गाल के दौरे में प्राप्त अपने अनुभव श्रीमती सुचेता कृपलानी ने भी गाँधीजी को सुनाए। इसके बाद महात्माजी स्वतः गाँवों की दशा देखने के लिये गाँवों मं जाने लगे। चौमुहानी से १ मील दूर गोपेरबाग की हृद्य द्रावक दशाएँ देखकर रो पड़े। इस गाँव में एक परिवार के १९ आदमी मार डाले गये थे। श्रीमती कृपलानी ने इस घर के रक्तरिक्षत कमरे गाँधीजी को दिखाये। गाँधीजी ने देखा कि उन कमरों के सब सामान जला दिये थे। सारा गाँव स्मशान की तरह दिखायी दिया।

गाँधीजी को वहाँ के वीमत्स दृश्य देखकर अपार बेदना हुई।
आपन यहाँ अपना भोजन घटा दिया। भोजन घटाने का एक
कारण यह भी था कि आपकी इच्छा यह भी थी कि यदि साम्प्रदायिक एकता के लिये आमरण अनशन करना आवश्यक हा
तो उसके लिये पहिले से क्रम बना लिया जाय। इसके बाद
गाँधीजी दत्तपाड़ा गाँव गये और वहाँ रहते हुए अन्य गाँवों का
भी अमण करते रहे। खिजिरिखल गाँव, जो दत्तपाड़ा से लगभग
१२ सील पर है, जाने पर आपको मालूम हुआ कि यहाँ धन-जन
की इतनी भारी चृति हुई है, जितनी नोआखाली जिले भर के
किसी अन्य गाँव में नहीं हुई। यहाँ गाँधीजी ने सन्ध्या समय

प्रार्थना भी की और प्रार्थना के बाद एकत्र हजारों मनुष्यों के बीच भाषण करते हुए श्रापने एकता के लिये श्रपील की। यहाँ भी श्राप कई दिन रहे श्रीर इस बीच में श्रास-पास के ध्वम्त गाँवों को देखने गये। बङ्गाल के प्रधान मंत्री मि० सहरावर्दी खिजिरखिल त्राकर गाँधीजी से मिले। उन्होंने गाँधीजी को यह त्राश्वासन दिया कि मैं मुसलमानोंसे कहूँगा कि वे हिन्दु श्रों के मकान फिर बनवार्वे ऋीर शरणार्थियों को ऋपने गाँवों में ऋपकर वसने के लिये राजी करें। यहाँ के बाद गाँधीजी रामगञ्ज गये श्रीर यहाँ भी नीन दिन रहे। रामगंज में श्रापने श्रपना भोजन श्रीर भी घटा दिया। यहाँ से १४ नवम्बर को श्राप नन्दनपुर गाँव गये श्रीर वहाँ श्रधिक सख्या में एकन्न शरणार्थियों की दशा देखी । यहाँ श्रापको एक रिपोर्ट भी दी गयी, जिसमें बताया गया था कि यहाँ के श्रल्पसंख्यक हिन्दु श्रों पर कितने भीषण श्रत्या-चार हुए है। रिपोर्ट के कथन। नुसार इस गांव में ३३ लाख रू की हानि हुई है। यहाँ की प्रार्थना-सभा में बड़ी भीड़ हुई थी, जिसमें श्रधिकतर शरणार्थी लोग थे, जिनमें श्रनेक ऐसे धनी परिवार के थे, जिनका सम-कुछ नष्ट कर दिया गया था श्रीर जो श्रव एक-एक दाने के मुँहताज हो गये थे। इन लोगों को चीथड़े लपेटे देखकर गाँघीजी बहुत दुस्ती हुए। १००० से श्रधिक स्नियाँ भी थीं; जो अधिकाँश विधवा हो गयी थीं। गाँधीजी ने अपने भाषण में कहा कि जहाँ कहीं भी मैं गया हूँ, सर्वत्र मुक्ते विनाश के दृश्य दिखायी दिये हैं। मेरी आँखों में वो अब आँसू ही नहीं रहे जो बाहर निकलें।

### हिन्दुश्रों को श्राश्वासन

रामगंज में लीगी सरकार के रसद जिभाग के मंत्री मि०
गफरान साहब और कृषि-मंत्री मि० श्रहमद हुसेन भी गाँधीजी
से मिलन श्राये। इन मंत्रियों ने प्रार्थना सभा में भाषण करने
हुए कहा कि १० और १६ श्रक्टूबर के बीच जो घटनाएँ नोश्राखाली श्रोर टिपरा में घटी हैं उनके लिये हमें हार्टिक दृख है।
उन्होंने हिन्दुश्रों को यह श्राश्वासन भी दिया कि सरकार तथा
मुस्लिम लीग दोनों यह नहीं चाहनी कि हिन्दू लोग पूर्वी बङ्गाल
छोड़कर चले जायँ। मैं मुसलमानों की श्रोर से हिन्दुश्रों को यह
श्राद्वासन देता हूँ कि वे निर्भय होकर श्रपन गाँवों में श्राकर
बसें। जिन लोगों ने उनके साथ जुल्म किये हैं, उन्हें पूरी सजा
दी जायगी।

इसके बाद गाँधीजी श्रीरामपुर के लिये रवाना हुए। जिस समय गाँधाजी श्रीरामपुर के लिये चलने को तैयार हुए, तो सब लोगों की श्राँग्वों में श्राँसू श्रा गये थे। डा॰ सुशीला नायर के नेत्र श्रधिक छलछला श्राये थे। लोग गाँधीजी की नाव को तब तक बराबर देखते रहे, जब तक वह दिखायी देती रही। गाँधीजी की मुख-सुद्रा भी गम्भीर थी।

# श्रीरामपुर में डेढ़ मास

## अनेक महत्वपूर्ण घटनायें और निर्णय

२० नयम्बर सन् १९४६ को गांधीजी श्रीरामपुर पहुँचे । यहाँ के स्रास-पाम के त्रेत्रों में भयङ्कर विनाश उपद्रवों में हुत्रा था। श्रत: गांधीजी ने यहाँ एक महीने रह कर मुसलमानों में हृदय-परिवर्तन और शरणार्थी हिन्दुओं में विश्वास की भावना उत्पन्न करने के लिये अधिक समय देना आवश्यक समका। श्रीरामपुर के लिये प्रस्थान करने से पहिले गांधीजी ने मदरास के सुप्रसिद्ध 'हिन्द्' पत्र के सम्बाददाना से बातें करते हुए कहा था कि—''मैं यहाँ अपने कुछ नये प्रयोग करूँगा। जिनमें मेरी श्रहिन्सा की सची परीचा होगी। यदि मुभमें काफी साहस होगा श्रीर उस साहस को मैं अपनी अहिन्सा से मिला सका, तो मैं हिन्दुचों चौर मुसलमानों दोनों को प्रमा-णित कर सकूँगा। यहाँ में श्रकेले गाँवों का भ्रमण करूँगा भीर इस प्रकार मेरे दल के सभी लोग भलग-भलग गाँवों में जाकर भहिन्सा तथा साम्प्रदायिक एकता का प्रचार करेंगे।"

गांधीजी से सम्बाददाता ने पूछा कि क्या श्राप यहाँ गुण्डों से भरे हुए गाँवों में श्रकेले जाकर श्रपने जीवन को खतरे में नहीं ढाल रहे हैं ? गांधीजी ने अपने सरल शब्दों में उत्तर देते हुए कहा—'मेरी दृष्टि में कोई गुएडा नहीं है और यदि गुएडें हैं, तो सभी गुंडे हैं, कोई कम हैं और कोई ज्यादा। मुक्ते नो विश्वास है कि ईश्वर जब तक इस शरीर से काम लेना चाहता है, तब तक इसे वह समस्त व्याधियों से मुक्त रस्वेगा।'

गान्धीजी ने यहाँ आकर एक वक्तव्य भी प्रकाशित किया, जिसमें आपने कहा—"मैं यहाँ सत्य और अहिन्सा की परी जा के ही लिये नहीं बिक स्वतः अपनी परी जा के लिये आया हूँ। मेरा उद्देश्य यहाँ एक महीने तक रह कर अपने जीवन के महान ध्येय साम्प्रदायिक एकता के लिये अंतिम प्रयन्न करने का है। यदि आवश्यक हुआ, तो मैं अपना प्राण भी विसर्जित कर हूँगा। मेरी इच्छा यह है कि मैं यहाँ एक मुस्लिम लीगी के घर में उसके कुदुम्ब के एक सदस्य की तरह रहूँ और मुसलमानों से सम्पर्क बढ़ा हैं।"

यहाँ गांधीजी ने यह भी घोषित किया कि डा॰ राजेंन्द्रप्रसाद के इस ऋश्वासन से कि बिहार की फरिस्थिति काफी सुधर गंधी है, मैंने बकरी का दृध फिर लेना शुरू कर किया है और भोजन की मात्रा भी बढ़ा दी है।

श्रीरामपुर में गांधांजी के पास सिलहट के ११ मुसलमानों भौर एक यूरोपियन ने आध सेर सिंदूर और २०० चूड़ियाँ उन



र चांद्पुर से प्रस्थान के अवसर पर गांधी जी का स्वागत-अशे अवनी मजुमदार के घर की स्थियां गांधी जी के मस्तक पर निलक लगा रही हैं।

हिन्दू खियों के लिये भेजा, जिनके सिंदूर उपद्रवी मुसलमानों ने मिटा दिये थे ऋौर चूड़ियाँ तोड़ डाली थीं। ५४०) रू० का एक चेक भी इस कार्य के लिये श्री ऋखिल चन्द्रदत्त की मार्फत गांधीजी के पास भेजा गया था।

यहाँ नित्य प्रार्थना-सभात्रों में भाषण कर गांशोजी मुसल-मानों में त्रात्म-शुद्धि त्र्योर त्र्यपने किये जुल्मों के लिये पश्चाताप की भावना तथा हिन्दु त्रों में विश्वास की भावना उत्पन्न करने का प्रयत्न करते थे।

#### गान्धीजी का चमत्कार

श्रीरामपुर में निवास के दिनों में गांधीजी का चमत्कार पूर्ण रूप से दिखाई दिया, जिसे देखकर सारा संसार एक बार ही चिकत हो गया। इस श्रल्प-निवास में ही श्रापने मुसलमानों की उप साम्प्रदायिक भावना में श्राश्चर्य-जनक परिवर्तन कर दिया। २३ नवम्बर को गांधीजी की उपस्थित में हिन्दू-मुसलमानों का एक सम्मेलन हुश्रा, जिसमें एकता के लिये तीन घण्टे तक बातें होती रहीं। इसमें यह निश्चय हुश्रा कि शरणार्थियों को फिर से लाकर बसाने के लिये शान्ति-कमेटियाँ बनायी जाय। इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए बंगाल की लीगी सरकार के मजदूर-मंत्री मि० शमसुद्दीन ने सब लोगों से श्रपील की कि 'चमा करो श्रीह भूत जाश्री की नीति सब लोग प्रहण करें श्रीर गांधीजी की यात्रा सब लोग मिलकर सफल बनावें।

इसी दिन गांधीजी गाँव के एक कट्टर मौलवी के घर गये,

जिसने गांधीजी का बड़ा सम्मान किया। श्रीर सन्तरे तथा नारियल भट किये। इस श्रवसर पर यहाँ गाँव के श्रन्य मुसल-मान भी एकत्रित थे। सबने गांधीजी का सम्मान श्रीर म्वागत किया श्रीर कहा कि—'श्रापको श्रपने बीच पाकर हम लोग धन्य हो गये।'

इन्हीं दिनों मेरठ में कांग्रेस-ऋधिवेशन हो रहा था, किन्नु कांग्रंस के उच्च ऋधिकारियों द्वारा बहुत ऋनुनय-विनय करने पर भी गांधीजी कांग्रेस ऋधिवेशन में नहीं गये ऋरि यह उत्तर भेजा कि कांग्रेस में ऋर्गने से कहीं ऋधिक महत्वपूर्ण काम में यहाँ कर रहा हूँ।

३० नवस्वर को गांघीजी ने फिर यह घोषणा की कि पूर्वी बंगाल से मैं तव तक नहीं हदूँगा जब तक मुमे यह विश्वाम नहीं हो जायगा कि दोनों सम्प्रदायों में परस्पर विश्वास की भावना स्थापित हो गयी है और दोनों अपने गावों में पूर्वयन भाई-भाई की नरह रहने लगे हैं।

इसी दिन गांधीजी ने प्रार्थना एक मुसलमान के घर पर की। इसमें बहुत मुसलमान सम्मिलित थे। प्रार्थना के बाद भाषण हुए, जिनमें एकता के लिये श्रापील की गयी। एक मौलवी ने भी हिन्दू-मुस्लिम एकता का गाना गाया।

## घर-घर जाकर मरीजों की सेवा

गांधीजी श्रास-पास के गाँवों में घर-घर जाकर मरीजों की सेवा करते, विशेषत: मुसलमानों के घरों में। मरीजों के इलाज

के लिये ऋाप डाक्टर सुशीला नायर को भी भेजते थे। गांधीजी के इन सेवा-कार्यों का मुस्लिम जनता पर कैसा ऋनुकूल ऋौर आश्चर्य जनक प्रभाव पड़ा, इसका न केवल ऋनुमान ही किया जा सकता है, वरन वह प्रत्यक्ष दिखाई भी दिया। जिन मुस्लिम घरों में गांधीजी जाते थे, उनकी क्षिया ऋौर पुरुष्त गांधीजी सं कहते थे कि—जब ऋाप हम लोगों को छोड़कर चले जायँगे, तो हम किस तरह रहेंगे। ऋापने ऋपनी द्यालुता ऋौर प्रेम से हम लोगों को ऋपना गुलाम बना लिया है।

उधर हिन्दुओं पर भी गांधीजी की उपस्थिति स्रौर उपदेशों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे शीघ्र ही निर्भय होकर अपने गाँवों में वापस आकर रहने लगे।

गांधीजी प्रतिदिन टहलते हुए श्रास-पास के गाँवों में जाते थे श्रीर वहाँ से श्राकर श्रपना मोजन स्वयं बनाते थे, क्योंकि श्राप श्रकेले ही रहा करते थे। श्रीरामपुर में रहकर गांधीजी ने बंगला भाषा का पूरा श्रभ्यास कर लिया, जिसे श्राप लिख-पढ़ श्रीर बोल भी सकते हैं। ७ दिसम्बर को गांधीजी से कलकत्ता यूनीवर्सिटी के डाक्टर श्रमिय चक्रवर्ती श्राकर मिले। श्री सुभाष-चन्द्र बोस के भतीजे श्री श्ररविंद बोस भी गांधीजी से मिले। ११ दिसम्बर को इलाहाबाद के राजा साहब भदरी श्राकर गांधी-जी से मिले, जो कहा जाता है कि कॉमेस के उस श्राधकारियों का एक महत्वपूर्ण सन्देश लेकर गांधीजी के पास श्राये थे।

१२ दिसम्बर को डाक्टर अमिय चक्रवर्ती फिर गांधीजी से मिले और पूर्वी बङ्गाल के महान प्रयोग के सम्बंध में आप से कुछ प्रश्न किये। गांधीजी ने कहा कि मैं स्वतः नहीं। जानता कि मेरा श्रगला करम क्या होगा। ईश्वर की जो प्रेरणा होगी, वहीं होगा। डाक्टर चक्रवर्ती ने गांधोजी से वार्ता के बाद अपने एक वक्तव्य में कहा कि नौश्राखाली एक रसायन शाला के रूप में इस समय है, जहाँ गान्धीजी महान प्रयोग कर रहे हैं श्रौर ऐसी दवा तैयार कर रहे हैं, जो शान्ति-स्थापना की कला के रूप में समस्त संसार के काम श्रायेगी। श्रापने कहा कि समस्त संसार गान्धोजो के पूर्वी बङ्गाल के कार्यों को बड़ी उत्पुक्ता के साथ देख रहा है श्रौर लन्दन में भी यही समक्ता जा रहा है। १३ दिसम्बर को गान्धीजी से मदरास के कुछ प्रमुख कार्य-कर्ता श्राकर मिले। १९ दिसम्बर को श्रासाम के श्री महेन्द्र मोहन चौधरी गांधीजी से मिले श्रीर श्रासाम के प्रान्तों के समृह में सम्मिलित होने के प्रश्न पर उनसे सलाह ली।

इसी दिन श्रीश्वासफश्चली, जो श्रमेरिका में भारत के राज-दून नियुक्त किये गये हैं, श्रमेरिका जाने से पहिले महात्मा जी का श्राशीर्वाद प्रहण करने के लिये श्रीरामपुर श्राये। गाधीजी ने प्रार्थना के समय सभा में श्रीरामपुर के लोगों को श्रीश्रसफश्चली का परिचय कराया श्रीर कहा कि श्राप श्रपने जीवन भर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये प्रयन्न करते श्राये हैं श्रीर श्रव श्राप लोगों के दूत बनकर श्रमेरिका जा रहे हैं। श्राप लोग इनसे नसीहत लीजिये कि श्रपने सह-धर्मियों की मिड़कियाँ तथा वेइज्जती सह कर भी यह हमेशा हिन्दू-मुसलमानों के मेल श्रीर मुक्क की खिदमत में लगे रहे। श्राज की प्रार्थना गांधीजी ने एक जले हुए ध्वस्त सकान में की थी। प्रार्थना के बाद श्रपने भाषण में श्रापने श्राज एक बार फिर घोषित किया कि—'मैं नोश्राखाखी में श्रान्ति स्थापित करने के लिये श्राया हूँ। या तो शान्ति स्थापित करूँगा श्रोर या इस प्रयन्न में श्रपना प्राण विसर्जित कर दूँगा। श्रापने कहा कि यहाँ मेरी श्रहिंसा की कठिन परीचा होने जा रही है। जब मेरे सहश उन्न वर्ष का बृढ़ा श्रहिंसा को श्रमल में ला सकता है तो दूसरे लोग क्यों नहीं श्रमल में ला सकते, यद्यपि मैं यह जानता हूँ कि श्रिहंसा पर श्रमल करना कठिन है। श्रापने कहा कि लोग मुमे 'महात्मा' कहते हैं। परन्तु मैं यह बता देना चाहता हूँ कि मैं श्रपने को महात्मा नहीं समस्ता। मैं तो एक साधारण श्रादमी हूँ। मेरा हृदय गरीबों श्रीर उनके कष्टों के लिये रोता है। मैं तो समस्त मनुष्य जाति का एक तुच्छ सेवक हूँ।'

ागधीजी ने त्राज प्रथम बार सभा में सार्वजनिक रूप से यह घोषित किया कि त्राप पैदल गाँव-गाँव जाकर ऋहिंसा का सन्देश सुनाएँगे। त्रापने कहां कि इस बृद्धावस्था में मुक्तमें इतनी ताकत नहीं है कि गाँव-गाँव पैदल जा सकूँ, परन्तु उसके लिये मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि इस कार्य के लिये मुक्ते वह बल है।

इस समा में गान्धीजी ने श्रीश्रासफश्चली के श्रीतिरिक्त श्राजाद हिंद फौज के कर्नल जसवन्त सिंह का भी परिचय श्रोताश्रों से कराया। कर्नल जसवन्त सिंह नेताजी सुभाष-चन्द्र बोस के साथ विदेशों में काम कर चुके हैं श्रीर श्राफ कर्नल निरंजन सिंह गिल के साथ नोत्राखाजी में शान्ति के लिये काम करने आये हैं।

२० दिसम्बर को गांधीजी को श्रीरामपुर आये एक महीना पूरा हो गया। पहिले आपने यह निश्चय किया था कि श्रीरामपुर में एक महीने रहने के बाद आप गाँव-गाँव पैदल जाने की यात्रा शुरू करेंगे परन्तु दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में आपको देश के सामने उपस्थित इस गंभीर समस्या के सम्बंध में काँग्रेस के उन्न अधिकारियों को परामर्श देना था कि ब्रिटिश मंत्रिदल के ६ दिसम्बर के बक्तव्य को देखते हुए, जिसके द्वारा बह अपनी पूर्व योजना से हट रहा है, अस्थायी सरकार में काँग्रेस सी मेम्बर रहें या उसका त्याग कर दें। अतः गांधीजी ने यह निश्चय किया कि इस बीच में काँग्रेस नेताओं का आगमन श्रीरामपुर में हो जाने के बाद नए वर्ष के आरम्भ से आप अपनी यह पैदल यात्रा शुरू करेंगे।

# युरोप को ऋहिन्सा का उपदेश

२१ दिसम्बर को श्रीरामपुर में गाधीजी से एक फ्रेंच पत्रकार श्री रेग्नंड कर्टियर मिलं। श्री कटियर पेरिस के "मारिन" नामक पत्र के सम्पादक हैं श्रीर संसार का भ्रमण करने निकले हैं। श्राप श्राज तीसरे पहर गान्धीजी की एकान्त कुटिया में पधारे।

महात्मा गांधी श्री कर्टियर के आगमन के समय आंख, पेड़् श्रीर सिर पर मिट्टी की पट्टी धरे प्राकृतिक चिकित्सा कर रहे थे। आपने इसी अवस्था में श्री कर्टियर का, उनके कुटिया में प्रवेश करते ही, म्वागत किया श्रीर फ्रेंच भाषा में उनका कुशल समा-चार पूछा। गान्धीजी को श्रपनी मातृभाषा फ्रेंच में स्वागत करते देख श्री कर्टियर स्तव्ध रह गए। गान्धीजी ने उन्हें बताया कि उन्होंने श्रपने स्कृली दिनों में फ्रेंच भाषा सीखा था श्रीर उसके बाद श्रपने बन्दी जीवन में इसका विशद श्रध्ययन किया था।

श्री करियर के इस प्रश्न का, कि युरोप की वर्तमान परिस्थित के सम्बंध में आपकी क्या धारणा है ? उत्तर देते हुए गान्धीजी ने कहा, 'युरोपवामी मौखिक रूप से शान्ति की चर्चा तो करते रहते हैं किन्तु उनके हृदयों में युद्ध के ही श्रंकर विद्यमान रहते हैं। अपने अन्तरथल से जब तक वे हिंसा को निकाल बाहर न करेंगे तब तक युरोप में शान्ति होना असम्भव है। जब द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हुआ था तभी मैंने कहा था कि यदि युरोप अपनी गतिविधि परिवर्तित न करेगा तो यही युद्ध एक तृतीय महायुद्ध को प्रस्तावना का रूप धारण कर लेगा।'

श्री कर्टियर ने प्रश्न किया, ''इस युरोप वाले, जो कि हिंसा की सन्तान हैं, किस प्रकार ऋहिंसात्मक हो सकते हैं ?"

उत्तर में गांधीजी ने कहा कि यदि युरोपवासी इसी प्रकार अपना कम आरी रक्षों तो उनका मिटना श्रवश्म्भावी है। युरोप में हिटलरवाद का उत्मूलन केवल एक उन्नकोटि के श्रेष्ठ हिटलरवाद से ही तो किया गया है, श्रीर इस शृंखला का दृटना सर्वथा श्रसम्भव है। यह कम इसी भांति जारी रहेगा।

श्री कर्टियर का श्रान्तिम प्रश्त वा, "ग्राहिंसा द्वारा हिटलर-वाद को कैसे नष्ट किया जा सकता है ?" इस बस्न का उत्तर देते हुए गांघीजी ने कहा कि यही तो हम सब को ढूंढ़ना है, अन्यथा यदि कोई राष्ट्र हिटलरवादी हिंसा को नष्ट करने के लिये श्रेड्ठ हिटलरवाद का आश्रय लेगा तो छोटे राष्ट्रों के जीवित रहने की बहुत कम सम्भावना रहेगी। एक राष्ट्र तभी जीवित रह सकेगा जब वह अपने प्राणों की—सम्मान की नहीं—बाजो लगाकर ज्यक्तिगत रूप से हिटलरवाद द्वारा प्रभावित होने से इन्कार कर दे। ऐसी ही अहिंसा बड़ी से बड़ी विपक्तियों से रहा कर सकती है। यदि हम इस प्रकार से साहसी न बनेंगे और इस प्रकार का बल प्रदर्शित न करेंगे, तो संसार में लोकतंत्रवाद का पनपना सर्वथा असंभव है।

#### नोत्राखां में गान्धीजी की शान्ति योजना

गांधीजी ने नोस्त्राखाली में शान्ति स्थापित करने की एक विशेष योजना बनायी है। यह योजना क्या है, इसे प्रथम बार साधिकार रूप से गांधीजी के बढ़े पुराने विश्वास-पात्र और कृपा-भाजन चरला संघ के प्रधान कार्यकर्ता श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त ने, जो कि बंगाल के खादी प्रतिष्ठान के संचालक भी हैं एसोसिएटेड प्रेस के अभेरिकन सम्बाददाता को बताया। यह योजना श्रीरामपुर से लगाकर २० मील के दायरे में लागू होगी और इसे गांधीजी तथा उनके दल के लोग नोस्त्राखाली में अमल में लाएँगे। श्रीदास गुप्त ने बताया कि इस योजना के द्वारा हिन्दुओं में साहस और आत्म-निर्भरता उत्पन्न की जायगी, क्योंकि गांधीजी का यह विश्वास है कि शक्कों और शकि-बल से इस प्रकार की बीरता तथा साहस प्राप्त नहीं होता। साथ ही मुसलमानों में भी योजना के अनुसार काम होगा श्रीर उन्हें सचा मुसलमान बनने को प्रोत्साहित किया जायगा, क्योंकि कुरान के वचनों के अनुसार सचा मुसलमान वह है, जो पड़ो-सियों के साथ श्रच्छा व्यवहार करे श्रीर श्रपनी गलनियों तथा दुष्कर्मों के लिये पश्चाताप करे। इस बान का प्रचार किया जायगा कि हिन्दू और मुसलमान अपने-अपने धर्म पर हद गहते हुए भी माथ मिलकर काम कर सकें, जैसा कि खिलाफत श्रान्दोलन के दिनों में हुश्रा था श्रीर हिन्दू-मुसलमानों ने मिलकर राजनीतिक च्रेत्र में काम किया था। वास्तविक शान्ति स्थापित करने के लिये यह श्रावश्यक है कि हिन्दू श्रपने श्रन्दर से मुसलमानों का भय निकाल दें श्रीर मुसलमान हिन्दुत्रों के प्रति मित्रता का व्यवहार करें। यह तभी हो सकता है, जब मुसलमान लोग अपने सह-धर्मियों द्वारा की गयी गलतियों के लिये पश्चा-त्ताप करें। श्रतः शान्ति स्थापना का काम करने वाले कर्यकर्ताश्री को श्रपने प्रचार द्वारा मुसलमानों की जभी हुई इस गलतं धारणा को दूर करना होगा कि वे इन कृत्यों द्वारा वे मुस्लिम लीग की श्रज्ञाश्रों का पालन कर रहे हैं। कार्य-कर्ता गए। इस योजना के श्रनुसार गाँवों को ही श्रपना घर बनायेंगे श्रौर मुस्लिम उपद्रियों के प्रति प्रेम-भाव दिखाते हुए काम करेंगे वे अपनी सचाई तथा प्रेम के द्वारा उन्हें अपनी श्रोर श्राकित करेंगे।

श्रीदास गुप्त ने यह भी बताया कि इस उद्देश्य से श्रव तक

जो काम हुआ है, उसका प्रभाव यह पड़ा है कि हिन्दू लोग अब उतने भयभीत नहीं हैं, निर्भय होकर चलते-फिरते हैं और मुसल-मानों में भी हिन्दुओं के प्रति उतना क्रोध नहीं है।

## नेताओं का महत्वपूर्ण निर्णय

२७ दिसम्बर १९४६ को राष्ट्रपति आचार्य क्रपलानी, पंडित जवाहरलाल नेहरू ऋौर कांग्रेस के प्रधान मंत्री श्री शङ्करराव देव देश की ऋत्यन्त महत्वपूर्ण समस्या पर गान्धीजी की सलाह लेने के लिये श्रीरामपुर पहुँचे। इन नेताश्रों ने दो दिन तक गान्धीजी से यह परामर्श किया कि ब्रिटिश सरकार के ६ दिसम्बर के वक्तव्य को स्वाकार किया जाय या नहीं। गान्धीजी ने इस विकट समस्या का तत्काल हल कर दिया। यह हल एक प्रम्ताव के रूप में रखा गया, जो शीघ्र ही होने वाली ऋ० भा० कांग्रेस कमेटी के लिए था और वही प्रस्ताव आगे चलकर कमेटी में पास भी हुआ। प्रश्ताव में यह निश्चय किया गया कि ब्रिटिश सरकार का उक्त वत्त व्य स्वीकार कर लिया जाय । मंत्रिदल की विधान योजना के प्रान्तों की गृटबन्दी के सम्बन्ध में यह निश्चय हुआ कि श्राक्षाम श्रौर सीमा प्रान्त गुट में शामिल हों, परन्तु श्रागे यदि यह देखा जाय कि बहुमत दल के शासन में श्रल्प-संख्यकों के प्रति उचित व्यवहार नहीं होता श्रोर जबरदस्ती मन माना विधान लादा जाता है, तो उस दशा में ये प्रान्त गुट से निकल आवें।

२ दिसम्बर को आसाम के प्रधान मंत्री श्री गोपीनाथ

बादें लोई, रसद मंत्री श्री वैद्यनाथ मुकर्जी, श्रासाम प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के मंत्री श्री सिद्धिनाथ शर्मा तथा श्रासाम पार्ल-मेंटरी पार्टी के श्रो महेन्द्र मोहन चौधरी भी श्रासाम के गुटबन्दी में शामिल होने के प्रश्न पर गान्धीजी से सलाह लेने के लिये श्रीरामपुर श्राये श्रीर उपरोक्त श्राशय की सलाह गान्धीजी ने इन नेताश्रों को भी दी।

नोत्र्यात्वाली में गान्धीजी के शान्ति स्थापना श्रोर शरणा-धियों को फिर बसान के प्रयत्न के सम्बंध में श्री वार्दीलोई ने एसोसिएटंड प्रेस के प्रतिनिधि से कहा कि ऐसा श्राश्चर्यजनक प्रयोग श्रीर कार्य किसी भी देश में नहीं किया गया, जैसा कि गाधीजी यहाँ कर रहे हैं।

गान्धीजी ने आज की प्रार्थना सभा में पंडित नेहरू, आचार्य कृपलानी आदि का परिचय उपस्थित जन-समूह से कराया और कहा कि ये लोग बड़े महत्वपूर्ण प्रश्नों पर परामश करने के लिये यहाँ आये हैं, जो किसी एक सम्प्रदाय के लिये नहीं बिल्क देश के सभी सम्प्रदायों के हित के लिये हैं। आपने कहा कि काँगे स हिन्दू संस्था नहीं बिल्क वह सभी सम्प्रदायों की संस्था है।

नेताओं के आगमन की बात सुनकर श्रीरामपुर में जनता की अपार भीड़ हुई जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों भारी संख्या में थे। नेहरूजी आदि नेताओं को देखने के लिये बड़ी दूर-दूर से लोगों ने सबेरे से हो आना शुरू किया था। गान्धोजी के स्थान के चारों और बाड़ा बाँध दिया गया था। परन्तु भीड़ इतनी अधिक हुई और लोगों में इतना अधिक उत्साह नेताओं के दर्शन के लिये था कि बाइ। टूट गया। यह देखकर नेहरू जी गान्धीजी की कुटिया के बाहर निकल आये और भीड़ के बीच में आकर खड़े हो गये। सब लोगों ने, हिन्दुओं और मुसलमानों ने बड़ी हर्ष ब्वनि की, जिस पर नेहरूजी ने मुस्कराते हुए अभि-बादन किया।

३० दिसम्बर को नेतागरा गान्धीजी से विदा लेकर श्रीरामपुर से चले गये श्रीर गान्धीजी ने भी गाँव-गाँव की पैदल यात्रा के लिये श्रीरामपुर से प्रस्थान करने की वैयारी शुरू कर दी।

## चग्डोपुर

#### [२ से ६ जनवरी तक]

## मार्ग में मुस्लिम भीड़ों द्वारा स्वागत

नव-वर्ष के द्वितीय दिन श्रर्थात २ जनवरी सन् १९४० की महात्मा गान्धी ने अपनी पैदल यात्रा श्रारम्भ की । वर्तमान युग के श्रद्वितीय शान्ति-दूत का केवल नोश्राखाली के ही लिये नहीं वरन् श्रप्रत्यच्च रूप से समस्त भारत के लिये हिन्दू मुस्लिम एकता का निस्सन्देह यह परम श्रद्भुत श्रीर श्रम्रूतपूर्व प्रयोग था, जिसे उन्होंने एक गाँव से दूसरे गाँव पैदल चलकर श्रारम्भ किया। श्रीरामपुर के निवासी हिन्दू श्रीर मुसमान पिछले दोन्तिन से निर्जीव से होने लगे थे श्रीर सभी कां यह कलक थी कि शान्ति का सचा दूत श्रीर प्रेम तथा दया का श्रनन्य सन्देह- बाहक श्रव हमारे बीच से जा रहा है। पहिले ही से सर्वत्र उदासी छायी थी, सभी लोग हुली थे। श्रवांच्या से राम के बन-गमन का सा हश्य उपस्थित था।

प्रातःकाल जिस समय गान्धीजी एक हाथ में अपनी लम्बी लाठी लेकर और दूसरा हाथ सहारे के लिये डा० सुशीला नायर के कन्धे पर रखकर यात्रा के लिये उस कुटुम्ब के प्राणियों से विदाई की आज्ञा लेने को खड़े हुए, उस समय घर के लोगों की ही नहीं समस्त प्रामवासियों की आँखें प्रेमाश्रु से छलछला आयों। गांधीजी भी प्रेमोंद्रेक से रहित नहीं थे जिस स्थान पर डेढ़ महीने तक रहे थे और वहाँ के निवासियों को अपने प्रेम-पाश में आवद्ध कर लिया था, उसे छोड़ने में वे भी पीड़ा का अनुभव कर रहे थे, किन्तु जिस महान उदृश्य को लेकर वे निकले थे, उसे पूरा करना ही था, लोगों को आश्वासन देकर चल पड़े।

श्रीरामपुर से चलकर प्रथम निवास श्रापंन कुछ मील दूर चंडीपुर नामक स्थान में करने का निश्चय किया था। सुपाईं। के वृद्धों की कतार तथा छोटे बगीचों के बीच से होकर चले। प्रथम दिन की यात्रा में गांधीजी के साथ डा० राममनोहर लोहिया, डा मत्तीशदास गुप्त, श्री देवनाथदास, सरदार जीवन सिंह, डा० मनोरंजन चोंधरी, श्री श्रक्तणदास गुप्त तथा मि० एम० ए० श्रब्दुल्ला सुपिरंटेंडेंट पुलिस थे। इसके श्रतिरिक्त लगभग १०० श्रादमियों की एक भीड़ भी गांधीजी के पीछे चली, हालांकि गान्धीजी की इच्छा यही थी कि श्राप श्रकेले ही यात्रा करेंगे।

गान्धीजी जब चल रहे थे, तो रास्ते में हिन्दू श्रौर मुसल-मान प्रामीण श्रपने-श्रपने घरों से बाहर निकलकर गान्धीजी के दर्शन के लिये खड़े थे। इनमें से श्रनेक लोग गान्धीजी के साथ भी हो लिये श्रौर चंडीपुर तक गये।

गान्धीजी चंडीपुर चले, तो सीधे रास्त से न जाकर एक

दूसरे मार्ग पर घूम पड़े। क्योंकि उस रास्ते पर भूतपूर्व नजरबन्द कैदी श्री अनुकूलचन्द्र चक्रवर्ती के घर जाना था, जिसे उपद्रियों ने बिल्कुल विध्वस्त कर दिया था। इस मार्ग पर एक दूसरे मकान से एक मुसलमान सज्जन निकले और गांधीजी को उन्होंने कुछ सन्तरे शद्धापूर्वक मेंट किये। गान्धीजी न अपनी सहज मुस्कान के साथ उसे स्वीकार किया और उसे अपने पीछे चलने वालों को बाँट दिया।

श्रानुकूल बाबू के मकान पर पहुँचकर महात्माजी कुछ दंर तक रुके श्रीर सन्तरे का रस प्रहण किया। यहाँ से चलने पर गान्धीजी शिवपुर गाँव के प्रतिष्ठित मौलवी फजलुलहक के मकान पर गये। मौलवी फजलुलहक ने एक दिन पहिले ही श्रीरामपुर में गांधीजी से मिलकर यह प्रार्थना की थी कि चंडीपुर जाते समय त्राप मेरे गरीबस्तान पर भी त्राने की कपा कीजिये। श्रतः गान्धीजी यहाँ भी कुछ देर रुके। मौलवी साहव के मकान के बाहरी श्राँगन में गान्धीजी बैठाये गये। यहाँ पर बहुत से मुसलमान गान्धीजी के स्वागत के लिये पहिले ही से उपस्थित थे। बहुतेरे बेचारे कुछ देर से श्राने के कारण गान्धाजी के दर्शन से वंचित भी रह गये। क्योंकि गान्धीजी यहाँ श्रिषिक समय तक नहीं ठहरे थे । मीलवी साहब ने एक ट्रे में केले. सन्तरे इत्यादि फल लाकर भेट किये। गान्धीजी ने इन फलों में से कुछ तो दर्शन के लिये आये हुए लड़कों को दे दिये श्रीर कुछ श्रपने साथ चंडीपुर लेते गये। यहाँ से गान्धोजी फिर सीघे चंडीपुर गये। रास्ते में एक

नया बाजार मिला, जिसे मुसलमानों ने हिन्दू व्यापारियों को बायकाट करने के लिये कई मौलिबियों के कहने से जारी किया था।

२ जनवरी को चंडीपुर पहुँचने पर गान्धीजी के स्वागत में प्राम-सेवा-सङ्घ के लोगों ने 'रामधुन' गाना श्रारम्भ किया श्रीर तब तक उसे गाते रहे, जब तक गान्धीजी श्रपने खेमें में प्रविष्ठ नहीं हुए थे। यहाँ गान्धीजी नोश्राखाली के प्रमुख काँग्रेस कार्यकर्ता श्री श्रवनी मजूमदार के यहाँ ठहरे।

यहाँ पर चंडीपुर का संचिप्त परिचय भी दें देना आवश्यक जान पड़ता है। चंडीपुर रामगंज थाने के पश्चिम में है। पिछले उपद्रव के पहिले यहाँ के निवासियों में २,४३४ हिन्दू थे और ३,९४६ मुसलमान। परन्तु अब उपद्रव के बाद यहाँ केवल ४०४ हिन्दू कुटुम्ब रह गये हैं। जिनमें से ३०० के मकान जला दिये गये थे और लूटे तो सभी गये थे।

गान्धीजी इस तरफ प्रायः २० साल हुए एक बार आये थे जब कि गौहाटी कांग्रेस से लौटते समय उन्हीं दिनों यहाँ श्री सतीशदास गुप्त द्वारा स्थापित वतमान खादी प्रतिष्ठान का आपने उद्घाटन किया था।

गांधीजी की इस यात्रा की तुलना उनके सुप्रसिद्ध डरडी मार्च से की जाता है, किन्तु कुछ दृष्टियों में इस यात्रा की उस डण्डी मार्च से भी श्रधिक महत्वपूर्ण समका जाता है, क्योंकि जैसा कि स्वयं गान्धीजी ने कल प्रार्थना के समय अपने भाषण में कहा था, डरडी की यात्रा में गान्धीजी के साथ हजारों आदमी साथ थे श्रीर यात्रा की कठिनाइयों में सभी ने भाग किया था, परन्त इस यात्रा में आपने किसी को साथ रहने से मना किया है और श्रापके साथ केवल चार त्रादमी रहेंगे । इसके त्रातिरिक्त नोश्राखाली के गांवों की पैटल यात्रा एक आश्रमवासी के कथना-नुसार खतरे ते भी खाली नहीं है, क्योंकि जिन गाँवों में गांघीजी जा रहे हैं, वहाँ के लोगों का रुख बहुत भित्रतापूर्ण नहीं सममा जाता त्रौर त्र्यास-पास का वातावरण भी पूर्णतया अनुकूल नहीं है। एक बहुत बड़ा प्रश्न यह भी है कि यदि मार्ग में कोंई दुर्घटना हो ही गया तो क्या साथ के लोगों की सद्-भावना उस संकट का सामना कर सकेगी। परन्तु गांधीजी मनुष्य की इसी सद्भावना पर त्र्याशा त्र्यौर विश्वास रखकर नोत्राखाली की यात्रा के लिये निकले हैं। निस्तन्देह गांधीजी के जीवन का यह सबसे बड़ा प्रयोग है। इसमें अच्छे और बुरे लोगों; साहस ऋौर कायरता तथा मानवता ऋौर पशुता के मुकाबिले का प्रश्न है।

इस यात्रा में महात्मा गांधी के साथ चलने वाले चार व्यक्तियों में त्र्याप के दुभाषिए जो निर्मल बोस, स्टेनोबाकर श्री परशुराम, फुटकर कामों में सहायता देने के लिये एक दक्तिणी सञ्जन श्री रामचन्द्र श्रीर किसी सुविधाश्रों के लिये श्रापकी पीत्री कुमारी मनु गांधी थीं।

गांधीजी ने २ जनवरी से अपनो गाँव-गाँव पेदल यात्रा के प्रांप्राम की सूचना बङ्गाल के प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी को एक पत्र में दे दी थी श्रीर उस पर उनकी राय भी माँगी थी। मि० सुहरावदीं ने गांधीजी को इस यात्रा में श्रपना पूरा सहयोग देने का श्राश्वसन दिया था ऋौर यात्रा की सफलता के लिये ग्रुभकामना भी प्रकट को थी।

श्रीरामपुर में गांधीजी के डेढ महीने रहने का क्या प्रभाव पड़ा इस सम्बन्ध में आप के साथ रहने वाले 'हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड' के प्रतिनिधि का कहना है कि गांधीजी के यहाँ आने और रहने का प्रत्यक्त प्रभाव दिखायी देता है। ऋपने को केवल मानवता की दया के भरोसे पर छोड़ कर गांधीजी जिस प्रकार निःस्वार्थ-भाव से यहाँ काम कर रहे हैं श्रौर कष्ट उठा रहे हैं, उसका प्रभाव मुसलमानों त्रीर हिन्दुत्रों दोनों पर पड़ा है। त्रापके निरन्तर उपदंशों से हिन्दु श्रों में निर्भीकता श्रीर मुसलमानों में हिन्दु श्रों के प्रति विरोध की भवना के त्याग की बात आ गयी है। अब लोग स्वतन्त्रता-पूर्वक बिना किसी भय के खतरनाक स्थानों में भी जाने आने लगे है और जहाँ लोग रात में नहीं बसते थे, अब रात में भी त्राकर रहने लगे हैं। प्रतिनिध के पूछने पर मुसलमानों ने कहा कि गांधीजी को श्रपने बीच पाकर हमें बड़ी खुशी हुई थी। वे बड़े न्यायी पुरुष हैं श्रीर उनका यहाँ रहना दोनों सम्प्रदायों के लिये लाभकर है। साथ ही मुसलमानों ने अपने सहधर्मियों द्वारा किए गए अत्याचारों की निन्दा भी की।

### चंडीपुर में प्रथम भाषण

चंडीपुर के लिये प्रस्थान करते समय गान्धीजी का प्रतिदिन का कार्य-क्रम इस प्रकार बनाया गया था कि स्त्राप एक गाँव से

प्रात:काल प बजे प्रस्थान करेंगे श्रीर डेढ घंटे में लगभग ३ मील चलकर दूसरे गाँव ९॥ बजे पहुँचेंगे। दूसरे गाँव में पहुँचकर आप मालिश कराएँगे श्रीर दापहर में भाजन करेंगे। भोजन के बाद आध घंटे विश्राम करेंगे और फिर कुछ देर चर्खा चलाएँगे, जिसमें ब्रामीए लोग भी भाग लेंगे। चरखा कातने के बाद ४ बजे कुछ जल-पान करेंगे, जिसके आध घंटे बाद प्रार्थना शुरू होगी । प्रार्थना के बाद दो घंटे प्रतिदिन आप प्रामीगों के घरों को जाकर उनका हाल-चाल दर्याप्त करेगे श्रीर उन्हें यह श्रवसर देंगे कि वे अपनी दशाएँ स्वतन्त्रता पूर्वक गांधीजी को बता सकें। इसके बाद गांधीजी ऋपनी चलती-फिरती कुटिया में श्राकर भोजन श्रीर विश्राम करेंगे। खादो प्रतिष्ठान के श्री सतीशचन्त दास गुप्त ने गान्धीजी के लिये विशेष रूप से यह चलती-फिरती कुटिया बनायी है, जिसमें पहिए लगा दी गयी हैं, जो एक गाँव से दूसरे गाँव को आसानी से जा सकती हैं श्रीर जिसमें गांधीजो के स्राराम की स्रावश्यक सुविधाएँ रखी गयी हैं।

गान्धीजी ने ३ जनवरी को चंडीपुर की प्रथम प्रार्थना के समय श्रपने भाषण में कहा कि श्रभी तक लोगों ने जिस प्रकार की श्रहिन्सा का अनुसरण किया है, वह निर्वलों की श्रहिन्सा का अनुसरण किया है, वह निर्वलों की श्रहिन्सा का अनुसरण करें। श्रापने कहा कि नोश्राखाली में मेरा उद्देश्य यह है कि हिन्दुश्रों श्रोर मुसलमानों में भित्रता स्थापित हो। मेरा श्रमिप्राय यह कदापि नहीं है कि एक सम्प्रदाय का दूसरे सम्प्रदाय के विरुद्ध सङ्गठन किया जाय ताकि वह दूसरे पर विजय

प्राप्त करे। यदि यह प्रयोग और उद्देश्य सफल हुआ तो इससे उत्तम वातारण उपस्थित होगा जिससे दोनों सम्प्रदायों को मित्रता पूर्वक रहने में सहायता मिलेगी। आपने कहा कि जब हिन्दू और मुसलमान एक दूमरे के प्रति भय और सन्देह की भावना । अपने दिलों से दूर करेंगे, तभी वास्तविक एकता होगी। एकता में मजहब कोई बाधा नहीं डालता। दोनों अपने-अपने मजहब पर कायम रहने हुए भाई-भाई की तरह रह सकते हैं!

गान्धीजी ने त्रागे कहा कि पूर्वी बङ्गाल में पहिले सोना बरसता था, पर धदकिम्मती से श्रव वह दशा नहीं है। हमारे देश में श्रमीर लोग श्रोर श्रधिक श्रमीर है। ते जा रहे है श्रोर गरीब श्रधिकाधिक गरीब होते जाते हैं। यह स्थित ऐसी नहीं है जो हमारे उत्पर बाहर से लादो गयी हो। इस शैतानी दशा का कोई नैतिक श्रीचित्य नहीं है। व्यक्तियों का व्यवहार उतना बुरा नहीं है। परन्तु मामाजिक व्यवस्था शैतानी बन गर्या है। परन्तु व्यक्तियों से ही ममाज का निर्माण होता है, श्रतः इम दशा का सुधार व्यक्तियों द्वारा ही श्रधिक श्रच्छा व्यवहार किया जा सकता है। समाज का सङ्गठन समानता श्रीर भाई-चारे की भावना के श्राधार पर होना चाहिये।

गानधीजी ने इस बात पर भी जोर दिया कि देश में निकट भविष्य में जो नया शासन श्रीर नयी सरकार की स्थापना होने जा रही है, उसमें पुरानी प्रणालों के दोष नहीं रहने चाहिये। हिन्दू श्रीर मुसलमान इस समय श्रपनं को एक दूसरे के विकद पाते हैं, पर यदि दोनों श्रपने प्राम्य जीवन के पुनर्सगठन के कार्य में अपने को लगा दें तथा अपने घरेलू उद्योग घन्धे को बढ़ाकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधारें, तो आर्थिक उन्नित के लमान कार्य में सब लग जायँगे और उससे उनमें सहयोग तथा एकता की वृद्धि होगी।

शान्ति स्थापना श्रीर एकता के कार्य में लगे हुए कार्य-कर्ताश्रों को मलाह देते हुए गाँधीजी ने कहा कि कार्य-कर्ताश्रों को श्रनेक खतरों का सामना करना पड़ा है। परन्तु उन्हें श्रपने हृदयों से मृत्यु का भय निकाल देना चाहिये श्रीर श्रपने विरोधियों के दिलों को श्रपने वश में करना चाहिये। इस प्रयक्ष में सम्भव है कुछ कार्य-कर्ताश्रों को श्रपनी जान देना पड़े, पर यदि कार्य-कर्ताग्रा प्रेम श्रीर साहस दिखाते ही रहे, तो विरोधी का दिल पिघल ही जायगा श्रीर श्रन्त में वे भी वश में हो जायंगे। यह बात देखने में चाहे जितनी श्रसम्भव मालूम हो, पर सफलता इसी से मिलेगी, इसमें तनिक भी सन्दंह नहीं है। श्रापने कहा कि केवल कार्य-कर्ताश्रों को ही नहीं समस्त प्रामीणों को भी मानव समाज की सेवा में लगना चाहिये श्रीर श्रपने जीवन का एक ज्ञण भी ह्यर्थ नहीं गंवाना चाहिये।

### जले हुए घरों का निरीच्ल

प्रार्थना के बाद गांधोजी चंडीपुर के लगभग एक मील दूर चंगीर गाँव गये। यहाँ आपने पिछले उपद्रवों में जलाये गये चार मकान देखे। आप श्रीरामचंद्र पटवारी के मकान पर गये, जहाँ कि सहायता का एक केन्द्र खोला गया है और यहीं डाट सुशीला नायर रहती हैं। गांधीजी चंडीपुर से जब चंगीर गाँव को चले थे, तो कुछ मुसलमान भी साथ में हो लिये थे। गाँव से जब लौटने लगे, तो साथ के एक मुसलमान सज्जन ने गान्धीजी से अपने घर चलने का अनुरोध किया। गांधीजी 'ने कहा कि मैं किसी दिन आपके मकान आऊँगा और वहीं प्रार्थना कहुँगा।

श्राज सबेरे टहलने के लिये निकलने पर गांधीजी ने रास्ते में कई जलाये गये मकान देखे इनमें से कुछ मकान तो श्रमी तक खाली पड़े हैं, पर शेष मकानों के लोग वापस श्रा गये हैं श्रौर फिर से भोंपड़े बनवा रहे हैं। रास्ते में गांधीजी एक हरिजन के मकान पर भी गये। हरिजन ने माला पहनाकर श्रापका स्वागत किया। पहिले तो हरिजन माला पहिनाने में कुछ हिचका, पर गांधीजी के श्राश्वासन देने पर उसे साहस हुआ श्रौर बढ़कर उसने माला पहिनायी। घर की स्त्रियों ने भी गांधीजी का स्वागत सत्कार किया।

चँडीपुर में श्राने पर स्थानीय लोगों ने गांधीजी के सामने गाँव की रिपोर्ट पेश को जिसमें बताया गया था कि गाँवों के ७४ प्रतिशत हिन्दू गाँव छोड़कर भाग गये हैं श्रीर कलकत्ता, कोमिल्ला, श्रगर तला, श्रासाम तथा श्रन्य स्थानों में जाकर बसे हैं। यहाँ एक महीने से एक शरण गृह शरणार्थियों के लिए खोला गय था जिसमें ४००० शरणार्थी रहते थे। श्रव बहुतेरे लोग श्रपने-श्रपने गाँवों को वापस चले गए हैं श्रीर इस समय केवल ४४० श्रादमी रह गए हैं।

यहाँ पर "चँडीपुर चँगीर गाँव" प्राप्त सेवा-संघ नामक एक

संस्था एकता की स्थापना तथा रचनात्मक कार्य-क्रम के लिए गांधीजी के आदेश से खोली गर्या है। जिसके प्रबन्धक श्री सुरेन बोस नामक एक सञ्जन हैं जो पहिले से ही गांधीजी के श्रनुयायी हैं। इस संस्था द्वारा गांधीजी के १८ बातों के रचनात्मक कार्य-क्रम का पालन होता है, जिसमें छुत्राछृत दूर करना, गाँवों की सफाई, श्रामीणों को धंधों द्वारा सहायता पहुँचाना, श्रामीणों के भगड़ों श्रीर समस्यात्रों का हल करना इत्यादि है, पर हिन्दू-मुस्लिम एकता की श्रोर सबसे श्रधिक ध्यान दिया जाता है।

### स्त्रियों को साहस श्रीर श्रात्म निर्भरता का उपदेश

३ जनवरी को गांधीजी ने अपने निवास स्थान पर श्वियों की एक सभा बुलायी और उसमें श्वियों को यह उपदेश दिया कि वे ईश्वर पर और अपनी शक्ति पर निर्भर रहें किसी दूसरे के भरोसे न रहें। अपने में साहस लाएँ और आत्म-निर्भर बनें। यदि श्वियाँ डरेंगी, तो उपद्रवियों को भी उनके ऊपर आक्रमण करने का साहस होगा.।

गांधीजी ने स्त्रियों को छुत्राछूत भी त्यागने का उपदेश दिया और कहा कि यदि अब भी आप लोग श्रछूतों को अपने से दूर रखेंगी, तो और श्रधिक संकटों का सामना आप लोगों को करना होगा। प्रत्येक सवर्ण हिन्दू को चाहिये कि प्रतिदिन, वह किसी हरिजन को अपने यहाँ बुलाए और उसके साथ भोजन करे। यदि आप लोग हरिजनों को बुलाकर उन्हें भोजन नहीं करा सकतीं, तो उन्हें अपने घर बुलाकर और उनका छुआ हुआ भोजन तथा जल प्रहण करें। यह आप ऐसा करेंगी, तो नकली जातीय बन्धन द्वारा जो खाई जनता की विधिन्न श्रेणियों में पड़ गयी हैं, आगे चलकर वह पट जायगी और सभी जातियों के बीच एकता हो जायगी। यदि इस युक्ति द्वारा लोग अपने पापों को नहीं घो वहाते, तो सभी पर इससे भी अधिक भयद्भर संकट आवेगा।

तमालताल के राम कृष्ण आश्रम में भाषण करते हुए गार्धा जी ने लोगों को अपने में साहस और अकर्मण्यता का त्याग कर अधिक से अधिक अपने को प्राम पुनर्निर्माण में लगाने पर जोर दिया। आपने कहा कि मैं अपनी यात्रा को सफल सममूँ गा यदि मैं यह देखूँगा कि लोग प्राम पुनर्निर्माण के कार्य में लग गए हैं। सम्भव है कि प्रामीण लोग यह समभें कि वे व्यक्तिगत रूप से क्या कर सकते हैं सिवा इसके कि थोड़ा काम कर लें, पर नहीं; यदि वे संगठितरूप से काम करें, तो बहुत काम हो सकता है।

श्राज प्रातःकाल टहलते समय गांधीजी श्राध दर्जन मकानों पर गए, जिनमें दो मकान दिलत जाति के लोगों के थे। उन घरों पर गांधीजी का स्वागत हरिजन ने किया।

कल गांधीजी ६ मील तक गए थे, तीन मील सबेरे श्रौर तीन मील शाम कां। संध्या समय श्राप की अबड़-खाबड़ रास्ते से तथा धान के खेतों से होकर जाना पड़ा श्रौर कुछ खतरनाक पुलों पर से भी जाना पड़ा। परन्तु यह कठिन मार्ग श्रापने सरलतापूर्वक तय किया श्रीर कोई थकावट नहीं मालूम हुई! इस यात्रा के बाद श्रापको श्रच्छो नींद श्रायी। श्री सुरेन बोस गांधीजी को कुछ ध्वस्त मकानों में ले गये श्रीर वहा के विनाश तथा लोगों के कष्टों का विवरण सुनाया।

गांधीजी यहाँ कोई बाह्री श्रादमी या पत्र-सम्बाद-दाताश्रों से नहीं मिल । श्रापन श्रपना सारा समय श्रामीणों से मिलने श्रीर उनके कच्टों को सुनने में व्यतीत किया। श्रामीण स्वियों के भी कच्टों को श्राप सुनते थे श्रीर उनके प्रश्नों के उत्तर देने थे।

## विहार सरकार के प्रतिनिधियों से मुलाकात

चंडीपुर में ४ जनवरी की नीसरे पहर गांधीजी से विहार-सरकार द्वारा भेजे हुए प्रनिनिधिगए मिल और आपके सामने एक रिपोर्ट उपस्थित का। रिपोर्ट में यह बताया गया था कि मुस्लिम लीग के वालंटियर लोग विहार के मुसलमानों में इस बात का प्रचार कर रहे हैं कि बिहार के शरणार्थी मुसलमान बङ्गाल के बद्वान तथा अन्य पश्चिम जिलों में चल कर बसें, जहाँ बङ्गाल सरकार उन्हें रहने के लिये मुफ्त जमीन और अन्य सब मुविधाएँ देगी। यह भी बताया गया कि बङ्गाल मुस्लिम लीग ने बिहार मुस्लिम लीग के पास इस आशय का प्रस्ताव भेजा है और मुस्लिम लीगी वालंटियर विहारी मुसलमानों को बङ्गाल ले जाने के लिये हर तरह से भड़काते हैं। कितने ही बिहारी मुस्लिम शरणार्थी बङ्गाल को चले भी जा रहे हैं। रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि ४ नवम्बर से बिहार में कोई भी घटना नहीं हुई श्रीर बिहार सरकार यह श्राशा कर रही थी कि शरणार्थी लोग श्रपने गाँवों में वापस श्रा जायेंगे परन्तु लीगी प्रचारकों द्वारा भड़काने श्रीर तरह-तरह की शरारत पूर्ण श्रफवाहें फैलाने के कारण शरणार्थियों का वापस श्राना बन्द होगया है।

रिपोर्ट में यह विवरण भी दिया गया है कि बिहार सरकार मुस्लिम शरणार्थियों की सहायता के लिये क्या-क्या कार्य कर रही है सरकार ने बराबर यह आश्वासन शरणार्थियों को दिया है कि उनके पालन-गोपण तथा उन्हें फिर से बसाने का सब खर्च बिहार मरकार देगी। मरकार ने शुरू में शरणार्थियों को राशन दिये और यह काम मुसलमानों में विश्वास जमाने के लिये मुम्लिम लीगी भंग्थाओं की मार्फत कराया गया, जिसके लिये लीगी कार्यकर्ता बड़ी मुश्कल से राजी हुए थे। लीगियों न बड़ी कठिनायी और बहुत अनुनय-विनय के बाद शरणार्थियों की पटना के सरकारी कैन्प में आने दिया। सरकारी कैन्प में सहायता का काम वड़ी रश्वता से होता है। सब लोगों को दिन में दो बार पूरा भोजन दिया जाता है श्रीर पहिनने के लिये कपड़ा तथा कम्बल भी दिये गये हैं। इसके साथ ही शरणार्थियों की दवा श्रौर स्वास्थ्य का पूरा प्रवन्ध है। रिपोर्ट में विस्तार के साथ बताया गया है कि बिहार सरकार ने शरणार्थियों को अपने गाँवों में लाने के लिय उनके वास्ते सवारियों, लारियों श्रादि का यथेष्ट प्रवन्ध किया है। ४०,००० रु० का अन शरणार्थियों को दिया गया, २५,००० कम्बल, १८,९०२ साड़ियाँ, ७,४३४ कुरते, ४,३४० पायजामे ऋौर २०,००० कमीजें तथा श्रन्य कपड़े, मुक्त दिये गये।

महात्मा गांधी से बङ्गाल आजाद हिंद फीज के शान्तिकमेटी के मंत्री श्री देवनाथ दास आज मिले। आप हेमचर
में पुनर्निर्माण का काम कर रहे हैं। आपने गांधीजी से
आजाद हिंद फीज वालों के लिये सन्देश मॉंगा। गान्धीजी
ने सन्देश देते हुए कहा कि—'मेरा सन्देश आजाद हिंद
फीज वालों को यही है कि वे देश की सेवा करें और आवश्यकता हो, तो उस के लिये जान भी दे दें। यदि वे यह बात
सच्चे दिल से करेंगे, तो वे नेताजी सुभाष का असली काम पूरा
करेंगे।'

गांधीजी ने चङ्गीर गाँव के स्कूल का निरीच्चण किया। स्कूल को थोड़ी सरकारी सहायता भी मिलती है। स्कूल में पढ़ाये जाने वाले विषयों के सम्बन्ध में पूळ-ताळ करने के बाद गांधीजी ने कहा कि लड़कों को दस्तकारी भी सिखायी जानी चाहिये। आपने स्कूल में नयी तालीम के अनुसार शिचा देने को कहा, जिसमें दस्तकारी भी सिखायी जाती है। गान्धीजी ने चंडीपुर के स्कूल का भी निरीच्चण किया, जहाँ ४०० शरणार्थी ठहराये गये थे। इसके बाद गान्धीजी ने एक डाक्टर के जलाये गये ध्वस्त मकान को भी देखा। डाक्टर का मकान, दवाखाना सब जलाया और लूटा गया था और डाक्टर अब दाने दाने को मुहताज हो गये हैं।

## चंडीपुर में शरणार्थियों का लौटना

चंडीपुर में गान्धीजी के निवास के समय से शरणार्थियों का अपने घरों को वापस आना शुरू हो गया। उनके मकानों को फिर से बनाने के लिये सरकार की ओर से कम मूल्य में सामान दिये जाने लगे। चंडीपुर करके में लगभग १,४०० शरणार्थी गाँवों से आकर बसे थे। इस जिले के ७४ फीमदी हिन्दू अपने घरों से भाग गये थे, जिनमें से १७ फीसदी अब तक वापस आये। सिलहट, अगरतला और कलकत्ते से वापस आने वाले शरणार्थियों को ठहराने के लिये चंडीपुर में एक कैम्प खोला गया है जहाँ शरणार्थी लोग एक दो दिन ठहर कर अपने गाँवों को वापस जाते है। शरणार्थियों को फिर से बसान के काम के लिये बङ्गाल सरकार द्वारा नियुक्त किये गये किमश्नर मि॰ नूरन नबी चौधरी दो बार गान्धीजी से मिले और पुनर्निर्माण सम्बंधी कामों की सूचना उन्होंने गान्धीजी को दी।

गैर सरकारी तौर पर दर्याप्त करने से मालूम हुआ कि फरीदगंज में ऐसा कोई शरण-गृह नहीं है, जहाँ प्रतिष्ठित शर्णार्थी लोग आकर दो-चार दिनों के लिये ठहर सकें और अपने घरों की मरम्मत होने पर अपने घर वापस जाया। यह भी कहा गया कि यहाँ अभी तक खाली मकानों से सामानों और पशुओं की चोरियों का होना जारी है और जब तक चोरियाँ बन्द नहीं होती शरणार्थियों को वापस लौटने में भय मालूम होता है। कहा गया कि शरणार्थियों को १४ दिन का जो राशन मिलता है, बह पर्याप्त नहीं है। राशन के अतिरिक्त उन्हें खेती के लिये पशु,

हल तथा अन्य सामान मिलाने चाहिये और पेदोवरों को अपना रोजगार जारी करने के लिये रुपये भी मिलाने चाहिये। शिलाण संस्थाएँ फिर खुलानी चाहिये और अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को स्कूल आने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। अध्या-पकों को उनका बकाया वेतन तथा विद्यार्थियों को मुफ्त पुम्तकें मिलानी चाहिये।

बिहार सरकार के आये हुए प्रतिनिधि, जिनमें बिहार सरकार के माल मंत्री श्री के बी० सहाय तथा आसिस्टेंट रिलीफ कमिश्तर भी थे, २४ घंटे रहने के बाद आज चंडीपुर से वापस चले गये। बङ्गाल के प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी द्वारा गान्धीजी को लिखे गये पत्र पर अपना नोट और बिहार के मुस्लिम शरणार्थियों की महायता तथा फिर से बसाने के सम्बन्ध में बिहार सरकार के कार्यों का विवरण बिहारी प्रतिनिधि महात्मा गान्धी को दे गये, जिसे गान्धीजी ने मि० सुहरावर्दी के पास भेज दिया।

# शरणार्थियों को नेक सलाह

महात्मा गान्धी न प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए श्रपनी बादा के सम्बन्ध में कहा कि मेरी यह यात्रा तीर्थ यात्रा के रूप में है। ठीक उसी तरह जिस तरह से लोग काशी या बद्रीनाथ की यात्रा करते हैं। ईश्वर किसी एक स्थान में नहीं रहता। वह ना प्रत्येक स्थान श्रीर प्रत्येक प्राणी में ज्याप्त है। यदि कोई ज्यक्ति ठीक भावना के साथ तीर्थ-यात्रा करता है, तो वह श्रिकाधिक पवित्र होता है।

शरणार्थियों को सम्बोधित करते हुए गान्धीजी ने कहा कि क्या हर्ज है यदि आप लोगों के घर जला दिये गये हैं और श्रापकी सम्पत्ति लूट ली गयी है यदि श्रापमें यह भावना है कि जो भी सङ्कट त्रायेगा त्राप साहस त्रौर दृढ्ता के साथ उसका सामना करेंगे और एकबार फिर अपने ही परिश्रम से अपना जीवन फिर त्रारम्भ करेंगे। शरणार्थियों को साहस के साथ वास्तविकता का सामना करना चाहिये और कुब्र दुस्तकारी सीखनी चाहिये जिससे कि अपना और अपने कुटुम्बियों का भरंग पोषण किया जाय। त्रापने कहा कि जो लोग परिश्रम नहीं करते श्रोर दूसरों की भीख पर निर्भर रहना चाहते हैं, वे चोर हैं। प्रत्येक मनुष्य के पालन-पोपण की जिम्मेदारी उसी पर है। यदि परिश्रम का भय श्रीर सङ्कटों का भय हृद्य से निकल जाय, तां आक्रमणकारी का सामना बड़ी सफलता-पूर्वक किया जा सकता है और आक्रम एकारी को फिर त्राक्रमण करने का साहस नहीं होगा। यदि ४० करोड़ लकड़ी के दुकड़ों को मिला दिया जाय, तो ऐसा जबरदस्त पुल तैयार हा सकता है, जिसपर से होकर बड़ी से बड़ी सेना नदी पार कर मकती है। इसी प्रकार यदि हिन्दुस्तान के ४० करोड़ अादमी संगठित होकर एक हो जायँ श्रौर परस्पर सहायता तथा सहानुभूति की भावना से काम लें, तो एक नया जीवन देश में स्त्रा जाय, जिसमें प्रत्येक पुरुष, स्त्री श्रीर बचा समृद्धिशाली हो जाय श्रीर खाधीनता श्राकर चरणों पर लोटे।

### समस्या का हल-वीरों की ऋहिंसा

चंडीपुर में ६ जनवरी को "चंडीपुर—चंगीर गाँव प्राम सेवा-सङ्ख" के एक सदस्य ने गान्धीजी से मिलकर पूछा कि प्राम सेवा-सङ्ख किम प्रकार से काम करे कि मुसलमानों का श्राक्रमणकारी रुख बदल जाय श्रोर वे कैसे खुश किये जायँ? गान्धीजी ने कहा कि 'खून के बदले खून' का तरीका तो बहुत श्राजमा लिया गया श्रीर श्रव इस समस्या का हल एकमात्र 'वीरों को श्रिहंसा' है। श्रापने कहा कि खुश करने की बात तो फीकी पड़ गयी। श्रात्म-सम्मान को ठेस पहुँचाकर खुश करने का प्रयत्न नहीं किया जा सकता। खुश करने का एकमात्र उपाय यह है कि भय बिल्कुल दूर कर दिया जाय श्रीर जो उचित बात है वह सब कुछ हानि उठाकर भी की जाय।

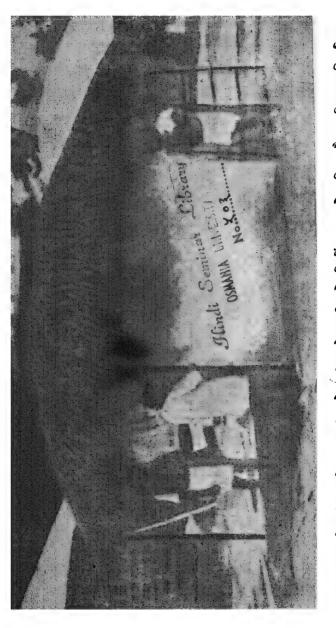
यह पूछने पर कि क्या सरकार से नाम मात्र को मिलने वाली सहायता शरणार्थी लोग स्वीकार करें, क्योंकि वह बिलकुल ना काकी है, गान्धीजी ने कहा कि शरणार्थियों में ईमानदारी के माथ यह पता लगाना चाहिये कि वास्तव में उन्हें कुछ दिनों तक कहीं शरण लेने के लिये कितनी सहायता की आवश्यकता है। यदि उनकी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति प्रस्तावित सरकारी महायता से नहीं हो सकती, तो वं उसे स्वीकार न करें। मगर किर भी वे अपने घरों को वापस जाय, चाहे उसमें उन्हें असुविधा भी हो। इस कार्य को तो साहस और व्यावहारिक दृष्टि से करना ही है।

यह पूछने पर कि क्या हिफाजत के लिये लोगों को संगठन

करना उचित हैं, मान्धोंजी ने कहा कि इस प्रकार के सङ्गठन की बात संग्वी ही नहीं जा सकती। इसका मतलब तो यह होगा कि सारा देश विरोधी दलों में विभाजित हो जाय और हथियारों के बल पर शान्ति की बात सोंची जाय। मनुष्यता के ढङ्ग पर जो बात करने की है, यह है कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह जिस जाति या श्रेणी का हो और चाहे बूढ़ा हो या जवान, अपने अन्दर आन्तरिक बल उत्पन्न कर अपनी रक्षा करे और यह बल ईश्वर से ही प्राप्त हो सकता है।

अपने घर वापस आने वाले शरणार्थियों की हिफाजत के सम्बंध में प्रश्न किये जाने पर महात्मा गांधी ने कहा कि वर्तमान समय में संसार में कोई ऐसी जगह नहीं है जो उपद्रवियों से रहित हो। इसलिये प्रामीणों को चाहिये कि वे अपनी रक्षा के लिये अपनी ही शक्ति पर निर्भर रहें, परन्तु जस शक्ति से उनकी स्थायी रक्षा होगी, वह उनका आन्तरिक बल, उनके हृद्य का बल है। जो ईश्वर को अपना स्वामी और रक्षक सममत है। उनके लिये इस बात की चिन्ता नहीं होनी चाहिये कि उपद्रवी लोग क्या उपद्रव करते हैं और उनकी रक्षा का क्या सांसारिक प्रयन्ध नहीं है अथवा यह कि अपराधियों को दंड मिलता है या नहीं। उनहें तो अपने लिये जो ठीक हो वही करना चाहिये और वाकी सब ईश्वर पर छोड़ देना चाहिये।

गांधीजी ने कहा कि शरणार्थियों के लिये मेरी तत्काल सलाह यह है कि वे साहस के साथ सभी ख़तरों का सामना करें श्रीर अपने घरों को वापस श्रा जाया। कोई हर्ज नहीं है अध्नार खुले



८—अपनी यात्रामें गांधीजी ने जस्दी ही समेट ली जाने बाली फोपव्दियों का उपयोग किया है यह चित्र काजिरिखित में उस समय लिया गया था जब ऐसी फोपड़ो खड़ी की जा गड़ी थी

में रहने या रसद की कमी के कारण उन्हें कुछ कष्ट भी मिले, परन्तु यह प्रयत्न तो किया ही जाना चाहिये।

यह पूछने पर कि यदि सहायता बन्द हो जाय, तो शरणार्थी लोग क्या करें, गान्धीजी ने कहा कि हालांकि व्यक्तिगत रूप से मैं तो यही कहूँगा कि सब लोग चरखा चलावें, परन्तु इस मामलें में मैं यह नहीं कहूँगा। इसके बजाय कार्य-कर्तात्रों को मैं यह सलाह दूँगा कि वे स्थानीय रूप से जाँचकर यह पता लगावें कि प्रत्येक गाँव में लोगों के लिये कौन पेशा हो सकता है। जब सब बातें मालूम हो जायँगी, तब मैं इस सम्बंध में विस्तृत सलाह दे सकूँगा।

#### गांधीजी की दिनचर्या

गान्धीजी की दिनचर्या नोत्राखाली में इस प्रकार है कि श्राप प्रतिदिन ४ बजे तड़के उठते है श्रीर सारा दिन पत्र-ज्यवहार, लोगों से मिलने, सभाश्रों में भाषण देने तथा गाँवों के दौरे में ज्यतीत करते है। श्राप संसार के सभी भागों के लोगों से महत्व-पूर्ण विषयों पर पत्र-ज्यवहार करते है, मिलने में बड़े-बड़े नेताश्रों, राजनीति हों, प्रान्तों श्रीर देशा राज्यों के मंत्रियों से लेकर साधारण से साधारण प्रामीणों तक से मिलते हैं। वार्ताएँ बड़े महत्वपूर्ण विषयों पर होती हैं। कल एक उड़ाके ने गान्धीजी से मुलाकात की थी, जिसने भारत में हवाई विस्तार के सम्बन्ध में बातें कीं।

गांधीजी भोजन करते श्रीर दाड़ी बनाते समय भी एकाम ९ नहीं होते श्रोर इस बीच में भी चिट्ठियाँ श्रीर प्रार्थना सभाश्रों के लिये बंगला भाषा में तैयार किये हुए श्रपने लिखित भाषणों को सुनते हैं। प्रातःकाल टहलने के लिये जाते समय गांधीजा गाँवों का भी निरीच्चण करते हैं, तीसरे पहर प्रामीणों को प्रामसुधार पर उपदेश देते हैं श्रीर शाम को प्रार्थना-सभाश्रों में भाषण करते हैं। जो प्रतिदिन विभिन्न स्थानों पर होती है। प्रार्थना के बाद श्राप फिर गाँवों को देखने जाते हैं।

प्रातःकाल ४ बजे से १०-११ बजे रात तक गान्धीजी कार्यों में बराबर व्यस्त रहते हैं श्रीर विश्राम श्रापको तभी मिलता है जब सोने के लिये जाते हैं।



## मसीमपुर

#### ि अ जनवरी ]

महात्मा गांधी ने श्राज से गाँव-गाँव का दौरा प्रारम्भ किया। श्राज से श्राप प्रतिदिन एक नये गाँव जायँगे श्रीर प्राम-वासियों को एकता का सन्देश सुनाएँगे।

गांधीजी स्त्राज प्रात:काल साहे सात बजे चरडीपुर से रवाना हुए स्त्रीर डेढ़ घंटे में ढाई मील की पैदल यात्रा समाप्त कर ९ बजे स्त्रपनं निर्दिष्ट गाँव मसीमपुर पहुँचे। मसीमपुर में स्त्राप स्रपनी चलती-फिरती कुटिया में ठहरे।

रास्ते में आप तीन जगह रुके। एक तो आप चक्नीर गाँव में रुके, जहाँ आपने स्त्रियों के एक समृह में भाषण किया। आपने स्त्रियों से कहा कि एक तालाब वे केवल पीने के पानी के लिये सुर्राच्चत रखें और उससे कपड़े धोने या नहाने का काम न लें, क्योंकि सभी काम एक ही तालाब से लेने से उसका पानी गन्दा होता है और पानी पीने के काम का नहीं रहता। आपने कहा कि यह तालाब हिन्दुओं और मुसलमानों, दोनों के उपयोग के लिये रहना चाहिये।

गांधीजी जिस समय चएडीपुर से चलने की हुए, बड़ा ही काहिंगिक दृश्य उपस्थित था। जिन श्री मजूमदार के घर में आप ठहरे थे, उनके कुटुम्ब के लोग, स्त्रियाँ और बच्चे सब, आँखों

में श्राँसू भरे खड़े थे श्रौर गांधीजों का जाना सबको खल रहा था। घर की स्त्रियाँ एक थाली में श्रारती श्रौर रोली लेकर खड़ी हो गर्यों। पहिले उन्होंने गांधीजी की परिक्रमा की श्रौर उसके बाद उनके मम्तक में तिलक लगाकर श्रारती उतारी। गांधीजी ने सब लोगों से विदा लेकर श्रपनी सहज मुक्कान के साथ प्रम्थान किया।

पाँव में छाला पड़ जाने के कारण गांधीजी नंगे पैरों चले। खादी प्रिष्टिं के श्री मतीशदास गुप्त सबसे आगे थे, उनके बाद गांधीजी थे और आपके पीछे जन-समुदाय की भीड़ थी। रास्ते भर पुरूप और खियाँ अपने-अपने घरों से बाहर निकल कर गांधीजी के स्वागत में खड़े थे। सभी लोग इस बात के लिय उत्सुक थे। कि गांधीजी उनके मकान पर क्कें, किन्तु यह कैसे सम्भव था। परन्तु एक व्यक्ति इतना आतुर था कि उसने कहा कि यदि गांधीजी मेरे मकान पर नहीं क्केंगे, तो मैं प्राण दें दूँगा। इम पर गांधीजी को कुछ क्षण के लिये उसके मकान पर ककना पड़ा।

महात्मा गांधी मसीमपुर पहुँचे, तो वहाँ आपके लिये बनाये गये पंडाल के निकट गाँव के पुरुषों और स्त्रियों का समूह एकत्र था। पहुँचते ही आपको फल भेंट किये गये। आपने कहा कि ये फल वजों को बाँट दिये जाय और यही किया गया। सबसे पहिले आप मसीमपुर करदा प्राम-सेवा-संघ के मेम्बरों से मिले। यह मंग्था यहाँ प्राम-सुधार कार्य के लिये स्थापित की गयी हैं, जिसके सदस्य आहिन्सा के सिद्धान्त का पालन करते हुए सेवा-

कार्य करते हैं। एक चारपाई पर पड़े हुए गांधीजी ने सेवा-संघ द्वारा किये जाने वाले कार्यों का विवरण सुना। बताया गया कि यह संघ गांधीजी के आदेशानुसार श्री सुरेन बोस ने गत १२ दिसम्बर को स्थापित किया है। संघ के सदस्यों का प्रतिदिन का कार्यक्रम है प्रार्थना करना, नालावों को साफ करना, रास्तोंका सुघार करना और छुत्राछत दर करने के लिये काम करना। संघ के सदस्य मसीमपुर शरण-गृह में ठहरे हुए लगभग २,००० शरणार्थियों की देग्व-भाल और सेवा-सुश्रूषा का भी काम करते हैं। सङ्घ के स्वयं सेवकों ने अब तक ई मील तक की सड़कों की मरम्मत की है ऋौर म्थानीय लोगों में विश्वास तथा साहस को भावना उत्पन्न करने में महायता दी है। सङ्घ के सदस्यों ने कितने ही ऐसे कुटुम्बों का फिर गाँव में वापस लाकर रखा है, जी अपने घर छोड़ कर भाग गये थे। मसीमपुर में गांधीजी जिन सज्जन श्रीदुर्गाचरण पाल के यहाँ ठहरे हैं, वह इस प्राम सेवा-सङ्घ के ऋध्यन्न है।

### प्रार्थना-सभा में भाषण

दिन में भाजन, थोड़ा विश्राम श्रीर प्रामीणों से वार्ता करने के बाद गांधीजी ने मध्या समय प्रार्थना की श्रीर भाषण किया। प्रार्थनां स्थानीय शरणार्थी विश्राम-गृह के सामने मैदान में हुई। सभा में पहुँचने पर गांधीजी का स्वागत किया गया श्रीर शरणार्थियों के एक बालक तथा एक बालिका ने श्रापको मालाएँ पहिनार्थी।

प्रार्थना में बहुतेरे मुसलमान भी थे, पर जब रामधुन का गायन होने लगा, तो वे चले गये। प्रार्थना के बाद अपने भाषण में गान्धीजी ने मुसलमानों के चले जाने का उल्लेख किया! आपने कहा कि मुसलमानों के चले जाने के कारण के बारे में दर्याप्त करने पर मालूम हुआ कि वे इमिलये प्रार्थना से चले गये क्योंकि रामधुन गाया जा रहा था और इससे यहाँ की परिस्थित का मुक्ते पता लग गया। मुक्ते यह मालूम हो गया कि ये लोग यह बात भी नहीं पसन्द करते कि ईश्वर का नाम सिवा उनके ढङ्ग के किसी दूसरे तरीके में लिया जाय। वे अपने ही ढङ्ग की इबादत चाहते हैं। इसा असहिष्णुता की भावना के कारण पिछले अक्टूबर में यहाँ उपद्रव हुए है और इसीलिये यहाँ हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया है।

त्रागे गान्धीजी ने कहा कि ईश्वर की प्रार्थना श्रौर पूजा लोग श्रमंख्य ढङ्ग से करते हैं, परन्तु मुसलमान यह नहीं चाहते कि दूसरे लोग अपने ढङ्ग से ईश्वर की इबादत करें। मुफे इस बात की खुशी है कि श्रपनी यात्रा के पहिले ही दिन मुफे मुसल-मानों का विचार मालूम हो गया। परन्तु जो लोग पाकिस्तान चाहते हैं, ऐसा कभी नहीं कहते। इसके विपरीत मैंने उन्हें हमेशा यह कहते हुए सुना है कि पाकिस्तान में हर एक श्रादमी का श्रपने मजहब पर चलने की बराबर से श्राजादी रहेगी। परन्तु मैंने श्रपनी जिन्दगी में मजहबों में कभी भेदभाव नहीं माना। मजहब तो खुदा रूपी पेड़ की पत्तियों की तरह हैं। खुदा को चाहे कोई जिस नाम से पुकारे, पर है तो वह एक ही। मैं तो नोत्राखाली इसलिये त्राया था कि हिन्दुत्रों त्रोर मुसलमानों की बराबरी से सेवा कहाँ, पर त्रागर मुसलमान यह चाहते हैं कि में त्रापने दक्ष से ईश्वर का नाम लेना छोड़ दूँ, तब तो मेरे लिये लाचारी होगी। जैसे में यह नहीं चाहता कि मेरे मजहब पर मब लोग चलें, उसी तरह में यह भी नहीं कर सकता कि त्रापना धार्मिक विश्वास, त्रापना मजहबी यकीदा में छोड़ दूँ। मै तो यहाँ इस बात के प्रचार के लिये त्राया हूँ कि ईश्वर त्रीर सब मजहब एक ही हैं। जब तक मैं जिन्दा हूँ, इसे छोड़ नहीं सकता। मैं तो जब चण्डीपुर से चलने की हुत्रा था, तो मुक्तसे कहा गया कि यात्रा में रास्ते भर रामधुन गाया जाय, पर मैंने इसे इस ख्याल से स्वीकार नहीं किया कि सम्भव है कि मुसलमान भाई यह समभें कि हिन्दू लोग ऐसे उदंड हैं कि गान्धीजी के त्राने की वजह से रामधुन गाते हुए चलते हैं।

्रिश्चन्त में गांधीजी ने यह कहकर श्रापना भाषण समाप्त किया कि श्रागर यहाँ मेरी मृत्यु हो, तो श्रान्तिम समय मेरे मुँह से यही शब्द निकलें कि मैं यहाँ हिन्दुश्रों श्रीर मुसलमानों दोनों की सेवा के लिये श्राया था।

### गांधीजी की गाँवों के लिये नयी आर्थिक व्यवस्था

गान्धीजी जब से पूर्वी बङ्गाल में पहुँचे, उसी समय से श्रापने प्रार्थना-सभाश्रों में हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रचार करने के साथ ही गाँवों के पुनर्निमाण पर भी बराबर जोर दिया है। श्रीर इस प्राम-सुधार कार्य में आपने प्रामीणों के लिये एक नयी आर्थिक ज्यवस्था रखी है, जिससे प्रामीणों के सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में नया सुधार हो और वे सामाजिक उन्नति के साथ आर्थिक उन्नति भी कर सकें और अन्य देशों के किसानो की भांति समृद्धिशाली हों।

इस नयी आर्थिक व्यवस्था में गांधीजी का ध्येय यह भी है कि अपने गाँवों को वापस आने वाले शरणार्थियों की समस्याओं को सफलतापूर्वक हल किया जाय। अधिकांश शरणार्थियों का सब कुछ पिछले उपद्रवों में लुट गया है और उन्हें जीवन को प्रत्येक दिशा में विविध प्रकार के कप्टों का सामना करना पड़ रहा है। इन्हें अपने जीवन को फिर से आरम्भ करना है, सब व्यवस्था करनी है और इस सब के लिये धन की आवश्यकता है। अतः गांधीजी चाहते हैं कि इस नयी आर्थिक व्यवस्था का अनुसरण कर प्रामीण लोग, विशेषतः शरणार्थी लोग अपनी समम्त समस्याओं को हल करें। यही नहीं बल्कि वे अपनी स्थित और अधिक दढ़ बनायें तथा अपनी रहन-सहन का मान ऊँचा करें।

गान्धीजी की यह नयी ऋार्थिक योजना क्या है, इसे गांधीजी के दल के एक सज्जन ने बताया कि गांधीजा के रचनात्मक कार्य-क्रम की विभिन्न भेद ही इस योजना का ऋाधार है। उसमें चरखा चलाकर सूत तैयार करने ऋौर छोटे-मोटे उद्योग-धन्धे जिन्हें प्रामीण लोग वर्तमान परिस्थित में कर सकें, जारी करने की बात मुख्य है। इसमें गांधीजी चाहते हैं कि हिन्दू और मुसल-

मान मध मिलकर काम करें, जिससे दोनों का समान रूप से आर्थिक हित हो और इस प्रकार वे एक दूसरे के घनिष्ट सम्पर्क में आवें। गांधीजी का कहना है कि इस योजना से आर्थिक लाभ होने और जीवन का सार ऊँचा होने के साथ ही साम्प्र- दायिक समस्या भी सकतता पूर्वक हत्त हो जायगा और हिन्दू तथा मुमलमान अच्छे पड़ोसी तथा भाई-भाई की तरह रह सकेंगे।



#### फतहपुर

#### [ = जनवरी ]

### मुस्लिम गाँवों के बीच से यात्रा

मसीमपुर में २४ घण्टा ज्यतीत करने के बाद गांधीजी दूसरे दिन सबेरे सात बजे दूसरे गाँव फतहपुर के लिये नैयार हुए। ठीक साढ़े सात बजे आप रवाना हुए। आज से गांधीजी ने नंगे पाँव चलना शुरू किया। एक वृद्ध मौलवी के यह कहने पर कि इननी कड़ी मरदी में, जब कि अक्सर पानी भी बरसा करता है, आप नंगे पेरों क्यों चलते हैं, क्योंकि आपको नंगे पाँव चलना देखकर हमलोगों को बड़ी तकलीफ होनी है। गांधीजी ने कहा कि नोआखाली की यात्रा मेरे लिये तीर्थ यात्रा के समान है, इसलिये तीर्थ यात्रा पैरों में चप्पल पहिनकर कैसे कर सकता हूँ। हिन्दू मुसलमानों की एकता के लिये यात्रा करना मेरे नजदीक सबसे बड़ी तीर्थ-यात्रा है, इसलिये मैंने यह यात्रा नंगे पैरों करने का निश्चय किया है।

श्राज की गाधीजी की यात्रा का मार्ग मुस्लिम गाँवों से होकर जाता था, श्रतः श्राप जब इन गाँवों से होकर चले, तो गाँवों की मुस्लिम जनता बड़े उत्साह के साथ गांधीजी का दर्शन करने के लिये श्रपने-श्रपने घरों से निकलकर खड़ी थी। गांधीजी जब मुसलमानों के बीच से होकर निकलते थे, तो सब मुसलमान बड़े श्राहर से गांधीजी के सामने सिर मुका देते थे। एक जगह गांधीजी को कुछ देर के लिये रुक जाना पड़ा, क्योंकि उस तरफ से मुसलमानों का एक दल गांधीजी के दशन के लिये दौड़ा श्रा रहा था। एक जगह गांधीजी का रास्ता रातों-रात रोक दिया गया इस कारण कि वह एक कब्रस्तान के बीच से होकर जाता था। श्रतः गान्धीजी को दूसरे राम्ते से लम्बा चककर लगाकर जाना पड़ा।

रामनगर नामक गाँव में, जो फतहपुर की सीमा पर है,
मुसलमानों की एक भीड़ ने, जिसके अगु आ गाँव के मदरसा
के मोलवी हफीउद्दीन मूका थे, गांघीजी से प्राथना को कि थोड़ी
देर के लिये आप यहाँ रुकने की कृपा करें। इस पर गांधीजी
कुछ दंर के लिये यहाँ रुक गये। मोलवी मूका ने गाांधीजी से
कहा—हम लोग तो साधारण प्रामीण जन हैं और राजनीति
में नहीं पड़ना चाहते। हमें तो कोई ऐसा रास्ता आप बतावें
जिससे कि वर्तमान भगड़ा दूर हो और हिन्दू तथा मुसलमान
फिर नोआखाली में भाई-भाई की तरह रह सकें। गान्धीजी ने
कहा कि इसके लिये आप लोग मेरी प्रार्थना सभा में आवें। इसे
सब लोगों ने स्वीकार किया।

फतहपुर पहुँचने पर गान्धीजी एक मदरसा में ठहराये गये। मदरसा के सामने बहुत से मुसलमान श्रीर वालंटियरों का एक दल गांधीजी के स्वागत के लिये एकत्र थे। सब लोगों ने गांधीजी का स्वागत किया। यहाँ श्राते ही श्रापने एक मौलवी इब्राहीम साहब से बात की।

गान्धीजी यद्यपि थक गये थे, पर फिर भी प्रसन्न थे। रास्ते

में चलते समय भी श्राप प्रसन्न थे श्रीर विविध विषयों पर बातें करते जा रहे थे।

श्राज यहाँ गांधीजी से मसीमपुर, कालूपुर, केरोवा श्राम मंवा-मङ्क ने मेम्बरों से मिलकर एक रिपीर्ट श्रापके सामने उपस्थित की, जिसमें यह बताया गया कि पिछले उपद्रव में मसीमपुर को स्था जित पहुँची। यहाँ ९७८ हिन्दुश्रों के १४७ कुटुम्बों को ज्ञात पहुँची। १३१ मकान छूटे गये श्रीर ८९ मकान जलाये गये। सब मिलाकर ९,२३,३४० रु० की हानि हुई हैं। केरोवा गाँव में १,९७० श्रादमी सताये गये, ११० मकान छूटे तथा जलाये गये तथा २०० श्रान्य मकानों में श्राग लगायी गयी। इस गाँव में भी ७८०६४४ रु० की हानि हुई। कालूपुर में भी चार मकान जलाये गये श्रीर १९४० रु० की ज्ञात हुई।

#### मुसलमानों का कांग्रेस के साथ काम करने का वादा

फतहपुर की प्रार्थना सभा में प्रायः ७०० श्रादमी थे, जिनमें श्राधिकतर मुसलमान थे। गान्धीजी ने प्रार्थना के बाद श्रपने भाषण में इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि इतने श्राधिक मुसल-मान इस सभा में उपस्थित हुए हैं। श्रापन कहा कि मैं कितने ही साल मुसलमानों के बीच में रहा हूँ श्रीर उनका दिया हुआ। भोजन किया है क्योंकि वे मुक्तसे इतना प्रेम करने थे। मैंने उन लोगों के साथ कभी कोई भेदभाव नहीं किया जो दूसरे मजहबों पर चलते हैं। ईश्वर तो एक ही है, लोग उसे नरह-तरह के नाम से पुकारते हैं। कुछ लोग उसे श्रल्ला कहते हैं, कुछ राम कहते है। दूसरे लोग श्रीर दूसरे नाम से पुकारते हैं। ईश्वर के नाम नो श्रासंख्य हैं।

गान्धीजी के भाषण के बाद शिवपुर के मौलघी फजलुलहक साहब बोलं। आपने मुसलमानों से अपील की कि वे हिन्दू भाइयों से भाई चारे का बर्नाव करें। मौलवी साहब ने गांधीजी से भी अपाल की कि आप ऐसा राम्सा बनावें कि हिन्दू और मुसलमान साथ-साथ और सद्भाव के साथ रहें, जैसे कि वे पहिले रहते थे।

गांधीजी के भाषण का मुसलमानों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि गाँव के प्रमुख मुसलमान गांधीजी के पास आये, अपन मह-धर्मियों के कृत्यों के लिये समा माँगी और हिन्दुओं के माथ अच्छा व्यवहार करने तथा काँग्रेस के साथ मिलकर काम करने का वचन दिया।

ं प्रार्थना सभा के बाद गांधीजी एक मील चलकर मौलवी अनवर छल्ला के मकान पर गये। वहाँ कुछ देर रह्कर आप अपने स्थान पर वापस चले आये।

फतहपुर में गांधीजी शान्ति के साथ रहे। यहाँ थांड़े लोग आपसे मिलने आये। एक मुसलमान सज्जन ऐसे भी आये, जिन्होंने गांधीजी से कहा कि मेरे घर की स्त्रियाँ आपका दर्शन करना चाहती है। गांधीजी इस निमंत्रण से बड़े प्रसन्न हुए और कहा कि मुमें इस बात से बड़ी खुशी है कि मुसलमानों ने यहाँ मुमें ठहगया औरमेरेआराम का सब प्रबन्ध किया।

#### श्रमतुस सलाम का अनशन

फतेहपुर में यह सूचना मिली कि गांधीजी की एक मुम्लिम शिष्या कुमारी अमतुस सलाम सिबन्दी गाँव में १३ दिनों से इसलिये अनशन कर रही है कि पिछले उपद्रव के दिनों में इस गाँव से पूजा करने की तीन तलवारें उपद्रवी लोग उठा ले गये हैं, जिसके कारण हिन्दुओं की पूजा में बाधा पड़ती है, अतः आप चाहती हैं कि जो लोग तलवार ले गये हैं, वे लाकर वापम कर दें। चूँकि तलवार नहीं मिली, इसलिये उन्होंने अनशन शुरू कर दिया है। स्थानीय मुसलमानों की कोशिश से दो तलवारें तो वापस मिल गयी हैं, पर तीसरी अभी नहीं मिली है। इसलिये अमतुस सलाम का अनशन जारी है।

वताया गया कि अमतुस सलाम को वृखार भी आता है। और उनकी हालत नाजुक है। गांधीजी को अमतुस सलाम की हालन वरावर वतायी जाती रही है और वे उनके इलाज का पूरा इन्तजाम करते रहे हैं। अमतुस सलाम बड़े ऊँचे मुस्लिम स्वानदान की लड़की हैं और गांधीजी के वरधा वाले आश्रम में आकर बहुत दिनों से रहती हैं। नोआखाली में पिछले तीन महीने से आकर वे हिन्दू मुस्लिम एकता का काम कर रही हैं।

#### दासपाड़ा

#### [९ जनवरी]

महात्मा गांधी २४ घंटे फतहपुर में रहने के बाद आज प्रात:-काल साढ़े सात बजे दासपाड़ा के लिये चले आँर साढ़े आठ बजे दासपाड़ा पहुँच गये। आज से गांधीजी ने नियमित रूप से अपनो 'तीर्थ यात्रा' नंगे पैरों शुरू की।

त्राज की यात्रा श्रारम्भ करने के पहिले गांधीजी ने मोलवी इब्राहीम श्रोर अन्य स्थानीय मुस्लिम नेताश्रों से उत्साहपूर्वक वातें गाँव के मदरसा में की। श्रापने कहा कि मच्चे काँग्रेसी का यह कर्तव्य है कि हिन्दुश्रों श्रोर मुसलमानों के बीच मित्रता बढ़ाने का पूरा प्रयत्न करे। श्रापने इस बात के लिये बड़ी कृतज्ञता भी प्रकट की कि फतहपुर के मुसलमानों ने श्रापका बहुत श्रातिथ्य सत्कार किया। श्रापने कहा—'मैंने श्राप लोगों के यहाँ भोजन राशनिंग के जमाने में आपको परेशानी में न डालने के ही ख्याल से नहीं किया है, किन्तु मैंने श्रापके साथ ही श्रपना भोजन किया है। दूसरी बात यह भी है कि साधारणतया जैसा भोजन लोग करते हैं, उसका मैं श्रादी भी नहीं हूँ। मेरा भोजन तो विचित्र ढक्न का होता है। फिर जहाँ मुफे बकरी का दृध दिया गया है, मैंने उसे श्रवश्य प्रहण किया है।'

दासपाड़ा पहुँचन पर गांधीजो श्रीवसन्त मजूमदार के मकान में ठहरे। फतहपुर की तरह दासपाड़ा में भी अधिकतर मुसल-मानों की ही वस्ती है। श्राज गांधाजी जब चलने लगे, तो श्रापकी यात्रा का फिल्म तैयार करने के लिये एक सिनेमा कम्पनी के लोगों ने यात्रा की फोटो खींची।

दासपाड़ा पहुँचने के बाद गाधीजी को इस गाँव की घटनाओं का विवरण बताया गया। गाँव के लोगों से घटनाओं का विवरण सुनने में गांधीजी का अधिक समय लगा। दिन में भोजन इत्यादि करने के बाद गांधीजी ने आध घंटे विश्राम किया और उसके बाद कई व्यक्तियों से बातें कीं।

संध्या समय प्रार्थना हुई उसमें भाषण करते हुए गांधीजी न कहा कि इसके पहिले गाँव में मैं मौलवी इब्राहीम साहब के नकान पर ठहरा था और वहाँ की प्रार्थना सभा में बहुत मुसल-मान एकत्र हुए थे। मैंने हमेशा यही चाहा है कि पूर्वी बङ्गाल की यात्रा में मै मुसलमानों के घरों में ही ठहरूँ। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जो लोग मुक्ते अपने यहाँ ठहराएँगे, उन्हें मेरे भोजन के लिये कुछ खर्च नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि मेरे भोजन का प्रवन्ध सब पहिले ही से हो गया है। मैं तो अपने मुसलमान मित्रों से रहने के लिये केवल स्थान चाहता हूँ।

### साथ में पुलिस रहने का विरोध

गांधीजी ने अपने भाषण में कहा कि—मुफ्ते यह जान कर बहुत अफसोस हुआ कि बहुत लोग यह सुनकर गाँव से चले गये हैं कि मेरे साथ पुलिस ख्रीर फीजी लोग है। मैं तो नहीं चाहता था कि मेरी हिफाजत के लिये पुलिस वगेरह मेरे साथ रहे, पर बङ्गाल सरकार ने यही निश्चय किया कि पुलिस दिफाजत के ख्याल से जरूर रहेगी। जहाँ तक मेरी हिफाजत का सवाल है, मेरा तो ख्याल है कि कोई किसी की हिफाजत नहीं कर सकता। अगर में वीमार पड़ जाऊँ या मर जाऊँ, तो कौन मेरी हिफाजत करेगा। अमली हिफाजत तो केवल ईश्वर कर सकता है। जो कोई अपराध नहीं करता, उसे किसी से डरने की जरूरत नहीं है। अगर किसी ने कोई गलती की है, तो उसे ईश्वर के सामने पश्चात्ताप करना चाहिये और उससे प्रार्थना करनी चाहिये कि उस अपराध के लिये ईश्वर उसे जमा कर है। सच्चे धार्मिक आदमी को किसी से डरने की जरूरत नहीं हैं। उना तो सिर्फ परमात्मा से चाहिये। खुदा में सचा विश्वान रखने वाले को उसी पर भरोसा रखना चाहिये। अगर किसी ने कोई गलती की है, तो खुदा उसे उसके लिये सजा देगा और अगर किसी ने कोई कसी ने कोई कसूर नहीं किया है तो कोई उसे छू नही सकता।

्रश्रापने कहा कि नोश्राखाली के मुसलमानों को बङ्गाल सरकार से जो कि उन्हीं की सरकार है—कहना चाहिये कि गांधीजी की हिफाजत के लिये किसी पुलिस या फोज की जरूरत नहीं है श्रीर हम लोग खुद उनकी हिफाजन करेंगे।

गांधीजी ने कहा कि जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मुक्ते विना किसी हिफाजत के कहीं भी जाने में कोई भी डर नहीं लगता क्योंकि मौत श्रगर श्राती है, तो उसमें कोई श्रपने को बचा नहीं सकता। मुक्ते मुसलमानों से या किसी में भी कोई डर नहीं है, बल्कि मैं तो मुसलमानों के घरों में ही रहना चाहता हूँ श्रगर वे मक्ते श्रपने यहाँ रहें। प्रार्थना में गांधीजी के भाषण के बाद मौलवी इसहाक ने कुरान की आयतें पढ़ीं। गाँव के मुसलमानों ने कहा कि वे महज डर के मारे ही प्रार्थना में नहीं आते, ऐसी बात नहीं है। आज बाजार का दिन है और बहुत लोग चीजें खरीदने के लिये बाजार गये हैं। मगर कुछ लोग डर की वजह से भी नहीं आये हैं।

गांधीजी की इस अपील का प्रभाव मुसलमानों पर बहुत पड़ा और वे सभाओं में बड़ी तादाद में आने लगे। हिन्दुओं में भी भय की भावना बहुत कुछ दूर हो गयी और वे भी विना हर के मुमलमानों के बीच चलने-फिरने लगे तथा अपने घरों को वापस आने लगे। कितने ही हिन्दुओं के मकान जले हुए अभी तक पड़े हैं, पर वे अपने मकान के पास खुले मैदान में ही आकर रहने लगे हैं। मिन्दरों में शक्क और घड़ियाली का बजना भी सुनायी देने लगा है जो इस बात का द्यातक है कि हिन्दुओं में विश्वास की भावना जम गयी है।

दासपाड़ा में गांधीजी ने मुसलमानों से श्रमतुस सलाम के श्रनशन का भी उल्लंख किया श्रीर कहा कि श्रमतुस सलाम की जान बचाना मुसलमानों का फर्ज है। श्रमतुस सलाम हिन्दू मुसलमानों में एकता होने के लिये श्रपनी जान खतरे में डाले हुए हैं, इसलिये उनकी इस श्रिप्त परीचा में उनकी सहायता सब को करनी चाहिये।

प्रार्थना के वाद गांधीजी पास के कुछ गाँवों को देखने गये स्रौर प्रातःकाल जगतपुर जाने का निश्चय किया।

### जगतपुर

#### [१० जनवरी ]

महात्माजी त्र्याज प्रातःकाल साढ़े त्र्याठ बजे त्र्यपनी पैदल यात्रा के पाँचवें गाँव जगतपुर पहुँचे। दासपाड़ा से जगतपुर का ढाई मील का मार्ग श्रापने एक घएटे में तय किया।

जगतपुर के रास्ते में भी मुस्लिम प्रामीण प्रपने-त्रपने घरों के दरवाजे पर गान्धीजी के दर्शन के लिये खड़े थे। इस गाँव में भी अधिकतर आवादी मुसलमानों की ही थी। रास्ते में गान्धीजी को कुछ दूर पर एक घर दिखाया गया, जो उपद्रव में जला दिया गया था। गान्धीजी एक अन्य स्थान पर गये, जहाँ पक बूढ़ी स्त्री दंगे में मरी थी। कहा जाता है कि दंगाइयों को आते देखकर हा डर के मारे उसके दिल की धड़कन बन्द हो गयी थो और वह मर गयी थी और उस मकान में रहने वाले दो आदमी भी मार डाले गये थे।

जगतपुर में पहुँचकर गान्धीजी श्री महंशचन्द्र भाविमक के मकान में ठहरे। यहाँ के एक मुस्लिम सज्जन ने पिहले गान्धीजी को श्रपने मकान में ठहराना म्बीकार किया था, पर श्राखिरी समय में उन्होंने इनकार कर दिया। जगतपुर दो वर्ग मील के रकवे का एक छोटा-सा गाँव है श्रोर रामगञ्ज थाने के दिल्ला में तीन मील पर है। इसकी श्राबादी उपद्रवों के पहिले लगभग ४०० श्रादमियों की थी, जिसमें हिन्दुश्रों की संख्या बहुत थोड़ी थी। जगतपुर की घटनाश्रों की रिपोर्ट गान्धीजी के सामने पेश की गयी।

# जबरन धर्म-परिवर्तन नाजायज है

दिन भर लोगों से मिलने श्रीर बातें इत्यादि करने के बाद गान्धीजी ने शाम को प्रार्थना की स्त्रौर भाषण भी दिया। स्त्रापन जबरन धर्म-परिवर्तन को बुरा बताया। श्रापने कहा कि पिछले कुछ दिनों में मै सुन रहा हूँ - श्रीर खासकर कल से - श्रगर मुसलमान लाग हिन्दु श्रों से मुसलमान बनने को कहें तो हिन्द राजी से मुमलमान हो जायँ ऋौर ऋगर ऐसा हो, तो हिन्दऋों की जान-माल की हिफाजन रहेगी श्रीर साथ ही जबरन धर्म-परिवर्तन भा नहीं किया जायगा। गान्धीजी ने फहा कि मै एक चएए के निये भी नहीं मानता कि यह बात मच है ऋौर मुसलमानों न ऐसा कहा होगा। पर मैं यह जहूर कहना चाहता हूँ कि श्रगर किया जाय, तो यह जबरदस्ती श्रौर भय दिखाकर इस्लाम प्रहण कराना होगा। आपने कहा कि मुभे उन दिनों की याद आती है, जब ईसाई लोग श्रकाल के दिनों में गरीबो के बचों को खरीद लेतं थे श्रीर उन्हें ईसाई बनाते थे। यह ना ईसाई धर्म प्रहरा करना नहीं हुआ। धर्म-परिवर्तन तो वह है, जो अपनी इच्छा से किया जाय श्रीर उसके तत्व की समभकर प्रहरण किया जाय । उसी तरह से इस्लाम प्रहरण करना वास्तविक श्रीर जायज नभी होगा जब उसे श्रपनी इच्छा से स्वीकार

किया जाय। मैं तो किसी सं हिन्दू धर्म प्रहण करने के लिये नहीं कहूँगा। मेरे पास तो जो लोग आयें और हिन्दू बनने के लिये कहै, तो मैं उनसे यही कहूँगा कि पहिले हिन्दू धर्म के तत्वों को समभ लो और उस पर यदि तुम्हारी आत्मा हिन्दू बनने को कहैं, तब हिन्दू धर्म प्रहण करो।

गान्धी जो ने कहा कि मैंने जो कुछ कहा है, सम्भव है वह हर कोई को पसन्द न आवे, पर मैं चाहता यही हूं कि मुमलमान इस बात पर गौर करें। मैंने मुस्लिम सन्तों द्वारा लिखे गये प्रन्थ इम्लाम के इतिहास को अपने व्यस्त जीवन में जो पढ़ा है, उसमें कहीं भी एक वाक्य भी ऐसा नहीं लिखा, जिसमें जबरन धर्म-परिवर्तन करने को कहा गया हो। वास्तविक धर्म-परिवर्तन तो हृद्य से होता है और दिली धर्म-परिवर्नन बिना किसी धर्म को अच्छी तरह समके हुए नहीं हो सकता। इसलिये जबरन धर्म-प्रिवर्तन नाजायज है।

प्रार्थना के बाद गान्धीजी गाँव में एक मील के करीब टहलने गये। दूसरे दिन लामचार गाँव जाने का आपने निश्चय किया।

जगतपुर में स्त्रियों का एक डेपुटेशन गान्धीजी से मिला श्रीर यह बताया कि उपद्रव के दिनों मे उन पर कैसे-कैसे श्रत्याचार किये गये। श्रन्य श्रनंक सज्जन भी गान्धीजी से मिले।

#### लामचार

#### [ ११ जनवरी ]

गान्धीजी ऋपनी यात्रा के प्रोधाम के छठे गाँव लामचार में आज ९ बजे पहुँचे। आज आप कुछ देर से चले थे, क्योंकि आप कल रात में ढाई बजे ही उठ पड़े थे और बहुत देर तक चिद्धियाँ लिखते रहे।

रास्ते में एक चौराहे पर बहुत से मुसलमान खड़े थे, जिनमें लड़के श्रौर लड़कियाँ भी थीं। इन लोगों ने गान्धीजी का स्वागन किया श्रौर हरे नारियल भेट किये। इसके बाद ये लोग भी गान्धीजी के दल के साथ हो गये श्रौर लामचर तक श्राये। रास्ते में श्रौर भी कई जगह मुसलमान काफी संख्या में खड़े मिले, जो गान्धीजी के इन्तजार में खड़े थे। गान्धीजी जब इन लोगों के पास पहुँचते थे, तो वे गान्धीजी को सिर भुका देते थे। गान्धीजी हर श्रादमी के पास खड़े हो जाते थे श्रौर मुस्कराते हुए उसका श्रीभवादन स्वीकार करते थे।

धान के खेतों को पार करते हुए गान्धीजी लामचार की सीमा पर पहुँचे । वहाँ एक कीर्तन-मण्डलो गान्धीजी के स्वागत के लिये राम-धुन गातो हुई आपकी प्रतीचा कर रही थी। गान्धीजी के दल के पहुँचने पर यह मण्डली भी साथ हो गयी और दल के आगे कीर्तन करते हुए चली। मार्ग में गान्धीजी ने दो जले हुए मकान देखे, जिनमें से एक मकान के मालिक ने आपको अपनी दुख-गाथा सुनायी। गांधीजी ने उसके मामले का जिक्र सुपरिनटेंडेन्ट पुलिस से किया जो कि साथ में थे।

एक अत्यन्त कठिन पुल पार कर गान्धी श्री सिनहा चौधरी के मकान पर ठहरे। वहाँ बहुत से स्त्री और पुरुष पहिले से ही गान्धीजी के दर्शन के लिये एकत्र थे। लामचार पहुँचने पर वहाँ की रिपोर्ट गान्धीजी को दी गयी। उसके कथनानुसार इस चेत्र में लामचार दी एक मात्र ऐसा गाँव था, जहाँ कोई जबरदस्ती मुसलमान नहीं बनाया गया, स्त्रियों पर अत्याचार नहीं हुआ और न यहाँ का कोई हिन्दू लापता है। गाँव के युवकों ने अपनी रक्षा के लिये रच्चक दल बनाये थे। रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि इस गाँव में ८४० मुमलमान तथा ७४० हिन्दू हैं। इस गाँव में ११ हिन्दू मारे गये और ३६ मकान जलाये गये, जो श्रिधिकतर गरीबों के थे।

लाम वार के मदरसा के मैदान में गान्धीजी ने प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद भाषण में आपने कहा कि नोआखाली की भस्म राख पर मैं ऐसे नये समाज का निर्माण करना चाहता हूँ, जो आर्थिक व्यवस्था के आधार पर हो। आपने कहा कि नोआखाली आने का मेरा उद्देश्य दोनों सम्प्रदायों के विचारों में परिवर्तन करना है। मैं चाहता हूँ कि मुसलमानों में ऐसा साहस आवे कि अपने. किये अपराधों को वे स्वीकार करें—यदि उन्होंने अपराध किया है—और उसके लिये सजा भोगें। सजा भोगने से उन्हें

अपने किये कृत्यों पर पश्चात्ताप होगा और फिर इन अपराधों को करने की इच्छा नहीं होगी। और हिन्दुओं से मैं चाहूँगा कि वर्तमान कष्टों के आधार पर वे एक नये समाज के निर्माण का कठिन कार्य माहस के साथ करें और अपने भय का त्याग करें।

गांधीजी ने कहा कि सरकार का भी यह कर्तव्य है कि जिन लोगों के मकान नष्ट हुए हैं, उनके मकान बनवाये जाय और उनकी जीविका का प्रबन्ध किया जाय। जो आदमी जो धंधा पहिले करता था, उसे फिर जारी करने में उसकी सहायता की जाय। पर यदि सरकार अपने कतव्य का पालून न करे, ते धनी लोगों का धमें हैं कि वे पीड़ितों की सहायता करें और उन्हें अपना धंधा शुरू करने मे मदद दें। परन्तुं यह सहायता कर्ज के रूप दी जाना चाहिये, खैरात के रूप में नहीं।

प्रार्थना के बाद गांधाजी शाम को टहलने के समय चौधरी बाई। गये जहाँ उपद्रव के दिनों में शरण-गृह खोला गया था। यह मकान चारों तरफ उपजाऊ खेतों से घिरा है और इसमें इस गाँव तथा आस-पास के गाँवों के ५,००० आदिमियों ने आकर शरण ली थी। लोटते समय गांधीजी ने जलाये हुए तीन मकानो को देखा और बूढ़े माता पिताओं को सान्त्वना दी जिनके जवान लड़के मार डाले गये थे।

### तालाय से लाशें निकाली गयीं

गांधीजी के लामचार आने के एक दिन पहिले नोश्राखाली के सुपरिनटेंडेन्ट पुलिस मि॰ श्रबुल्ला यहाँ आये थे। यहाँ आने पर

**-९** लामचार

उन्हें बताया गया कि बगल के एक गाँव के तालाब में लोगों को मारकर फेका गया है और कई लाशों इसमें मिलेंगी। सुपिटेंडेंट पुलिस के कहने से तालाब में कई हिन्दू उतरे, जिसमें से पाँच ितर कटं हुए धड़ तथा कम-से-कम ४-६ आदिमियों की ठठरियाँ तथा हिंदू याँ निकलीं। ये लाशों और ठठरियाँ गांधीजी को भी दिखायी गयीं, जिन्हें देखकर गांधीजी बड़े दुखी हुए, पर कुछ वोले नहीं। दो लाशों पर कपड़े बच रहे थे, जिनमें से एक पर खहर का कपड़ा था और दूसरी पर किनार दार माड़ी तथा इलाउज थी। तालाब में किननी लाशें फेंकी गयी. इसका कोई पता नहीं लगाया जा सका, पर यह बताया गया कि ११ आदमी इस गाँव के गायब थे और ३४ दूसरे गाँव के।



### कारपाड़ा

#### [ १२ जनवरी ]

श्राज गान्धीजी कारपाड़ा गाँव में प्रात:काल पहुँचे। कार-पाड़ा नोत्राखाली के उन गाँवों में से है जहाँ उपद्रव के दिनों में घोर श्रत्याचार किये गये थे।

लामचार से ठीक साढ़े सात बजे प्रस्थान कर ऋौर डेढ़ मील का मार्ग प्रायः ऋाध घंटे में समाप्त कर महात्माजी प्रबजे के थोड़ी देर बाद कारपाड़ा पहुँचे ऋौर यहाँ के प्रतिष्ठित निवासी स्वर्गीय श्री मनमोहन राय के मकान में ठहरे।

कारपाड़ा में गांधीजी का यह दूसरी बार आगमन हुआ था, जहाँ आप लगभग दो महीने पहिले एक बार और दो घंटे के लिये आये थे। कारपाड़ा से प्रस्थान करने से पहिले गांधीजी ने यह इच्छा प्रकट की कि अब आज से यात्रा समाप्त न होने तक प्रतिदिन रामधुन भजन यात्रा शुरू करने के पहिले और दूसरे गाँव में समाप्त होते समय गाया जाय। इसके अनुसार जब गांधीजी लामचार से चले उस वक्त रामधुन भजन शुरू हुआ और राखे भर गाया जाता रहा और कारपाड़ा में पहुँचने तथा यात्रा समाप्त होने पर बन्द हुआ।

रामधुन का यह विवाद रहित तथा सरल भजन जो गांधीजी को इतना प्रिय है श्रौर जिसे श्रापने नोश्राखाली की यात्रा में प्रधानता दी है तथा जिस पर लीगी मत के नौद्याखाली जिले के हु गाँबों के मुसलमानों ने त्रापत्ति की है, इस प्रकार है :—

रघुपति राघव राजाराम

पतित-पावन सीताराम

मङ्गल-परसन राजाराम

पतित-पावन सीनाराम

शुभ-शान्ति विधायक राजाराम

पतित-पावन सीताराम

डर-भय-दरिता राजाराम

पतित-पावन सीताराम

निर्भय कर प्रभु राजाराम

पतित-पावन मीताराम

दीन-दयाला राजाराम

पतित-पावन सीनाराम

राजाराम जै सीताराम

पतित-पावन सीताराम

गान्धीजी ने रोज की तरह यात्रा नंगे पाँव की थी, किन्तु छाले पड़ने के कारण उगिलयों में कपड़ा बांधे हुए थे। रास्ते में स्त्रियों ने मकानों से निकल कर गान्धीजी का स्वागत किया। उन्हें मालाएँ पहिनायीं तथा फल भेट किये।

कारपाड़ा में जिस मकान में गान्धीजी ठहराये गये थे, उसमें फूल पत्तियों का फाटक सजाया गया था ख्रौर सड़क पर दोनों ख्रोर स्त्रियों की कतार ऋापके स्वागत के लिये खड़ी थी। कारपाड़ा की प्रार्थना-सभा में भाषण करते हुए गान्धीजी ने यहाँ आये हुए आजाद हिन्द फौज के कुछ सिक्स्व स्वयं सेवकों का उल्लेख किया। आपने कहा कि इन सिक्खों ने नेताजी सुभाष बोस के नेतृत्व में भारत की आजादी कील ड़ाई में अपना खून बहाया है। हिन्दुस्तान वापस आकर ये लोग मेरे पाम आये और पूछा कि किस तरह से हिन्दुस्तान की सर्वीत्तम सेवा करें। पर मैं तो आहिन्सा का ब्रती हूँ और मैंने इन्हें सलाह दी कि हिन्दू मुसलमान का बिना किसी भेदभाव के वे देशवासियों की सेवा करें। गान्धीजी ने कहा कि ये सिक्ख बङ्गाल आने से पहिले यहाँ के प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी की इजाजत लेकर आये हैं और अपने कृपाण छोड़ आये हैं।

श्राज की सभा में गान्धीजी ने फिर श्रपने साथ पुलिस श्रीर फौजियों के रहने का जिक्र किया श्रीर कहा कि मैं नहीं चाहता कि ये लोग मेरे साथ रहें। श्रापने कहा कि मैं श्रपनी जिन्दगी में कभी किसी से डरा नहीं हूँ श्रीर न यहाँ मुक्ते किसी का भय है। श्रगर मुसलमान लोग पुलिस श्रीर फौजियों से डरते हैं, तो वे बङ्गाल सरकार को लिखें कि ये यहाँ से हटा लियें जायँ। जिसके लिये मैं स्वयं पहिले ही कह चुका हूँ। श्रापने कहा कि सचा मुमलमान तो वही है जो खुदा के सामने श्रपना सर भुकावे श्रीर दुनिया में किसी दूसरे से न डरे।

सन्ध्या समय टहलने के समय गान्धीजी ने कारपाड़ा के दो जलाये गये मकानों को देखा।

कारपाड़ा में गान्धीजी ने श्रपना भोजन फिर घटा दिया।

पिछले दो दिनों से आपने रात के भोजन के समय शब्जी लेना भी बन्द कर दिया था और आज से दृध के साथ छुहारा लेना भी बन्द कर दिया, केवल दूध लेते हैं।

कारपाड़ा के सम्बंध में गान्धीजी के सामने जो रिपोर्ट पेश की गयी, उससे विदित हुआ कि इस गाँव में अधिकतर हिन्दुओं की बम्ती है जिनकी संख्या २,२६१ है और मुसलमानों की लगभग ६००। उपद्रवों के बाद अब यहाँ हिन्दुओं की संख्या आधी रह गयी है।

कारपाड़ा में आजाद हिन्द फौज के कर्नल निरंजन सिंह गान्धीजी से फिर मिलने आये थे। यहाँ से खिजिरखिल गये, जहाँ रहकर आप बङ्गाल पीड़ितों की सहायता का काम करेंगे।

## शाहपुर

#### [ १३ जनवरी ]

गान्धीजी अपनी गाँव-गाँव यात्रा के सातवें गाँव आज पहुँचे। आप प्रातःकाल सादें आठ बजे कारपाड़ा से चलकर लगभग ४० मिनट में दो मील का रास्ता तय किया। आज आपका मीन दिवस था, अतः चलने से पहिले आपने २० मिनट अपना रास्ते में सुनाया जाने वाला भाषण लिखने में लगाया। यद्यपि गान्धीजी अपना भोजन घटा देने के कारण कमजोर हो गये हैं, पर यात्रा आपने प्रसन्नता के साथ समाप्त की।

रास्ते में आप शाहपुर बाजार होकर गुजरे जहाँ उपद्रव के दिमों में कुछ दूकानें लुदी गयी थीं। शाहपुर में भो गानधीजी का यह आगमन दूसरी बार हुआ। पहिली बार पिछले नवम्बर में आप खिजिरिखल जाते हुए यहाँ आये थे। रास्ते में आपने कारपाड़ा के पूर्व में स्थित दो जलाये गये मकानों को देखा, जहाँ बड़ा दर्दनाक हश्य दिखायी दिया। एक बूढ़ी खी ने अपने पौत्र को गोद में लिये हुए बताया कि किस तरह से उसके पित और एकमात्र पुत्र की हत्या की गयी थी। बूढ़ी खी की बिधवा बहू भी उसके पीछे स्तब्ध खड़ी थी जिसका आँखों में आँसू छलक रहे थे। गानधीजी ने बूढ़ी की गोद के बच्चे को प्रेमपूर्वक थपथपाया। साथ में चलने वाले सुपरिटेंडेंट पुलिस ने बनाया

कि बूढ़ी स्त्री के पति ने १७,००० रू० दो किस्तों में उपद्रव के दिनों में मुस्लिम लीग को चंदे में दिये थे। परन्तु गुएडों ने गहने वगैरह मांगे, जिस पर पित ने सोने के गहने तथा अन्य कीमती चीजें भी दीं। पर इतने पर भी उनकी जान नहीं बची आरे अपने घर में ही वह मार डाले गये। सुपिरंटेंडेंट पुलिस ने यह भी कहा कि बूढ़ी का जवान लड़का लापता है और यह भी समक्षा जाता है कि वह भी मार डाला गया।

राम्ते में गान्धीजी का यथावन् स्वागत किया गया। शाहपुर त्राने पर वहाँ की स्थिति के बारे में जो रिपोर्ट दी गयी, उससे विदित हुन्ना कि शाहपुर में हिन्दुओं की बस्ती त्राधिक हैं। ६०० हिन्दू हैं त्रीर ४०० मुसलमान। शाहपुर बाजार में ५ मकान जलाये गये त्रीर १६ मकान लूटे गये। इस गाँव में किसी हिन्दू को मुसलमान नहीं बनाया गया।

## जमीन और तालाब से लाशें निकाली गयीं

गान्धीजी के श्रागमन से गाँवों के हिन्दुश्रों को साहस श्रा गया श्रीर उन्होंने पुलिस को बताया कि गुंडों ने हत्या करने के बाद लाशें कहीं जमीन में गाड़ दी हैं। कारपाड़ा श्रीर शाहपुर के बीच एक जगह इस तरह को दो लाशें जमीन खोदकर निकाली गर्यी श्रीर तालाब से भी लाशें निकालों।

संध्या समय गांधीजी ने श्रपना मीन समाप्त किया श्रीर प्रार्थना सभा में भाषण किया। श्राज यहाँ श्रीमतो सुचेता कृपलानी, कुमारी वीणा दास तथा श्रम्य महिला कार्य-कित्रयाँ त्राकर गान्धोजी से मिलीं। सभा में ये महिलाएँ भी उपस्थित थीं। प्रार्थना सभा में लगभग ३०० त्रादमी उपस्थित थे, जिनमें मुसलमान भी काफी थे। प्रार्थना के बाद गांधोजी जलालउहीन हाजी नामक प्रमुख मुसलमान सञ्जन के मकान पर गये, परन्तु हाजी के न होने के कारण त्रापने स्थान पर वापस चले त्राये। यहाँ बहुत से मुसलमान श्रापके दर्शन के लिये एकत्र थे।

गान्धीजी से एक भूतपूर्व फौजी अफसर मिले और उन्होंन राजनीतिक मामलों पर कुछ प्रश्न पृद्धे । उनके एक प्रश्न के उत्तर में गान्धीजी ने कहा कि ऋ० भा० कांग्रेस कमेटी ब्रिटिश सरकार के ६ दिसम्बर के वक्तव्य को स्वीकार कर ऋन्तिम सीमा तक पहुँच गयी है आँर मुस्लिम लीग के प्रति मित्रता का रुख प्रकट किया है। दूसरे प्रश्न के उत्तर में ऋापने कहा कि मैं नहीं कह सकता कि काँग्रेस के इस मित्रतापूर्ण संकेत पर मुस्लिम लीग का क्या रुख होगा, मै तो यही आशा कर सकता हूँ कि लीग भी इसका ऐसा ही प्रत्युत्तर देगी। प्रश्न कर्ता ने यह प्रश्न किया कि काँग्रेस क्या पसन्द करेगी, पाकिस्तान या गृह युद्ध ? गान्धीजी ने कहा कि इन दोनों में खराबी है ऋौर किसी का यह समभना तो भारी भूल है कि पाकिस्तान गृह-युद्ध भड़का कर प्राप्त किया जा सकता है। प्रश्न कर्ता के यह पूछने पर कि भारत किस प्रकार का शासन पसन्द करेगा समाजवादी या कस्युनिस्ट उक् का, गान्धीजी बड़े जोर से हँस पड़े ऋौर बोले- 'पहिले पूर्ण स्त्राधीनता तो प्राप्त होने दीजिये।'



महियातपुर से नारायरापुर के रास्ते में गांधी जी एक पुज पार कर रहे हैं

# भटियालपुर

### [ १४ जनवरी ]

महात्मा गान्धी शाहपुर से आज अपनी गाँव-गाँव याश्रा के आठवें गाँव भटियालपुर पहुँचे। इन दोनों गाँवों के बीच के एक मील का मार्ग तय करने में गान्धीजी को द्रश्र मिनट लग गये, क्योंकि आप राग्ते में चार मुस्लिम मकानों पर रुके थे और घर के लोगों से वार्न कीं। भटियालपुर में गान्धीजी श्री भारत-चन्द्र नाग वकील के मकान पर ठहरे।

मुसलमानों के उपरोक्त चारो मकानों तक जान में गान्धी जी को धान के खेतों के बीच से जाने वाले तथा ऊबड़-खाबड़ तीन मील रास्ते को तय करना पड़ा। इन मकानों के पुरुषों, खियों तथा बच्चों को गान्धी जी के आने पर आश्चर्य और साथ हो बड़ी प्रसन्नता हुई। उन लोगों ने अपने घरों से निकल कर गान्धी जी का स्वागत किया। इनमें से टो मकानो पर गान्धी जी से अनुरोध किया गया कि आप अन्दर चलें, क्यों कि घर की खियाँ आपका दर्शन करना चाहती है। गान्धी जी अन्दर गये और खियों से कुछ देर तक बातें कीं। स्त्रियों ने आपको मालाएँ पहिनायी और स्वागत किया।

इन मकानों में से एक मकान में एक बीमार लड़का गांधीजी के सामने लाया गया। गान्धीजी ने उसकी बीमारी के बारे में पूछा श्रोर उनके साथ के एक डाक्टर ने लड़के को जाँच की तथा दवा लिख दी। डाक्टर सुशीला नायर नथा कुमारी मनुगान्धी श्रन्दर गर्यी श्रीर स्त्रियों से बातें की।

इनमें से मियाँ जान नामक व्यापारी ने गान्धीजी में कहा कि अपने साथ की इन स्त्रियों—डाक्टर सुशीला नायर और कुमारी मनु गान्धों को आप मेरे मकान के अन्दर मेज दीजिये, क्योंकि घर की स्त्रियाँ इनसे मिलना चाहती हैं। गांधोजी ने मियाँ जान से पूछा कि क्या मैं भी इन लोगों के साथ अन्दर जा सकता हूँ। इस पर मियाँ जान कुछ देर तक सोचता रहा। गान्धीजी ने मुस्करा कर कहा—क्या यह मजहब के खिलाफ होगा। पर वह फिर भी कुछ सोचता रहा और फिर खुशी से गान्धोजी को अन्दर ले गया। गान्धीजी हँसते हुण अन्दर गये।

भटियालपुर के मुसलमानों ने गान्धीजी के आराम का बहुत ख्याल रखा। गांधीजी के प्राइवेट सेकेटरी श्री प्यारेलाल इस गाँव में पिछले दो महोने से रह रहे थे श्रीर यहाँ सेवा कार्य करते थे। भटियालपुर की स्थित के बारे में जो विवरण गांधी को दिया गया, उससे विदित हुआ कि इस गाँव में उपद्रव के पहिले हिन्दु श्रों की संख्या लगभग ३०० श्रोर मुसलमानों की १७६२ थी। यहाँ के सब हिन्दू मुसलमान बनाये गये श्रीर ७०० रू० उनसे मुस्लम लीग के लिये चन्दा लिया गया।

भटियालपुर में गांघीजी को ऋलीगढ़ यूनीवर्सिटी मुस्लिम

लीग के सहायक मन्त्री का पत्र मिला, जिसमें उन्होंने गांधीजी को लिम्बा कि पूर्वी बङ्गाल में आप जो काम कर रहे हैं, उससे मैं वहुत प्रभावित हुआ हूँ और अगर आप इजाजत दें, तो मैं भी आपके साथ रहकर काम करूँ। गांधीजान उन्हें यह उत्तर लिखा कि बड़ी अच्छी बात है, आप जरूर आवें, मगर उसके लिये बङ्गाल के प्रधान मन्त्री मिट मुहरावर्दी से इजाजत ले लें।

## मुस्लिम स्त्रियों को नसीहत

भटियालपुर मे गान्धीजी ने एक मन्दिर में राधाकृष्ण की मृर्ति फिर से स्थापित की। पिछले उपद्रवों में इस मदिर पर श्रातनाइयों ने श्राक्रमण कर इसे छुटा था श्रीर राधाकृष्ण की मूर्ति उठा ले गये थे। पिछले तीन महीन के अनद्र आज प्रथम बार गाँव में शंख ऋौर घाड़ियाली की ध्वनि सुनायी दी। गांधीजी जब मंदिर से बाहर आये, तो गाँवों के प्रमुख और वृद्ध मुसलमानों ने गांधीजी के पास आकर यह आश्वासन दिया कि इस मंदिर ऋौर मूर्ति को रचा की जिम्मेदारी हम लोग अपने ऊपर लेते है और साथ ही यह प्रयत्न भी करेंगे कि यहाँ पहिले जो भाई-चारे की भावना हिन्दू मुसल्मानों मे थी, बह फिर कायम हो जाय और सभी को अपने-अपने मजहब पर चलने की आजादी रहे। सन्ध्या समय जब गान्धीजी टहलने के लिये निकले, तब भी गाँव के मुस्लिम युवक श्राप से मिले श्रीर यह इतमीनान दिलाया कि पिछले श्रक्टूबर में जो कुछ हुआ था, उसकी पुनरावृत्ति अब न होगी। युवकों न गांधीजी

को नोश्रास्ताली श्राने के लिये धन्यवाद भी दिया श्रीर उसके लिये कृतझता प्रकट की। गांधीजी ने कहा कि श्रागर श्राप लोग ये शब्द दिल से कहते हैं श्रीर यह महज जबानी नहीं है, तो इसका श्रसर सिर्फ हिन्दुस्तान में ही सीमित नहीं रहेगा बल्कि सारी दुनिया पर फैलेगा।

प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए गान्धीजी ने फिर यह बात दुइरायी कि जब तक पूर्वी बङ्गाल के हिन्दू और मुसलमान एकता के साथ नहीं रहने लगेंगे और जब यहाँ के अल्पसंख्यक हिन्दु ओं को अपने विश्वास के अनुसार अपने मजहब पर चलने की आजादी नहीं मिलेगी, तब तक मैं पूर्वी बङ्गाल से नहीं हरूँगा। आपने इस बात पर भी फिर जोर दिया कि में नहीं चाहता की मेरे दौरे में मेरी हिफाजत के लिये पुलिस और फौजी सिपाही मेरे साथ रहें। बङ्गाल के प्रधान मन्त्री मिल सुहरावदी ने मेरी यह बात नहीं मंजूर की है कि वे पुलिस और फौजी सिपाही मेरे साथ से हटा लें। पर अगर यहाँ क मुसलमान मि० सुहरावदी को लिखें कि वे शान्ति स्थापन रखेंगे और मेरी हिफाजत खुद करेंगे, तं। मेरो यह बात जोरदार हो जायगी कि पुलिस और फौजी लोग मेरे साथ से हटा लिये जायें।

गान्धीजो ने आज चार मुसलमानों के घर जाने की अपनी बात का उल्लेख किया और कहा कि अगर मुस्लिम स्त्रियाँ मुफले नहीं डरतीं, तो उनके मर्द लोग क्यों मुफसे डरें। इस सम्बन्ध में गान्धीजी ने एक बार अली-बन्धुओं के समय का जिक्र किया। आपने कहा कि उन दिनों मुस्लिम स्त्रियों की एक सभा में मौ॰ मोहम्मद अली और मौ॰ शौकत अली अपनी आँखों पर पट्टी बाँधकर बोले थे, मगर मुक्ते बिना पट्टी बांधे बोलने की इजाजत दी गयी थी।

गान्धी जी ने मुस्लिम स्त्रियों से परदा त्याग देने ऋौर अपने अन्दर शिक्ता का प्रचार करने को कहा। आपने कहा कि असली परदा शरीर का नहीं मन का है। अगर आप लोगों के दिमाग का अन्धकार दूर नहीं होता तो बाहरी परदे से कुछ नहीं हो सकता।

गान्धीर्जा ने मजहबी नमीहत भी दी। श्रापने कहा कि राम श्रोर खुदा एक ही है। सिर्फ वे श्रलग-श्रलग नामों में पुकारे जाते है। श्रापने कहा कि हिन्दुश्रों को भी यह समफना चाहिये खुदा श्रोर राम एक हैं। श्रापने कहा कि मैंने सुना है कि बहुत मुसलमान इस डर से श्रपने घरों से भागे हैं कि उन्हें संज्ञा मिलेगा। मगर सच्चे मुसलमान को तो गुनाह से डरना चाहिये सजा से नहीं जो कि उस गुनाह के लिये मिले। श्रापने कहा कि इस्लाम बड़ा ऊँचा मजहब है, जिसमें श्रादमी श्रोर श्रादमी में कोई फर्क नहीं माना जाता। किर ऐसी हालत में इस्लाम को मानने वाले मुसलमान दूसरे मजहब पर चलने वाले श्रादमियों को क्यों सतावें श्रीर उन्हें श्रपने मजहब पर चलने वाले श्रादमियों को क्यों सतावें श्रीर उन्हें श्रपने मजहब पर चलने वाले श्रादमियों को क्यों सतावें श्रीर उन्हें श्रपने मजहब पर चलने दें।

# नरायनपुर

### [१४ जनवरी]

गान्धीजी भटियालपुर से ऋाज नरायनपुर गये। चलते से पहिले ऋाप उस मन्दिर में गये, जिसमें कल राधाक्रष्ण की मूर्ति की पुनर्स्थापना ऋापने की थी।

नरायनपुर में भी उपद्रव के दिनों में बड़ा बिनाश हुआ था। कितने ही मकान तो बिल्कुल धराशायी हो गये। गान्धोजी ने भी मार्ग में दो पूर्णतया विध्वस्त मकानों को देखा और देखकर स्तब्ध रह गये। आप सूर्योदय से पहिले ही नरायनपुर के लिये चले थे, जब कि कुहरा पड़ रहा था। रास्ता भी बड़ा की चड़दार तथा फिसलाहट का था। नंगे-पैरों बड़ी कठिनाई से गान्धीजी ने मार्ग तय किया। नरायनपुर में आप बादशाह मियाँ अमीन के मकान पर ठहरे।

रास्ते में पड़ने वाले शिवरामपुर और करोइतखाली नामक दां गाँवों में कुछ देर गांधीजी रुके। करोइतखाली में एक मुस्लिम लीगी मुंशी दोरावश्रली पंडित के मकान पर भी श्राप कुछ देर ठहरे। डा॰ सुशीलान।यर श्रीर कुमारी मनु गांधी मुंशी दोरावश्रली के मकान के श्रन्दर गर्यी श्रीर घर की स्तियों से कुछ देर बातें कीं। गाँव के मकतब में भी गांधीजी थोड़ी देर के लिये रुके, जहाँ छोटे लड़के श्रीर लड़कियाँ पढ़रहे थे मकतव के मुंशी से आपने पूछा कि लड़के क्या पढ़ रहे हैं। दो छोटी लड़कियों को आपने माला पहिनायी।

नरायनपुर में आधे दिसम्बर तक लूट-पाट होती रही जब कि शरणार्थी लोग लोटने लगे थे। लूटे गये मकानों में एक मकान एक म्कूल के हेड मास्टर का भी था। नरायनपुर के दिये गये विवरण से गांधीजी को मालूम हुआ कि नरायनपुर, शिवराम-पुर तथा धरमपुर इन तीनों गाँवों को मिलाकर ३,७२० आद-मियों की अबादी है, जिनमें २,४०० मुसलमान थे और १,२२० हिन्दू। उपद्रव के बाद केवल १२४ हिन्दू इन गाँवों में रह रहे थे और १७४ बाद में वापस लौटकर आये। यहाँ २२ मकान, २ दवाखाने तथा २ दूकानें जलाई गई थी। पाँच आदमी मार डाले गये थे, जिनमें एक जमीदार भी थे। यहाँ चलने वाले १४४ करचे बिल्कुल नष्ट कर दिये गये थे।

. नरायनपुर की प्रार्थना सभा बादशाह मियाँ के मकान पर हुई, जहाँ गान्धीजी ठहरे थे। श्रापने इस सभा में भाषण करते हुए मुसलमानों के बीच में श्रपने रहने पर सन्तोष प्रकट किया, परन्तु कहा कि मैं मुस्लिम स्नियों से भी मिलना चाहता हूँ, मगर वे मेरे सामने नहीं श्रातीं। सबसे श्राश्चर्य की बात तो यह है कि मुस्लिम स्नियाँ कुमारी मनु गांधी से भी डरती हैं। इतनी छोटी लड़को से डरने को क्या बात है।

श्रापने कहा कि हिन्दुस्तान की खियों श्रौर खास कर मुस्लिम खियों में बड़ा श्रज्ञान है श्रौर शिज्ञा की बेहद कमी है। इसलिये उनकी शिज्ञा का प्रबन्ध होना बड़ा जरूरी है। हिन्दू क्रियों का कर्तव्य है कि वे अपनी मुस्लिम बहिनों में शिचा का प्रचार करें और इस मामले में उनकी सहायता करें। गान्धीजी ने मुस्लिम क्रियों को परदा त्याग करने की सलाह दी।

गांधीजी ने गिरे हुए मकानों को फिर से बनान के मामले में सरकारी सहायता के सम्बन्ध में अतिरिक्त जिला मैजिस्ट्रेट मि॰ जमन से बातें की । मि॰ जमन ने कहा कि सरकारी सहायता कम है, जिसे बढ़ाने के लिये मैंने सरकार को लिखा है और कर्ज देने को भी कहा है । मैं हर घर के लोगों को वर्तन और अन्य चीजें खरीदने के लिये भी कर्ज देने की सिकारिश सरकार से की है।

# रामदेवपुर

### [१६ जनवरी]

श्राज प्रातःकाल महात्मा गांधी ने नरायनपुर के श्रपने मुम्लिम मेजबान में बिदा ली और रामदेवपुर के लिये रवाना हुए। वादशाह मियाँ और गाँव के कुछ श्रन्य मुसलमानों ने गान्धीजों के प्रति बड़ी कृतज्ञता प्रकट की कि श्रापन उनकी मेहमानदारी स्वीकार की। गांधीजी जब चलने लगे, तो सब मुसलमानों ने श्राप से 'नमस्ते' कहा जिसके जवाब में गान्धीजी ने 'सलाम' कहा। तीन मील पैदल चलकर श्राप एक घएटे से कुछ श्रधिक समय में रामदेवपुर पहुँचे।

. रास्ते में गांधीजी कुछ मिनट कवहरी बाड़ी में कके, जो एक जमींदार की थी और जहाँ उपद्रश के दिनों में कुछ घटनाएँ घटी थीं। कचहरी के नायब मुसलमान ने गांधोजी का स्वागत किया और कुछ फल भेट किये। गान्धीजी ने कहा—'मुफे तो केवल आपका प्रेम चाहिये और कुछ नहीं चाहिये। रास्ते में गान्धीजी खालिसपुर में एक हिन्दू के मकान पर भी रुके। वहाँ गान्धीजी का चरण धाया गया और क्रियों ने आरती उतारीं।

मार्ग में गांधीजी को कई पुल पार करने पड़े, जो ऋापकी सुविधा के लिये बनाये गये थे। रास्ते के घरों के निवासी लोग निकल कर आपके स्वागत के लिये खड़े थे और जब आप उनके दरवाजों पर होकर गुजरे, तो सबने जय-ध्विन की । कुछ जगह मुसलमानों की भी भीड़ खड़ी थी । ये लोग दूसरे गाँवों के थे. जो गांधीजी के रास्ते में नहीं पड़ते थे । बहुत आदमी इनमें में गांधीजी के साथ हो लिये और शेप लोग आपका अभिवादन कर वापस चले गये।

यहाँ के बाद गांधोजी कुछ तेजी से चले और थोड़ी देर में रामदेवपुर पहुँच गये। गाँव में बहुत से लोग एकत्र होकर फाँक और करताल सहित कीर्तन कर रहे थे, जो उपद्रवों के बाद आज प्रथम बार गाँव में सुनायी दिया था। यहाँ गांधीजी श्री रमर्ण मोहननाथ नामक सज्जन के घर में ठहरे।

रामदेवपुर पहुँचने पर गांधीजी के चरण धोये गये झांर श्रारती उतारी गयी। ब्रामीण लड़िकयों और लड़कों ने श्रापको प्राम्य-नृत्य दिखाये, जो श्री कनु गांधी और श्री विश्वरञ्जन मेन द्वारा तैयार किये गये थे। श्री कनु गांधी ने रामदेवपुर को श्रपन कार्यों का केन्द्र बनाया था और यहाँ एक कैम्प भी स्थापित किया था।

रामदेवपुर की प्रार्थना-सभा बड़ी महत्वपूर्ण थी, जिसमें भाषण करते हुए गांधीजी ने देश के सामने उपस्थित छटयन्न महत्वपूर्ण राजनीतिक समस्या पर छपना मत प्रकट किया। नरायनपुर में एक मुस्लिम सज्जन द्वारा किये गये प्रश्न का उत्तर देते हुए गांधीजी ने कहा कि छासाम, सोमा प्रान्त और पञ्जाब के सिक्खों को जो मैंने प्रान्तों के गुट में शामिल न होने छथवा शामिल होने पर यह देखते के बाद कि बहुमत दल द्वारा उनके माथ न्याय का व्यवहार नहीं होता, तो गुट में से निकल आने की सलाह दी है, वह मेरे हिन्दू मुस्लिम एकता के आदर्श के विरुद्ध नहीं पड़ती। आपने कहा कि ब्रिटिश मंत्रिदल की योजना की स्वीकार करना या न करना अपनी स्वेच्छा पर है, जिसे स्वीकार करने के लिये किमी दल की मजबूर नहीं किया जा सकता। आपने अव भा० काँग्रेस कमेटी द्वारा पाम किये गये प्रम्ताव का उल्लेख किया, जिसमें मंत्रिदल की योजना की पूर्ण्ह्रप में स्वीकार किया गया है।

श्रापनं कहा कि जो सलाह मैन श्रासाम, सीमा प्रान्त श्रीर पञ्जाब के सिक्क्वों को दी है, उसमे ऐसी कोई बात नहीं है, जो मुस्लिम लीग को विधान सम्मेलन में शामिल होने से रोके। श्रापने यह श्राशा प्रकट की कि मुस्लिम लीग विधान सम्मेलन में जायगी श्रीर वहाँ तर्क उपस्थित कर श्रपना मत स्वीकार करायेगी। श्रान्यथा कुछ प्रान्तों या दलों के विधान सम्मेलन में शामिल न होने से उनका काम नहीं रुक सकता।

श्रापन कहा कि श्रानाम को उसकी इच्छा के विरुद्ध क्यों वङ्गाल में मिलाया जाय श्रोर भीमा प्रान्त या सिक्खों की पञ्जाब श्रीर सिंध में शामिल होन के लिये मजबूर किया जाय।

दूसरा प्रश्न गांधोजी से यह किया गया था कि आप विहार क्यों नहीं जाते, जहाँ मुसलमानों का सब कुछ लुट गया है ? इस प्रश्न के उत्तर में गान्धीजी ने कहा कि बिहार में स्वयं जाने की अपेजा उससे अधिक काम वहाँ के मुसलमानों के लिये मैं यहीं से कर रहा हूँ। वहाँ के मंत्रियों को मैं अक्सर सलाह दिया करता हूँ श्रीर वे उसका पालन कर विद्यार के मुसलमानों को सब सुविधा पहुँचा रहे हैं। इसके श्रीतिरिक्त मैं वहाँ न जाकर यह दिखलाना चाहता हूँ कि बिहार मरकार मेरे बिना जाये, मुसलमानों के लिये कितना अधिक करती है, जब कि मुस्लिम लीग के श्रादमी बिहार के मुसलमानों को विद्यार वापस जाने श्रीर सरकारी महायता लेने से रोक रहे हैं श्रीर विद्यार सरकार के काम में बाधा पहुँचा रहे हैं।

तीमरा प्रश्न गान्धीजी सं यह किया गया था कि जब आप श्रिहंसा के अवतार और आधुनिक संसार के बुद्ध कहे जाते है, तो देश के विभिन्न सम्प्रदायों में होनेवाली लड़ाई और रक्त-पान क्यों नहीं रोक सकते। इसके लिये गान्धीजी ने यह उत्तर दिया कि मैं तो एक साधारण मनुष्य हूँ, जिसे केवल अपन काम का ही अनुभव है। बुद्ध या दृसरे पैगम्बर जो हो गये हैं, वे भी युद्धों को रोकने का प्रचार करते हुए चले गये। मैं जो लड़ाइयाँ नहीं रोक सका हूँ वह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मुक्तमें कोई श्रिष्ठिक बड़ी शक्ति नहीं है। परन्तु जैसा कि मैं बारम्बार कह चुका हूँ, मैं तब तक बङ्गाल नहीं छोड़ना चाहता जब तक कि दोनों सम्प्रदाय अपने कार्यों द्वारा यह न दिखा दें कि वे सगे भाई की तरह हैं और पूरी शान्ति तथा भित्रता के साथ रहते हैं।

## बूट का माल लीटाया जाय

चौथा प्रश्न यह किया गया था कि आप हिंदू और मुसल-मानों के बीच मित्रता के सम्बन्ध की आशा कैसे कर सकते हैं,

जब कि हिंदू लोग हत्या, आगजनी और लूट के अपराध के अपराधियों की गिरफ्तारी तथा उन पर मुकदमा चलाने की बात का आन्दोलन कर रहे हैं। गान्धीजी ने इस प्रश्न के उत्तर में यह म्बीकार किया कि ये शिकायतें ठीक नहीं हैं। परन्तु त्र्यापने शिकायत करने वालों के साथ सहानुभूति प्रकट की त्र्यौर यह कहा कि जब तक श्रपराधी लोग गिरफ्तारी श्रीर मुकदमे से बचते रहते हैं श्रीर नात्राखाली के मुसलमान श्रपराधियों पर यह जोर नहीं डालते कि वे ऋपने नाम बता दें यह मन-गढ़न्त दिल से निकाल देना चाहिये कि यह सब उपद्रव गुएडे लोगों का था। कोध के पागलपन में किये गये ये काम पेड़ोवर गुण्डों के काम नहीं हैं। ऐसे श्रवसर पर किये गये उत्पात सभी लोगों द्वारा किये गये हैं। मुक्ते यह देखकर खुशी होगी अगर मुस्लिम लोकमत उन ऋपराधियों का ऋदालत के सामने नहीं चिंक लोकमत की श्रदालत के सामने लाने का प्रयत्न करेगा। अपराधी लोग भी पश्चात्ताप प्रकट करें श्रीर लूट के माल वापस लौटा दें । श्रीर जिनके साथ श्रत्याचार किये हैं, उन्हें यह विश्वास दिलावें कि वे श्रव सताये नहीं जायँगे चौर खब उन्हें डरने की कोई बात नहीं है। मुस्लिम लोकमत भी इस बात की गारंटी दें कि उपद्रवी लोग किसी को सताने का साहस नहीं करेंगे। ऐसा होने पर ही हिन्दुओं से कहा जा सकता है कि वै श्रपने गाँवों को सुरच्चित से वापस चले श्रावें।

# पारकोट

#### [ १७ जनवरी ]

रामदेवपुर से गांधीजी आज सबेरे पौन घण्टे में दां मील चल कर पारकोट पहुँचे। आज जब गांधीजी रामदेवपुर से खाना हुए, तो साथ में बहुत थोड़े लोग चले थे, किन्तु आप खों-ज्यों आगे बढ़ते गये, त्यों-त्यों गाँवों के आदमी आपके माथ होते गये और पारकोट पहुँचते-पहुँचते साथ के लोगों की मंख्या ४०० से ऊपर हो गयी। गांधीजी के आगे और पीछे स्थानीय लोगों के दल थे, जो बाजों के साथ रामधुन गा रहे थे। राम्ने में मुस्लिम पुरुषों और तालावों पर स्त्रियों के दल भी गांधीज़ी के दर्शन के लिये खड़े थे। गांधीजी के पीछे चलने वाले अनेक हिन्दू यह कह रहे थे कि शान्ति चाहे स्थापित हो या न हो, गांधीजी के आने से समस्त नोआखाली तीर्थ बन गया है और वे अपनी कष्ट कथाएँ वर्तमान युग के सर्वश्रेष्ठ आदमी को सुना मके हैं।

पारकोट जाते समय गांधीजी दासघरिया गाँव से होकर गुजरे और वहाँ के अपने पूर्णतया ध्वस्त तथा जलाये हुए मकानों को देखा। रास्ते में आपको कई लम्बे और तङ्ग पुल पार करने पड़े। सङ्क के प्रत्येक घुमाव पर तिरंगे भएडे और फूल-पत्तियों से सजे फाटक बनाये गये थे। कई फाटकों पर 'बापूजी स्वागतम्' लिखा था। १११ पारकोट

पारकोट में गांधीजी श्री चन्द्रकुमार सील के मकान पर ठहरे । वहाँ घर की स्त्रियों ने त्र्यारती उतार कर त्र्यापका स्वागत किया।

श्राज गांधीजी ने पारकोट से एक मील दूर जमीरटोली गाँव में प्रार्थना की। सभा धान के खेत में हुई। श्रनेक मुसलमान खेत की मड़ों पर खड़े देख रहे थे। गांधीजी ने उन मुसलमानों को सभा में श्राने के लिये बुलाया। वे भी श्राकर वैठ गये श्रांर प्रार्थना तथा गांधीजी का भाषण सुना। प्रार्थना के बाद गान्धीजी पास के एक गाँव में दो हिन्दु श्रों के घर गये। इनमें से एक घर के लोगों ने श्रापसे मूर्ति स्थापित करने की प्रार्थना की। श्रापने कहा कि सच्चे हृदय से ईश्वर का नाम लेना मूर्ति स्थापित करने की श्रपेत्ता श्राधक महत्व रखता है। इसके बाद गान्धीजी एक दूसरे गाँव में एक मुसलमान के घर गये। श्राज की सभा में श्रीर गान्धीजी के साथ गाँवों के भ्रमण में कर्नल निरंजन सिंह गिल भी थे।

पारकोट के प्राम सेवा-सङ्घ के स्वयंसेवकों की सभा में भी गान्धीजी ने भाषण किया। यहाँ श्रापने कहा कि तलवार का जवाब तलवार से भी दिया जा सकता है, पर उससे कोई लाभ नहीं होंता। इसके विपरीत श्राहंसा बहुत काम करती है। श्राप लोग श्राहंसात्मक बनिये श्रीर किसी से डिरिये नहीं। यदि श्राप सब लोग श्रपने दिलों से भय निकाल दें, तो श्राप लोग ४२ स्वयं-सेवक ४२ ० के बराबर हो जायँ।

यह उपदेश देने के बाद गान्धीजी ने स्वयंसेवकों से पूछा कि

श्राप लोगों के दिलों से भय निकला या नहीं। इस पर उनमें से एक स्वयंसेवक ने कहा कि श्रव हमें कोई भय नहीं गहा। गांधीजी ने कहा कि स्वयंसेवकों को कोई भय नहीं होना चाहिये, चाहे वे श्रकेल भी रहें। चाहे कुछ भी हो श्राप लोगों को कभी श्रपना सिर नहीं फ़ुकाना चाहिये श्रीर भय नथा बेडजानी नहीं बद्दीश्त करनी चाहिये। श्राप लोग ऐसा काम करें जिससे प्रामीणों को लाभ हो। श्रापको मुसलमानों से भी मिलना-जुलता चाहिये श्रीर उनसे भाई तथा मित्र का-सा व्यवहार करना चाहिये। लाठी का जवाब लाठी से नहीं देना चाहिये, क्योंकि लाठी की सहायता से किसी पर विजय नहीं प्राप्त की जा सकती बिक प्रेम से वह प्राप्त हो सकती है।

म्वयंसेवक लोग जश्च चलने लगे, तो उन्होंन महात्माजी से आशीर्वाद माँगा। महात्माजी ने कहा—आप लोगों को मेग आशीर्वाद प्राप्त है, पर वह तभी जब आप लोग मेरी सलाह पर चले।

### स्त्रियों की सभा में भाषण

गांधीजी ने पारकोट में भी स्तियों की अलग एक सभा में भाषण किया। आपने कहा कि नोआखाली में जो कुछ हुआ है, वह ईश्वर का आप है और वह भी केवल बङ्गाल के लिये नहीं बल्कि सारे देश के लिये। अतः हम लोगों को अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिये और ऐसी बात नहीं करनी चाहिये, जिससे किसी का दिल दुखे। हिन्दू स्त्रियों को चाहिये कि वे

११३ पारकोट

जात-पाँत का भेद-भाव न करें त्रीर सब के साथ बराबरी का व्यवहार करें, सभी जाति की स्त्रियों से समान रूप से मिलना चाहिये। मुस्लिम स्त्रियों से भी मिलना चाहिये। यदि हिन्दू स्त्रियों का मुस्लिम स्त्रियों से मेल-जोल होता, तो नोत्राखाली में जो घटनाएँ हुई हैं, बहुत कुछ न होती।

त्र्यापने स्त्रियों को यह भी मलाह दी कि वे अपना समय ज्यर्थ न खोया करें। जब उन्हें घर के काम से फुर्सत मिले, नो वे चरखा चलावें, अपने गाँव की श्रीर अपने नालाबों की सफाई करें।

गांधीजी के साथ सिक्ख वालंटियरों का एक दल उसी ममय से रहता था, जब से आपने यात्रा शुरू की थी परन्तु पारकोट में वह दल तोड़ दिया गया और आजाद हिंद फौज के सरदार जीवन सिंह अकेले गांधीजी के साथ रह गये। शेष सिक्ख वालंटियरों को कर्नल निरंजन सिंह गिल ने नोआखाली के गाँवों में शानित स्थापना कार्य के लिये भेज दिया। सरदार निरंजन सिंह ने पञ्जाब से ६६ सिक्ख स्वयंसेवकों का एक दल पूर्वी बङ्गाल में काम करन के लिये भेजा था, जिनमें से एक दर्जन स्वयंसेवक गांधीजी के साथ रहा करते थे।

पिछले २१ दिनों से अनशन करने वाली अनतुस सलाम की दशा का समाचार गांधीजी को पाग्कोट में पहुँचाया गया। डा० सुशीला नायर ने सिरोंधी गाँव में जाकर अमतुस सलाम की दशा की जाँच की और उसे संतोपजनक पाया। गांधीजी को अमतुस सलाम के भाई का एक तार बम्बई से मिला था, जिसमें उन्होंने

१५

श्रपनी बहिन की दशा के संबंध में गांधीजी में पृद्धा था। गांधीजी ने उत्तर दिया कि उनकी दशा मंतोषजनक है, मैं उनकी पूरी जानकारी रखता हूँ श्रौर श्रापको चिन्तित होने की कोई बात नहीं है।

डा० सुशीला नायर ने गान्धीजी को एक पत्र श्रमनुम मलाम की दशा के सम्बंध में लिखते हुए यह भी सूचिन किया है कि सिरोधी के मुस्लिम निवासियों पर श्रमनुस सलाम के अनशन का बहुत बड़ा श्रसर पड़ा है और वे पूरा प्रयन्न कर रहे है कि हिंदुओं की चुराई गयी पूजा की तलवार को शीघ ही लाकर दे दी जाय और श्रमनुम मलाम का श्रनशन जल्द में जल्द समाप्त हो।

# बादलकोट

### [ १८ जनवरी ]

महात्माजी ने ऋपने गाँव-गाँव के दौरे के १२ वें दिन में ऋगज प्रात:काल ⊏ बजकर २० मिनट पर बादलकोट नामक गाँव में प्रवेश किया। यह गाँव पारकोट के उत्तर पूर्व में दों मील पर है।

वादलकोट के मार्ग में एसोसिएटेड प्रेस का सम्बाददाता भी साथ मे था। गांधीजी ने सम्बाददाता से बातें करते हुए कहा—'यदि मेरा यहाँ का मिशन असफल भी हुआ, तो इसका अर्थ यह नहीं होगा कि अहिन्सा ही असफल हो गयी। यह तो मेरी अहिन्सा की असफलता होगा, क्योंकि मै तो यहाँ अपनी अहिन्सा की पर चा ले रहा हूँ।'

नात्राखाली के इस हिम्से में इन दिनों भयानक सरदी पड़ रही थी। गांधीजी ऋाज की यात्रा में पहिले २० मिनट तक भीरे-धीरे चलते रहे क्योंकि ऋाप इस घार सरदी का ऋनुभव कर रहे थे। परन्तु कुछ देर तक चलने के बाद ऋापने पग बढ़ा दिया ऋौर वही ऋपनी रोज की रफ्तार से चलने लगे। ४४ भिनट में ऋापने दो मील को यात्रा समाप्त कर ली।

मार्ग में गीशनपुर श्रौर रामदेवपुर नामक दो गाँव पड़े, जिनमें सवर्ण हिन्दू रहते हैं। रामदेवपुर गाँव में गांबीजी श्रीलिमउद्दीन नामक एक मुस्लिम सज्जन के मकान परगये। यहाँ पहुँचने पर और गाँव का नाम मालूम होने पर गांधीजी को आश्चर्य हुआ आपने कहा कि अभी तो एक गाँव इस नाम का पीछे मिल चुका है। रामरेवपुर को जाने वाली सड़क का एक फर्लाङ्ग का हिस्सा अच्छा नहीं था, जिसे गांधीजी के आगम से चलने के ख्याल से वहाँ के मुसलमानों ने पिछले दिन बना दिया था। इस सम्बंध में स्थानीय मुस्लिम नेता ने आकर गांधीजी से कहा कि यह सड़क वहुत खराब थी, पर यहाँ के मुसलमानों ने इस ख्याल से उसे दुक्स कर दिया कि आपको चलने में तकलीफ न हो। इस पर गांधीजी ने कहा कि आप लोगों ने बड़ी मेहरबानी की। खुदा आपका भला करे। सड़क पर बुछ बुजुर्ग मुसलमान खड़े थे, जिनसे गांधीजी ने दुआ सलाम की और बुछ बात-चीत भी की।

इस यात्रा में गांधीजी बंगला बोली सीखने का बराबर प्रयत्न करते रहे ज्योर जब कोई नया शब्द सुनाई देता था, उमे सीख लेते थे।

बादलकोट में गांधीजी एक डाक्टर के यहाँ ठहरे। पिछले उपद्रव में इन डाक्टर को भी चृति उठानी पड़ी थी।

### मि॰ जिन्ना के उपदेश का उल्लेख

गांधीजी ने बादलकोट की प्रार्थना-सभा में भाषण करते हुए मुसलमानों से कहा कि यदि पाकिस्तान की स्थापना उत्तम श्राचरण श्रौर उच्च श्रादशौँ पर की जाय, तो प्रत्येक व्यक्ति उसका स्वागत करेगा। श्रापने मि० जिन्ना के श्रमी हाल में कराची में दिये गये भाषण का उल्लेख किया और उसका वह हिम्सा सुनाया जिसमें मि० जिन्ना ने यह कहा था कि—'मुसल-मानों को अपने अन्दर भारी जिम्मेदारी और न्याय की भावना उत्पन्न करनी चाहिये और अन्याय की बात नहीं करनी चाहिये। अगर अपनी अन्तरात्मा से पूजने पर कोई बात बुरी माल्म हो तो उसे नहीं करना चाहिये। अगर मुसलमान लोग मेरी इस सलाह पर चले, तो उन्हें पाकिस्तान लेने से कोई रोक नहीं सकता।'

गांधीजी ने कहा कि चूँकि इसमें कोई बल प्रयोग की बात नहीं है श्रीर चूंकि पाकिस्तान उच्च श्रादशों पर स्थापित किया जायगा, तो प्रत्येक मनुष्य ऐसे राज्य का स्वागत करेगा चाहे उसे जिस नाम से पुकारा जाय। श्रापने कहा कि लूट, श्रागजनी, जबरदस्ती, धर्म-परिवर्तन का कोई भी समम्मदार श्रादमी समर्थन नहीं करेगा।

गांधीजी ने कहा कि मि॰ जिन्ना ने यह भाषण कराची में लड़िक्यों का एक स्कूल खोले जाने के अवसर पर दिया था, जिसका उद्घाटन मि॰ जिन्ना की बहन मिस फातमा जिन्ना ने किया था। उस भाषण में मि॰ जिन्ना ने सिन्ध के शिच्ना मंत्री से कहा था कि वे अविद्या दूर करने के लिये कमर कस कर कोशिश करें और किसी मुस्लिम लड़के लड़की को बिना पढ़ा या बिना पढ़ी न रहने दें। गांधीजी ने कहा कि अगर सब लोग पढ़ लिखकर सममदार हो जायँ तो मुल्क में अमन हो जाय और सभी लोग एकता से रहने लगें। गांधीजी ने कहा पर साथ ही यह भी है कि सिर्फ पढ़ लिख लेने से ही कोई आदमी सममदार

नहीं हो जाता, क्योंकि ऐसे लोगों की कमी नहीं है जिन्होंने बहुत किताबें पढ़ी हैं ऋोर इम्तहान पास किये है। ऋसली शिचा ऋोर पढ़ना तो वह है, जिससे लोग काम लें ऋोर जीवन की ऋसली शिचा ग्रहण करें।

गांधीजी ने आगे कहा कि पुरुष और स्त्री समाज के दो अङ्ग है और अगर एक अङ्ग लुख-पुख है, तो सारे शरीर को उससं हानि उठानी पड़ती है। इसलिये अगर पुरुष लोग पढ़ लेते है और स्त्रियाँ नहीं पढ़ती तो उससे समाज का हित नहीं हो सकता। इसलिये यह बदिकस्मती ही है कि हमारी बहिने अविद्या और अधिकार में पड़ी रह जायं। हिन्दू स्त्रियों तो यहाँ प्रार्थना में ज्यादा तादाद में आती है, तो मुस्लिम स्त्रियाँ और स्त्रियों न सही, तो मुस्लिम लड़कियाँ ही क्यों प्रार्थना में न आवें? इसलिये हिन्दू स्त्रियों का यह फर्ज है कि वे अपनी मुस्लिम स्त्रियों के पाम नितानत सेवा की भावना से जायं और उन्हें शिचित बनावें।

इसके बाद पुरुषों को सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा कि उन्हें मि० जिन्ना की सलाह याद रखनी चाहिये और उस पर अमल करना चाहिये, क्योंकि वह सलाह किसी खास सम्मदाय के लिये नहीं है। उसका महत्व सार्वभौतिक, सभी के लिये है। जो सलाह मि० जिन्ना ने लोगों को अपने अन्दर लाने की दी है, वह लड़ाई लड़ने की नहीं है, बिल्क न्याय और सत्य की है और उसका यह अथ है कि जब कभी न्याय न होता हो, उसके लिये खतरा हो, तो लोगों को चाहिये कि वे जंगलीपन के तरीके अखत्यार न कर सममदारी और तर्क सं काम लें और उसी ख्याल से अपने भगड़े तय कर लें, चाहं वह किसी एक खास आदमी का हो और चाहे सार्वजनिक हो।

गाधीजी ने ऋपने भाषण के श्रन्त में कहा कि श्रभी प्रार्थना में श्राने से पहिले मेरे पास वह मुसलमान मज्जन श्राये, जिनके मकान पर राम्ते में मैं क्का था। उन्होंने मुक्तसे कहा था कि मि० जिल्ला से श्रोर श्राप में समभौता हो जाय, तो मुल्क में सब सुलह हो जाय। गांधीजी ने कहा कि मैं श्रपने को कोई बड़ा श्रादमी नहीं समभता। मैं मि० जिल्ला के पाम कई बार गया, पर कोई नतीजा नहीं निकला, जैसा कि सब लोग जानते हैं। श्रमित्यं श्रमल बात यह है कि नेता तो जनता ही बनाती हैं। इसि विश्रमल बात यह है कि नेता तो जनता ही बनाती हैं। इसि विश्रमल बात यह है कि नेता तो जनता ही बनाती हैं। इसि विश्रमल बात यह है कि नेता तो जनता ही बनाती हैं। इसि विश्रमल बात यह है कि नेता तो जनता ही बनाती हैं। इसि विश्रमत हिन्दु श्रों श्रोर मुसलमानों दोनों को मेरी यह मलाह है कि वे श्रमने रोज के भगड़े तय करने के लिये मुस्लिम लीग, कांग्रेम या हिन्दू सभा के पाम न जायँ श्रीर श्रापस में ही तय कर लें। श्रमर श्रमर श्रमर श्रमें को भगड़े वे श्रापस में ही तय कर लें। सी समभ जायँगे श्रीर वे उनकी वातों में दखल न देंगे।

## इजारा की घटना पर नेहरूजी का तार

सीमा प्रान्त के हजारा जिले में मुसलमानों द्वारा उपद्रव होनं का समाचार गांधीजी का १३ जनवरी को भिला था। यह समा-चार सुनकर फीरन एक तार पंडित जवाहरलाल नेहरू के पास भेजा। उस तार का जवाब जो नेहरूजी ने भेजा था, वह बादल-कोट में गांधीजी को मिला। तार नेहरूजी खीर सरदार पटेल दोनों नेताखों की खोर से था, जो इस प्रकार था—'हजारा जिले में कितनी ही भीषण घटनाएँ घटी हैं। सीमा प्रान्तीय सरकार ने उपद्रवियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की है और सरकार शरणार्थियों की सहायता भी कर रही है। वहाँ की परिस्थिति श्रव शान्त है।

गांधीजी को नेहरूजी और सरदार पटेल का यह तार पाकर बड़ा सन्तोष हुआ।

# स्वयं मुसलमानों ने लूट का माल वापस दिलाया

बादलकोट में मोहम्मद आमफ भूपाँ ने एक सम्बाददाता से बातें करते हुए कहा कि मुसलमानों का फर्ज है कि वे महात्मा गांधों के शान्ति और सुलह के प्रयत्न को सफल बनावें। जो कुछ हुआ है, वह सब हमें भूल जाना चाहिये।

उन मुस्लिम सज्जन ने यह भी कहा कि मुफे श्रौर गाँव के दूसरे मुसलमानों ने यह बचन दिया है कि श्रल्प संख्यक हिन्दुश्रों के जान-माल की हिकाजत की जाय। हिन्दुश्रों के छूटे गये माल हम लोगों ने कई जगहों से ढूंढ कर निकाला है, गहरे ताला वों श्रौर पंखरों से भी माल निकाला गया है श्रौर हिन्दुश्रों को वापस किया गया है।

मोहम्मद आसफ भूपाँ ने गांधीजी को आपने घर भी निमंत्रित किया था। गांधीजी के स्वागत में उन्होंने अपना मकान खूब सजाया था। महात्माजी वहाँ एक ऊँचे चबूतरे पर बैठाये गये थे। जिसे मुसलमानों ने बनाया था।

बादलकोट में गाधीजी से निलने वाले प्रमुख व्यक्तियों में डा० ऋमिय चक्रवर्ती, डा० एन० के० सरकार तथा त्रिपुरा की श्रीमती निरुपमा देवी थीं।

# **ऋटखोरा**

### [ १९ जनवरी ]

महात्मा गांधी श्रपनी गाँव-गाँव यात्रा के १४ वें गाँव अटखोरा में त्राज प्रातःकाल = बजकर ४० मिनट पर पहुँचे। त्राप बादलकोट से सबेरे साढ़े सात बजे चले त्रीर ७० मिनट में ढाई मील का रास्ता तय किया।

रास्ते में गांधीजी एक मकत्व के पास रुके। मकतव में छोटी-छोटी मुस्लिम लड़िकयाँ कुरान पढ़ रही थीं। गांधीजी न लड़िकयों का पढ़ना दिलचस्पी के साथ सुना। आप वृहाँ करीब १० मिनट तक रहे।

बादलकोट में नो श्रांखाली के सुपरिनटेंडेंट पु्रुलिस मिल् अब्दुल्ला श्राज सबेरे गांधीजी के पास श्राये श्रीर श्रटखोरा तक श्रापके साथ गये। श्रटखोरा में गांधीजी ठाकुरबाड़ी में ठहरे श्रीर श्री कामिनी शर्मा के मेहमान रहे।

श्रद्योरा से सिरोंधी नामक गाँव केवल तीन मील की दूरी पर है, जहाँ गांधोजी की मुक्लिम शिष्या कुमारी श्रमतुस सलाम हिन्दू-मुक्लिम एकता स्थापित करने के अर्थ मुसलमान उपद्रवियों द्वारा उठा ले जायी गई एक हिन्दू की पूजा के काम में श्राने वाली तलवार वापस दिलाने के लिये अनशन कर रही हैं। श्रद्धांरा से गांधीजी सिरोंधी ही जाने का थे, इसलिये अटखोरा में गांधीजी का अधिक ध्यान अमतुम सलाम की श्रोर था श्रीर श्रिकतर चर्चा उन्हीं की थी।

श्रदखोरा की प्रार्थना-समा के भाषण में भी गांधीजी ने १६

श्रमतुस सलाम के श्रमशन का उल्लेख ज्यादातर किया श्रीर उनके श्रमशन का महत्व बताया। श्रापने कहा कि मच्चे श्रथों में श्रमतुस सलाम ही श्रसली मुसलमान हैं, जो दूसरे मजहब के लोगों का सताया जाना बरदाश्त नहीं कर सकतीं।

प्रार्थना के बाद गांधीजी अटखोरा गाँव में रहने वाले १०० वर्ष बूढ़े एक हिन्दू तथा ९० वर्ष की उसकी पत्नी से मिलने के लिये उसके मकान पर गये। इन दोनों की बड़ी उत्कंठा गांधीजी का दर्शन करने की थी, मगर अधिक अवस्था के कारण गान्धीजी के पास तक नहीं आ सकते थे। यह सुनकर गान्धीजी स्वयं उनके मकान पर गये। मकान पहुँचने पर गान्धीजी के स्वागत में आपको एक माला पहिनाने के लिये लाया गया, परन्तु उसके पहिनाये जाने से पहिले ही गान्धीजी ने उसे अपने हाथ में ले लिया और वह माला उस १०० वर्ष के वृद्ध को पहिना दी, क्योंकि वह आयु में गान्धीजी से बड़ा था।

संध्या समय टहलने के लिये निकलने पर गान्धीजी गाँव के चरखा स्कूल में गये। यहाँ गाँव के लड़के बाँम के बने हुए चरखे से सूत कात रहे थे। यह देखकर गांधीजी बहुत प्रसन्न हुए।

श्रदस्तोरा गाँव में एक घटना गांधीजी के श्राने के एक दिन पहिले घटी। गांधीजी के श्रागमन के संबंध में तैयारी करने बाले एक हिंदू को उपद्रवियों ने मारा-पीटा श्रीर कहा कि गाँव से चले जाया। इन घटना की रिपोर्ट रामगंज थाने में कर दी गई थी।

# सिरोंधी

#### [२० जनवरी]

#### अमतुस सालन का अनशन समाप्त

महात्मा गांधी हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित कराने के लिये एक नया प्रयोग करते हुए नोत्राखालों की यात्रा के लिये जी निकले हैं, उसमें उनके प्रयत्न में आज सिरोंधी पहुँचने पर अंतिम सफलता मिली, जब कि वहाँ के प्रमुख मुसलमानों ने महात्मा गांधी को एक लिखित आश्वासन दिया कि वे लोग ईमानदारी के सीथ यह प्रयत्न करेंगे कि ऐसा साधारण दशा फिर आ जाय जब कि दोनों सम्प्रदायों में एकता हो जाय और अपने-अपने विश्वास के अनुसार वे धार्मिक कृत्य कर सकें। यह आश्वासन मिलने पर गांधीजी ने बीबी अमतुस सलाम को अनशन समाप्त करने की सलाह दी और उन्होंने गान्धोजी की आहा से अनशन समाप्त करने की सलाह दी और उन्होंने गान्धोजी की आहा से अनशन समाप्त करने की सलाह दी और उन्होंने गान्धोजी की

गान्धीजी त्राज त्रदिखारा से कुछ त्रौर जल्दी सिरोंधी के लिये रवाना हुए त्रौर सबेरे सादे त्राठ बजे सिरोंधी पहुँच गये। रास्ते में देहाला, शहरपाड़ा त्रौर साकनाला नामक तीन गाँव पड़े। गांधीजी मार्ग में तीन मुसलमानों के घरों पर थोड़ी-थोड़ी देर रुके। डा॰ सुशीला नायर त्रौर श्रीमती त्रावा गांधी उन मकानों के श्रन्दर गयीं श्रौर मुस्लिम स्त्रियों से बात-चीत की। इनमें से पहिला मकान चाँद मियाँ का था, जिन्होंने गान्धीजी से प्रार्थना की थी कि सिरोंधो जाते समय मेरे मकान पर श्राने की तकलीफ कीजियेगा। यहाँ गान्धीजी का स्वागत

किया गया, मालाएँ पहिनायी गयीं और कुछ फल भेट किये गये। गांधीजी का आज मीन-दिवस था, अतः आपने एक पत्थर पर यह लिख दिया कि—'आपने मुक्ते जो निमंत्रित किया, यही बहुत है और यही मैं चाहता हूँ दूसरे हो मकान अब्दुल लतीफ पाल और फजल हककारी के थे।

नात्राखाली की यात्रा में त्राज पहिले-पहल 'वंदेमातरम्' त्रीर 'त्रल्लाहो त्रकवर' के नारे साथ-साथ लगाये गये। रामधुन भजन त्रीर स्वर्गीय महा किव टैगोर का एक गाना भी गाया जा रहा था जिसका त्राशय यह था कि 'त्रीगर तुम्हारी बात कोई न सुने, तो श्रकेले त्रापने रास्ते पर चलते जाश्री।

गान्धीजी निरोंधी पहुँचकर ठाकुरबाड़ी में ठंहरें, जहाँ एक कमरे में पड़ी हुई बीबी श्रमतुस सलाप २४ दिनों से श्रनशन कर रहा थीं। ठाकुरबाड़ी पहुँचते ही गान्धीजी उस कमरे में गये। मीन रहने के कारण गान्धीजी श्रमतुस सलाम से कुछ बोल नहीं सके। बगल में चुपके से बैठ गये श्रीर प्रेमपूर्वक उनका हाथ श्रपने हाथ में लिया तथा माथे पर हाथ फेरा।

गान्धीजी के सिरोंधी पहुँचने से एक दिन पहिले नोत्राखाली के सुपरिनटेंडेंट पुलिस वहाँ श्राये थे। स्थानीय श्रास-पास के गाँवों के प्रमुख मुसलमान श्राज दिन में वरावर श्रमतुस सलाम के पास श्राकर उन्हें देखते रहे, क्योंकि श्राज श्रमतुम सलाम की हालत नाजुक थी। एक मौलवी ने कहा—हम कभी नचहेंगे कि ऐसी खुदा-परस्त मुस्लिम बीबी का यहाँ इन्तकाल हो जाय। श्रगर ऐसा हुआ, तो यह बात हम लोगों के लिये बड़ी

शर्म की होगी। इसिलये हमें पूरी कोशिश करनी है कि आज

दो पहर के बाद तीसरे पहर लगभग २० बुजुर्ग मुसलमान जिनका आस-पास के गाँवों पर बड़ा प्रभाव था, गान्धीजी की कुटिया के आँगन में इकट्ठा हुए और गान्धीजी वहीं एक किनारे एक चारपाई पर पड़े अपने मुँह तथा शरीर पर मिट्टी का पलस्तर चढ़ाये प्राकृतिक चिकित्सा कर रहे थे। मुस्लिम नेताओं को सभा में अमतुस सलाम के अनशन समाप्त करने के उपाय पर विचार हो रहा था और उधर अमतुस सलाम को चारपाई के पास एक मौलवी कुरान का पाठ अमतुस को सुना रहे थे।

गांधोजी ने दो पहर के बाद अपना मौन अत समाप्त कर् दिया। आपने ठाकुर बाड़ी में एकत्र मुसलमानों के सामने भाषण करते हुए बहुत देर तक समभाया कि मनुष्य में धार्मिक सहिष्णुता का होना बहुत जरूरी है और उन्हें यह समभना चाहिये कि सभी मजहब के लोगों को अपने-अपने विश्वास के अनुसार पूजा और धार्मिक कृत्य करने का अधिकार है। किसी के धार्मिक कार्य में बाधा डालने का किसी को अधिकार नहीं है।

गांधीजी ने यह भी कहा कि अगर पाकिस्तान का अर्थ है मुसलमानों का शासन, तो वह तो बङ्गाल में पाकिस्तान कायम है। ऐसी हालत में तो बङ्गाल के मुसलमानों का और भी फर्ज हो जाता है कि वे यहाँ के अल्प-संख्यक लोग के हितों की रज्ञा करें और उन्हें यह सममने का अवसर न दें कि पाकिस्तान कायम होने पर उनकी बद्तर हालत होगो। अगर मुसलमान

इसी तरह का श्रच्छा व्यवहार श्रल्प-संख्यकों के साथ करें, तभी वे पाकिस्तान कायम करने को बात सोच सकते हैं।

गांधीजी के इस भाषण का ऋौर साथ ही ऋमतुस सलाम की हालत देखकर स्थानीय मुसलमानों पर बहुत प्रभाव पड़ा और उनकी खांर से मौलाना अनवर उल्ला, मि अब्दुर रशीद, मौलवी अब्दुल लतीफ, मौलवी फजलुल हककारी, मौलवी हरामत उल्ला, मौलवी अब्दुल खालिक और मौलवी अमोन उल्ला चौधरी ने गांधीजी को यह आश्वासन दिया कि वे दोनों सम्प्रदायों में शान्ति और एकता के लिये पूरी कोशिश करेंगे। इसके बाद प्रमुख मुसलमानों द्वारा एक लिखित खरीता गांधीजी के सामने पेश किया गया, जिसमें यह कसम खायी गयी कि वे इस बात की पूरी कोशिश करेंगे कि यहाँ शान्ति बनी रहे। इस खरीते पर इस्ताहर करने वाले मुसलमानों ने अपने में से अपना अध्यत्त चुना जिसके पात आवश्यकता पड़ने पर सब् मामले पेश किये जायँ।

यह लिखित प्रतिज्ञा-पत्र श्रीर श्राश्वासन मिलने के बाद महात्मा गांधी ने उसे श्रमतुस सलाम के सामने रखा श्रीर उन्हें यह सलाह दी कि वे श्रनशन समाप्त कर दें। उस समय का दृश्य बड़ा मार्मिक था। मौलवी फजलुलहक कुरान की श्रायतें पढ़ने लगे श्रीर महात्मा गांधी ने स्वयं सन्तरे का रस बाबा श्रमतुस सलाम को पिलाया। डा० सुशीला नायर ने श्रमतुस सलाम को उठाकर बैठा दिया श्रीर उन्होंने गांधीजी के हाथ से सन्तरे का रस प्रहण किया। इम श्रवसर पर गांधीजी के दल के सब लोग, समस्त स्थानीय प्रमुख मौलवी तथा अन्य मुसलमान, श्री सतीश दास गुप्ता, प्रो० निर्मल बोस आदि उपस्थित थे। जब अमतुस सलाम ने अनशन तोड़ दिया, तो महात्मा गांधी ने उपस्थित लोगों को मिठाइयाँ बाँटी।

कुमारी श्रमतुस सलाम ने इस प्रकार २४ दिन के बाद श्रपना श्रमशन तोड़ा। उन्होंने श्रपना यह श्रमशन वैसे तो पूजा की तलवारें वापस कराने के लिये किया था. मगर उनका उद्देश्य केवल तलवार दिलाना ही नहीं बल्कि संकेतरूप में मुसलमानों में यह भावना उत्पन्न करने के लिये था कि वे श्रल्पसंख्यक हिन्दुश्रों के साथ जुल्म श्रीर श्रम्याय न करें श्रीर उनकी छूटी हुई चीजें उन्हें वापस कर दें।

गान्धीजी न श्रमतुस का श्रनशन समाप्त करान में सिरोंधी का श्रपना सारा २४ घंटे का समय लगा दिया था। श्रीर उसी प्रकार स्थानीय प्रमुख मुसलमानों ने भी पूरा प्रयत्न किया था।

महात्माजी ने मुसलमानों से यह भी कहा कि श्रगर मुसल-मानों ने श्रपने वादे को पूरा नहीं किया श्रौर यहाँ फिर कोई घटना होगी, तो इस बार मैं श्रनशन कहँगा।

उठा ले जायी गयी तीन तलवारों में से दो तो स्थानीय मुसलमानों के पिरश्रम श्रोर प्रयत्न से मिल गयी है, पर तीसरी तलवार का पता नहीं लगा मगर मुसलमानों ने इस तलवार की हूँ ढ लाने का वादा किया है। तीसरी तलवार ले जाने वाले श्रादमी का बहुत पता लगाया गया, पर वह नहीं लगा श्रोर यह स्थाल है कि शायद वह तलवार स्वो गयी है।

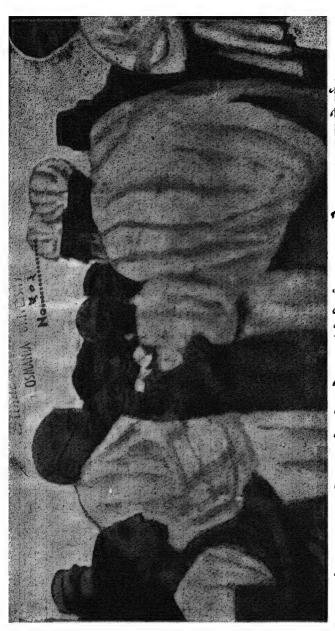
# '**केथूरी** ु [ २१ जनवरी ]

सिरोंधी में २४ घंटे,तक व्यस्त रहने और अन्त, में कुमारी श्रमतुस सल्।म का अनशन सफलतापूर्वक समाप्त कराने के बाद महात्मा गृांधी आज सबेरे साढ़े सात बजे अपने दौरे के कार्य-क्रम् के ऋगले गाँव केथूरी के लिये रवाना हुए । ३४ मिनट में ऋपनी यात्रा समाप्त कर गांधीजी सवा आठ बजे केथूरी पहुँच गये। रास्ते में श्रापको पूरव भाँडर श्रीर राजारामपुर नामक दो छोटे गाँव मिले। कई जुगह खड़ी हुई दशकों की भीड़ों ने गान्धीजी की जय-ध्वनि की । रास्ते में मौलाना ऋनवरउल्ला गान्धीजी से फिर सिले अपेर यह आरुवासन दिया कि वे लोग पूरी कोशिश करेंगे कि इस हिस्से में शान्ति और एकता बनी रहे। सिरोंधी से चल्ने के पहिले भी वहाँ के दो प्रमुख मुसलमान गान्धीजी से मिले थे ऋौर कुह्य देर तक बातें की थीं।

र्म सिरोधी में कल गान्धीजी के पास मि० महमूद हुनर नामक एक मुस्लिम सज्जन आये जो 'हरिजन सेवक' के उद्दे संस्करण में काम करते हैं। श्रृब श्राप महात्माजी के साथ उनके दौरे में रहेंगे ऋौर उद्दे में ऋाने वाली चिद्धियों का जवाब देंगे।

पहिले महीने का आधा दौरा 🙃

सिधोरी पहुँचने के बाद ग्रान्धां जी का, नोश्राखाज़ी में प्रथम मास का ऋाधा दौरा समाप्त हुऋा। ऋव गान्धीजी यह विचार



कर रहे हैं कि एक गाँव में एक दिन ठहरने का समय बहुत कम पड़ता है और इतने समय में आप एक गाँव का सब काम पूरा नहीं कर पाते। अतः अब आपका इरादा एक गाँव में दो या आवश्यक हो, तो तीन दिन भी ठहरने का है और इसी दृष्टि से आपके दौरे का नया कार्य-कम बनाया जा रहा है।

केथूरी की प्रार्थना सभा में भाषण करने हुए गान्धीजी ने कहा कि सिरोंधी के मुसलमानों ने अपनी दम्तव्यत से जो लिखिन प्रतिज्ञा-पत्र मुक्ते दिया है, अगर उसे किसी प्रकार भी भङ्ग किया गया, तो उसके कारण मुक्ते अनशन करना पड़ेगा, आपने यह भी बताया कि अमतुस सलाम ने क्यों अनशन किया था और अन्त में उसे क्यों तोड़ा।

गांधीजी ने कहा कि यह अनशन इसिलये नहीं था कि तल-वार लाकर वापस की जाय, बिलक उसके पीछे भारी उद्देश्य था। आपने कहा कि उसका वास्तिक उद्देश्य मुमलमानों का हृद्य परिवर्तन करने का था। इसके बाद गांधीजा ने मुसलमानों द्वारा दिये गये प्रतिज्ञा-पत्र का उल्लेख किया। आपने कहा कि उसमें यह सिद्धान्त रखा गया है कि हर एक आदमी को उसका मजहब उतना ही प्यारा है जितना दूसरे आदमी को उसका मजहब इसिलये सभी मजहबों का बराबर आदर किया जायगा। प्रतिज्ञा-पत्र पर हन्ताज्ञर करने वालों की इसकी कसम ली है। गांधीजी ने हस्ताज्ञर करने वालों की इसकी कसम ली है। गांधीजी ने हस्ताज्ञर कर्ताओं को यह आश्वासन दिया है कि मैं भी इस काम में आप लोगों की पूरी मदद करूँगा और इस बात की कोशिश करूँगा कि हर सम्प्रदाय को अपने उचित श्रिधकारों वा उपयोग करने की सुविधा रहे। गांधीजी ने यह भी कहा कि कोई मामला पुलिस या श्रादालत में जाने के बजाय श्राप प में ही तय कर लिया जाय श्रीर किसी के श्रिधकार श्रीर सम्मान की हत्या न हो, क्योंकि किसी दल के श्रिधकारों का श्रात्म-समर्पण करा कर किया गया समस्तीता स्थायी नहीं हो सकता।

प्रार्थना के बाद गांधीजी नित्य की भांति सन्ध्या समय टहलने के लिये निकले। आपने टहलते समय आस-पास के दो गाँचों का निरीच्या किया और यहाँ के लोगों से उनकी दशा के सम्बंध में पूछ-ताझ की। रात में आकर आपने विश्राम किया।



## पनियाला

#### [२२ जनवरी]

श्राज गान्धीजी सवा घएटे की सफर के बाद गाँवों के हरयों को देखते हुए श्रपनी नोश्राखाली की तीर्थ-यात्रा के १७ वें गाँव पनियाला ९ बजे पहुँचे। पनियाला केथूरी के पूर्व में डाई मील पर है।

पनियाला में गान्धीजी पिछले उपद्रवों में जलाये गये एक मकान के फिर से बने हिस्से में ठहरे। इस मकान के दो आद्मी उपद्रवों में मारे गये थे।

पनियाला की प्रार्थना-सभा में भाषण करते समय कुछ मुसलमानों द्वारा किये गये प्रश्नों के उत्तर दिये। आपने कहा कि बाहरी नियंत्रण से अपने की स्वतन्त्र घोषित करने वाले किसी भी राज्य में पूर्ण धार्मिक महिष्णुता उसका सौलिक मिद्धान्त रहना चाहिये।

एक प्रश्न के उत्तर में गन्धी ती ने कहा कि पिछले २४ साल में मेरा यह मत है कि यदि कोई प्रान्त या गाँव अथवा व्यक्ति तृमरों के बन्धन से मुक्त रहना चाहता है, तो वह ऐसा कर सकता है यदि वह अपने ध्येय पर हड़नापूर्वक चले। यदि वह अपने ध्येय पर हढ़ रहे, तो वह शीध्र ही वास्तविक स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकता है। आपने कहा कि मिसाल के तौर पर बङ्गाल

या किसी भी दूसरे प्रान्त को ले लीजिये। श्रमर वहाँ की जनता में एकता है श्रीर भाईचारे की भावना से सब लोग काम करते हैं, तो उसे स्वतन्त्रता से कोई रोक नहीं सकता।

पाकिस्तान के संबंध में प्रश्न किये जाते पर गान्धीजी ने कहा कि इस प्रक्रन पर मैं कराची में एक स्कूल के उद्घाटन के जमय कायदे त्राजम जिल्ला का उल्लेख करना चाहूँगा जिसमें उन्होंन कहा है कि पाकिस्तान न्याय पर आधारित होगा! गान्धीजी ने कहा कि अगर ऐसा राज्य स्थापित हो जो न्याय श्रीर सत्य पर श्राधारित हो, तो उस पर किसी की एतराज न हांगा, चाहे उमे पाकिस्तान के नाम से पुकारिये और चाहे दूसरे किसी नाम से। अगर मुसलमान लोग यह समभें कि पाकिस्तान में मिर्फ मुसलमानों को ही रहने दिया जाय, तो मैं यह कहूँगा कि यह उनका गैर-इस्लामी विचार है। इस्लाम का मौलिक सिद्धान्त लोकतंत्र है, जिसमें दूसरे मजहवां के प्रति सिंहरणु रहने को कहा गया है। अगर कोई आदमी चाहे बह हिन्दू हो, मुसलमान हो या ईसाई, दूसरे के धर्म के मीलिक सिद्धान्त का नहीं मानता तो वह त्रादमी पतित है, उसका धर्म पतित नहीं है।

दूसरा सवाल गान्धीजी से किया गया कि विहार में आपकी अहिंसा का क्या प्रभाव रहा ?

इस सवाल के जवाव में गान्धीजी ने कहा कि हालाँ कि विहार के उपद्रवां के समय मेरी ऋहिसा का कुछ सभय के लिये प्रभाव नहीं रहा, मगर उपद्रवां के बाद वह बात नहीं रही। १३३ पनियाला

उपद्रवों के बाद विहार सरकार से बराबर मेरा घनिष्ट सम्पर्क रहा श्रोर मैने यह देखा कि वहाँ जो कुछ हुश्रा था, उसके लिये उसमें बहुत गहरा पश्चात्ताप की भावना रही। बिहार सरकार ने श्रपनी जिम्मेदारी से हटने की कभी कोशिश नहीं की। वह बराबर मुक्ते बतातो रही कि मुस्लिम शरणार्थियों की सहायता के लिये वह कितना प्रयत्न कर रही है श्रौर भविष्य में भी मब तरह से ज्ञि-पूर्ति करने को तैयार है। बिहार के एक मंत्रो यहाँ नोश्राखाली में मेरे पास श्राये थे जिन्होंने बिहार सरकार की श्रोर से यह बादा किया कि शरणार्थियों को फिर से बसाने में वह पूरी सहायता करेगी श्रौर कोई कोशिश उठा नहीं रखेगी।

गान्धीजी ने कहा कि मुस्लिम लीग की त्रांर से मेरे पास बरावर चिट्ठियाँ त्रीर प्रस्ताव त्राते रहे हैं त्रीर सब मामले मेरी जानकारी में लाये जाते रहे हैं। मैने वे सब मामले विहार सरकार के पास भेजे त्रीर बिहार सरकार ने सब मामलों की जाँचकर पूरी कार्रवाई की।

तीसरा सवाल गार्धाजी से यह किया गया कि दक्कों की असली जड़ क्या है ? गान्धीजी ने कहा कि साम्प्रदायिक दंगे हिन्दुओं अोर मुसलमानों के एक फिरके के पागलपन की वजह से होते है। आपने कहा कि किसी एक दल के लड़ने से भगड़ा नहीं हो सकता अगर दूसरा दल आहिन्सात्मक रहे और ईमान-दारी के साथ काम करे।

बम्बई श्रीर दूसरी जगहों के हाल के दङ्गों का उल्लेख करते

हुए गान्धीजी ने कहा कि मैंने यह वराबर देखा है कि इन जगहों में एक दूसरे को ईट का जवाब पत्थर से देने की भावना ने काम किया है। एक दिन अगर एक मुसलमान को छुरा मारा गया, तो दूसरे दिन एक हिन्दू को छुरा मारा गया। इस तरह दोनों ओर से कार्रवाई की गयो। यही दृष्टिकीण साम्प्रदा-यिक दङ्गों की जड़ है।

गान्धोजी ने कहा कि हम सब लोग एक ही देश की संतान है ऋौर एक ही सूत्र से हमारा जन्म हुआ है। अगर हमारा एक भाई कोई बुरा काम करने को उत्तेजित करता है तो हम उसकी बातों में क्यो आएं ? अगर कोई आदमी किसी का जबरद्स्ती मजहब बदलना चाहना है या किसी खो को बेइजाती करना चाहता है, तो उसकी पाशिवक शक्ति के आगे क्यों त्र्यात्मसम्पेण कर दिया जाय ? ऐसी पाशविक शक्ति का सामनः अहिंसात्मक रूप सं करने के लिये क्यों न जान दे दी जाय ? कब तक कोई ऋक्रमणकारी हिन्सात्मक कार्य करता जायगा जब कि वह दंखिण कि ऋहित्सा का ब्रती बजाय आत्मसमर्पण करने के मौत का सामना करने पर तुला हुआ है। गान्धीजी ने कहा कि दंगे बन्द करने का ठीक उपाय बदला लेने की भावना नहीं है, केवल अहिन्मा में ही अन्याय का मुकाबिला किया जा सकता है और साम्प्रदायिक दङ्गों के पागलपन का श्रन्त हो सकता है।

## डाल्टा

#### [२३ जनवरी]

## नेताजी के कार्यों की प्रशंसा

महात्मा गान्धीजी आज पनियाला से प्रातःकाल दूसरे गाँव डाल्टा पहुँचे। आज २३ जनवरी को नेतार्जा सुभापचन्द्र बोस का जन्म-दिवस था। आज नेताजी ४१ वर्ष के हुए। लोगों में आज बड़ा उत्साह था।

गान्धीजी फसल कटे हुए खेतों के बीच होते हुए सवा घरटे में डाल्टा पहुँचे। यहाँ पहुँचकर आपने नोत्र्याखाली के गाँवों का १०० मील का दौरा समाप्त किया।

श्रव गान्धीजी टिपरा जिले की सीमा पर पहुँच गये हैं। श्रव श्रापका दौरा नोत्राखाली के ही गाँवो में दूसरी दिशा की श्रोर होगा।

डाल्टा में गान्धीजी दिलत जाति के एक व्यक्ति के मकान में ठहरे। श्रापके साथ चलन वाले पत्र-सम्वाददाता लोग एक बड़े मकान में ठहराये गये, जिसमें २५ मोपड़े थे। उपद्रव के दिनों में ये सभी भोपड़े लूट गये थे श्रीर जला दिये गये थे। इन मोपड़ों में रहने वाले लोग श्रव वापस श्रा रहे हैं श्रीर फिर से बनने वाले मोपड़ों में रह रहे हैं।

श्राज की प्रार्थना सभा में गान्धीजी ने नेताजी सुभापचन्द्र

बोस के कार्यों के सम्बंध में भाषण किया। श्रापने बताया कि नेताजी ने विदेशों में जाकर भारत की स्वाधीनता के जिये सभी सम्प्रदायों को एक भरण्डे के नीचे लाकर किस प्रकार लड़ाई लड़ी श्रीर साम्प्रदायिक एकता का कितना सुन्दर उदाहरण उपस्थित किया।

गान्धीजी ने कहा कि नेताजी के जायन से सबसे बड़ी, जो शिचा ली जा सकती है, वह यह है कि उन्होंन अपने समस्त सैनिकों में एकता की कितनी जबरद्स्त भावना उत्पन्न की कि सब लोगों ने मजहबी तथा प्रान्तीयता का मब भेद-भाव भुलाकर आजादी के सामान्य उद्देश्य के लिये एक साथ अपना खून बहाया। इस भारी काम में जैसी अद्वितीय और अभूतपूर्व सफलता नेताजी ने प्राप्त की, उससे उन्होंने इतिहास के प्रष्टों में अपने को अमर बना लिया है। आपने कहा कि नंताजी के जितने भी अनुयायी आकर मुक्तसे मिले है, उन सब नं बताया है कि नेताजीका प्रभाव जादू की तरह सब पर था और सभी सम्प्रदायों के लोगों ने उनके नेतृत्व में हिन्दुस्तान की आजादी हासिल करने के एक ही उद्देश्य के लिये लड़ाइयाँ लड़ी थीं। उनके सैनिकों के मन में कभी धार्मिक या प्रान्तीयता की भावना नहीं आयी।

गान्धीजी ने कहा कि नेताजी की बुद्धि बड़ी प्रखर थी और जीवन की सभी शिक्षाओं की योग्यता उनमें थी। अपनी बुद्धि की प्रखरता से उन्होंने आई० सी० एस० की परीक्षा पान की किन्तु सरकारी नौकरी करना उन्होंने अपना अपमान सममा इङ्गलैण्ड से वापस त्राकर वे दंशवन्ध्रदास के साथ देश का काम करने लगे। काँमेस में उनका इतना प्रभाव हुआ कि वे दो बार ऋध्यक्ष चुने गये। परन्तु उन्होंने जीवन की सबसे बड़ी सफलता विदेशों में जाकर काम करने में प्राप्त की। भारत से गायब होने के बाद वे काबुल, इटली, जर्मनी इत्यादि होते हुए ऋन्त में जापान पहुँचे। त्रिदेशी लोग चाहे जो समभें, पर हिन्दुस्तान में एक भी ऐसा ऋादमी नहीं है जो नेताजी का देश मे भागकर जाना अपराध समभे। जैसा कि गोम्वामी तुलसी-दास ने कहा है—'समरथ को नहिं दोष गुसाई' सामर्थ्यवान मनुष्य को सब कुछ करने का ऋधिकार है। नेताजी ने जब पहिले-पहल अपनी सेना खड़ी की. तो उन्हें इसकी चिन्ता नहीं हुई कि सेना में कितने थोड़े से आदमी भरती हुए है। उन्होंने मोंचा कि सेना में चाहे कितने ही थोड़े आदमी क्यों न हों, पर उन सब में देश को आजाद कराने को हढ भावना, उस पर मर मिटने को चाह होनी चाहिये।

गान्धीजी ने आगे कहा कि मेरी दृष्टि में नेताजी की सबसे बड़ी सफलता और उनका सबसे बड़ा स्थायी काम यह था कि उन्होंने जात-पाँत का सब भेदभाव मिटा दिया था। वे केवल हिन्दू या केवल बङ्गाली नहीं थे। उन्होंने कभी अपने को सवर्ण हिन्दू नहीं समभा। वे अपने को केवल हिन्दु संतानी समभते थे और इससे भी अधिक काम उनका यह हुआ कि अपने नेतृत्व में रहने वाले सभो लोगों में यही जोश उन्होंने फूँक दिया था। यह उन्हीं का प्रभाव था कि आंजाद हिंद फीज के सभी सैनिको

ने जाँत-पाँत का भेदभाव त्याग कर अपने की केवल हिन्दुम्तानी समभकर एक भएडे के नीचे काम किया था।

## मुसलमानों से आर्थिक अपील

श्राज की प्रार्थना-तभा में गांधीजी ने गृह-विहोन शरणार्थियों की शीघ्र महायता पहुँचाने श्रीर उनके कष्ट दूर करने की विशेष रूप से श्रपील गुसलमानों से की। श्रापने एक हफ्ते पहिले पनियाला में किसे गने एक भाज का उल्लेख किया, जिसमें हिन्दुत्रों, मुनलमानों नथा श्रष्ट्व कहे जाने वाले सब लोगों ने भाग लिया था। गान्धीजी ने कहा कि इन प्रकार का भोज करना बहा श्रच्छा था श्रीर मैं भी इस भोज में श्राना चाहता था, पर काम में बहुत फसे रहने के कारण नहीं श्रा सका।

मगर, गान्धीजी ने कहा, इतना हो काफी नहीं है। मुफे तो तब छोर ज्यादा खुशी होगी, जब हिन्दू और मुसलमान अपने में एकता और मित्रता स्थापित करने में पूर्ण रूप से सफल होंगे। अमतुस सलाम ने इसी उद्देश्य से अनशन किया था, जैसा कि सभी लोग जानते हैं और उमी का यह प्रभाव था कि आस-पास के मुसलमानों ने अमतुस सलाम से यह बादा किया है कि बङ्गाल के मुँह पर जो जरूम इन उपद्रवों के कारण लगा है, उसे भरने की वे पूरी ताकत के साथ कोशिश करेंगे।

गान्धीजी ने आगे कहा कि एक समस्या की आंर मेरा ध्यान पिछले कुछ दिनों से बड़ी न्यपता के साथ लगा है और बह है उन कुटुम्बों का प्रश्न जिनका सभी कुछ पिछले उपद्रवीं में नष्ट हो गया है। ऐसे असंख्य कुटुम्ब है, जिनके पेट पालने वाले पुरुष मारे गये है और अब उनमें जो लोग बचे है, उनके पेट भरने का सवाल है, उनके वचों की तालीम और हिफाजन का सवाल है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह सब फर्ज रारकार का है। मगर दिल से शान्ति चाहने वाले हम लोगों को इस प्रश्न को और अधिक विस्तृत दृष्टिकोण से देखना है। मेरी नावीज राय में तो होना यह चाहिये कि जिस सम्प्रदाय के लोगों ने अन्याय और उत्पात किये है उसी सम्प्रदाय के लोगों ने अन्याय और उत्पात किये है उसी सम्प्रदाय के लोगों का यह फर्ज है कि वे अपने दुखी पड़ोसियों की राहायना करें और उनकी तकली में दूर करें।

श्रापने कहा कि सरकार यह काम तो श्रपनी ताकत के बल पर वरेगी, मगर पब्लिक की श्रोर से यह काम दिली तौर पर होगा श्रौर पीड़ितों में विश्वास पैदा करने का श्रमली यहीं काम है। मानवना के ख्याल से श्रादमी को श्रादमी समफकर उदार हिंदिकोण से काम करना चाहिये श्रौर श्रान वाले सब सङ्कट का सामना किया जाना चाहिये। तभी सब संकट दूर होगा। ऐसे काम के लिये शक्ति-बल पर श्राधारित सरकार से सहायता लेना श्रच्छा नहीं है। जो लंग दस्तकारी का धंधा करने हैं, उनके सम्बंध में गान्धीजी ने कहा कि उन्हें लोगों के दान या दया पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। बल्कि श्रपनी कठिनाइयों दूर करने के लिये श्रपनी ही शक्ति तथा साधनों से काम लेना चाहिये। श्रापने कहा कि जो मनुष्य बिना परिश्रम किये मुफ्त का भोजन करना है, वह चोर के समान है जो

बिना परिश्रम किये अपना पेट पालता है। आपने कहा कि संसार में स्थायी शान्ति तभी स्थापित होगी, जब कि समाज के विभिन्न अङ्ग परिश्रम के बन्धन से वँध जायँगे।

भाषण के बाद गान्धीजी से एक मुस्लिम सज्जन ने यह प्रश्न किया कि—बिना केन्द्रीय सरकार के काँग्रेस श्रौर लीगी सदस्यों में समभौता हुए बिना श्रापका नोश्राखाली में शान्ति का प्रयत्न किस प्रकार सफल होगा ?

महात्मा गान्धी ने उत्तर दिया कि सिरोंधी के मुसलमानों ने श्रमतुम सलाम का अनशन समाप्त कराने में जो उदाहरण उपस्थित किया है, वह इस बात का प्रत्यत्त प्रमाण है कि प्रामीणों में अच्छे पड़ोसी की तरह रहने की भावना बढ़ाने में काँग्रेस या मुस्लिम लीग अथवा केन्द्रीय सरकार का कोई सम्बंध नहीं है। ये संस्थाण क्या करती हैं, इसकी ख्रोर गाँवों में रहने वालों को ध्यान नहीं देना चाहिये। उन्हें तो वही करना चाहिये. जिससे उनका हित हो, जिससे गाँव के सब लोग भाई-भाई की तरह प्रेम के साथ रह सकें, एक दूसरे की मुसीबत के समय खड़े हों ख्रीर बिना मजहब या जात-पाँत का ख्याल किये सब मिलकर अपने गाँव को उन्नात करें। सिरोंधी के मुसलमानों ने ख्रपने हिन्दू पड़ोसियों को धार्मिक स्वतन्त्रता का विश्वास दिलाकर सारे देश के सामने सुन्दर उदाहरण उपस्थित किया है।

गान्धीजी ने कहा—'राजनीतिक संस्थात्रों को एसेम्बलियों श्रीर कौन्सिलों में सरकारी मामलों में लड़ने दीजिये, मगर श्राप लोग अपने गाँवों में शान्ति से रहकर अपना जीवन सुखी बना-इये और अपनी फिक्र कीजिये।'

इसके बाद गान्धीजी से दूमरा प्रश्न किया गया कि नोत्राखाली में जो हिन्दू बच रहे हैं, उनकी रज्ञा किसने की है ?

गान्धीजी ने कहा—उनकी रच्चा ईश्वर ने की है। यह हो सकता है कि कोई आदमी चाहे अपने पड़ोसियों की जानें बचाने में ईश्वर के हाथ का साधन बन गया हो, पर उस आदमी में यह भावना उत्पन्न करने वाला तो ईश्वर ही है। यह कहना कि किसी एक आदमी ने इतने अधिक हिन्दुओं की जान बचायी, केवल अहंकार और मूर्खता है, जो ईश्वर से डरने वाले मुसलमानों के स्वभाव के विपरीत है। अगर इस प्रकार का अहङ्कार किसी के मन में आया और उसे बढ़ने दिया गया, तो इसके लिये खुदा उसे माफ नहीं करेगा।

## एक गाँव में दो दिन

महात्मा गांधी ने यहाँ एक प्रस्ताव स्वीकार किया कि आप एक गाँव में अब दां दिन ठहरा करेंगे, क्योंकि एक दिन में सब आवश्यक काम नहीं पूरा हो पाता। पर इसे आपने फरवरी मे शुरू करने का निश्चय किया और उसके पहिले आप नांआ-खाली के शेष गाँवों का दौरा एक गाँव में एक दिन रहकर ही पूरा करेंगे।

# मुरेम

#### [ २४ जनवरी ]

महात्मा गान्धी अपनी गाँव-गाँव यात्रा के १९ वें गाँव मुरेम में आज प्रातःकाल साढ़े आठ वजे पहुँच। डाल्टा से आप साढ़े सात बजे सबेरे चले थे। आप गीले खेतों से होकर चले जा अभी हाल ही में जे ते गये थे। यहाँ आप मौलाना हचीबुल्ला बटारी के मकान पर ठहरे।

दिन में कार्यों में व्यस्त रहते के बाद गान्धोजी ने शाम को प्रार्थना सभा में भाषण किया। आज की सभा वड़ी भारी था। लगभग १० हजार आदमी उपस्थित हुए थे। प्रार्थना के बाद अपने भाषण में गान्धीजी ने पहिले कुछ अखबारों के सम्बन्ध में खेद प्रकट किया कि वे गलत तथा बढ़ा चढ़ाकर दिया हुआ विवरण छापकर जनता के दिमाग और विचार की जहरीला बनाते हैं। आपने कहा कि अखबारों को बहुत माबधान होकर काम करना चाहिये। इस समय अखबारों ने बाइबिल, गीनां आंग अन्य धार्मिक प्रत्थों का स्थान ले लिया है और जनता उनके कथन को बहुत महत्व देती है तथा उसमें बहुत प्रभावित होती है। इसलिये अखबारों का कर्तव्य है कि अपने पाठकां के सामने केवल सच्ची घटनायें और सच्चे प्रभाचार रखे।

इसके बाद सहात्माजी ने प्रान्तों में अलग-नंख्यक सम्प्रदायों द्वारा आन्दोलन करने के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये। आपने कहा कि बहुमत वाले प्रान्तों में अलप-संख्यक सम्प्रदाय का आन्दोलन करना उचित तथा व्यवहारिक नहीं है। आपने कहा कि विहार के मुसलमानों को अपना प्रान्त छोड़ना नहीं चाहिये। श्रापने कहा कि इसमें सन्देह नहीं कि दुछ बिहारी हिन्दुओं ने अमानुषिक कार्य किये हैं. परन्तु इससे मुसलमानों को अपने कर्तव्य से हटना नहीं चाहिये और उन्हें बहादुरी से अपने यरों में बने रहना चाहिये, जिन पर उनका अधिकार है। श्रांर विहार के हिन्दुओं को चाहिये कि वे उन हिन्दुओं के दुण्कृत्यों के के लिये जितनी चित्त पूर्ति सम्भव हो करें, जो कि उन दिनों पागल हो गये थे।

यही बात में नेश्राखाली के हिन्दुश्रों श्रीर मुसलमानों से कहूँगा कि नोश्राखाली के मुसलमानों का फर्ज है कि श्रगर नोश्राखाली में एक भी हिन्दू रहे तो ये उसे श्रपने बीच में हिसाजत से ही नहीं बल्कि पूरी हिफाजत से रखें। श्रीर हिन्दुश्रों को भी विश्वास के साथ नोश्राखाली में रहना चाहिये।

 नोश्राखाली के कलेक्टर मि० मैकइनर ने भी गांधीजी में सिलने के लिये सुरेंम आये थे। उन्होंने महात्माजी से वार्ते कीं और बाद में प्रार्थना की सभा में भी उपस्थित हुए थे।

श्चरने भाषण के श्चंत में महात्माजी ने इस बात का विशेष-रूप से उल्लेख किया कि प्रार्थना और सभा में मुसलमान लोग श्चिषक संख्या में आने लगे है, भगग इसका सारा श्रेय बीबी श्चमतुस सलाम के अनशन को है, जिसने यह उत्साह लोगों में उत्पन्न कर दिया है और उनके हुद्यों पर इतना प्रभाव हाला है।

# हीरापुर

#### [२४ जनवरी]

महात्मा गांधी आज मुरैम से हीरापुर आये, जो मुरैम से दिज्ञिण में एक मील से कुछ अधिक है। ३४ मिनट में एक मील का रास्ता तय कर आप द बजकर २४ मिनट पर हीरापुर पहुँचे। वहाँ आप एक नाई के मकान में ठहरे।

मुरैम से चलने के पहिले गांधीजी उन मुसलमान सज्जन के घर के अन्दर गये जिनके आप मेहमान थे और घर की स्त्रियों से आपने बातें कीं। इस कारण आपको मुरेम से रवाना होने में कुछ देर भी हो गयी।

हीरापुर में अधिकतर बस्ती मुसलमानों की है, जिनकी संख्या गाँव में लगभग २४० है और हिन्दुओं का केवल ९२।

हीरापुर पहुँचकर गांधीजी अपनी कुटिया में गये और बंगला भाषा पढ़ना आरम्भ किया। गांधीजी ने अब ध्यान के साथ बॅगला पढ़ना शुरू कर दिया है और यह निश्चय कर लिया है कि इतनी बँगला सीख लेंगे कि बङ्गाल के दौरे में आप बगला भाषा में ही वहाँ के लोगों से बातचीन करें।

हीरापुर में प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए गांधीजी ने अपने पास आये हुए तारों का जिक्र किया, जिनमें से एक तार मदरास के जमायत-उल इस्लाम का था और दूसरा बम्बई का। आपने बताया कि इन तारों में कहा गया है कि इस्लाम में आपका विश्वास नहीं है, इसलिये आपको इस्लामी कानून में दखल देने का कोई हक नहीं है। गांधीजी ने कहा कि तार

भेजने वालों को माख्यम होता है बाकयात की जानकारी नहीं है। मैंन कभी किसी धर्म के पालन में हस्तत्तेप नहीं किया है भौर न मुक्ते दुस्तन्दाजी करने का अधिकार ही है। मैंने तो रीगम्बर के बचनों को जो पढ़ा है, उन्हीं के ऋाधार पर मैंने सिर्फ अपना नाचीज सलाहें दी हैं। मैंने तो बड़े सुसंस्कृत मुस्लिम वरों में परदे की पूर्णरूप से अवहेलना देखो है। अपनो आँखों से देखा है कि सियाँ वहाँ परदा बिल्कुल नहीं करती। मगर इसका मतलब यह नहीं है कि वे दिल का परदा नहीं करतीं। श्रीर मेरी राय में वही असली परदा है, जो इस्लाम चाहता है। बैर, मेरी राय कुछ भी हा, मेरे भाषण सुनन वाले सुमलमानों को अधिकार है कि वे मेरी सलाह न मानें अगर वे समभते हैं कि इस्लाम के सिद्धान्तों से वह मेल नहीं खाती। जो आलोचना-पूर्ण तार मुक्ते मिले हैं, उनसे यही प्रकट होता है कि इन तारों के भेजने वाले दूसरे लोगों के मतों को सुनना भी गवारा नहीं कर सकते परन्तु उन्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि अदालतों में और प्रिवी कौंसिल तक में भी जिनमें जज लोग श्रवसर गैर-मुसलमान होते हैं, इस्लाम कानून का अर्थ लगाया जाता है भौर उस श्रर्थ को इस्लामी दुनिया पर लागू किया जाता है।

इसके विपरीत मैंने तो सिर्फ अपनी राय दी है। अगर मैं आलोचना और नुकताचींनी के डर से या शारीरिक दंड से भी डरकर अपनी राय न दे सकूँ, तो सत्य और श्रहिन्मा का अयोग्य श्रीतिनिधि सिद्ध होऊँगा।

#### बन्सा

#### [२६ जनवरी]

### स्वाधीनना दिवस का समारोह

ने आवानी के सुदूर एक कोन में पड़े हुए बन्सा गाँव को आज महाना गान्बी का महमान के रूप में स्वागत करने का सोभाग्य प्राप्त हुआ, जब कि सारे देश में स्वाधीनना दिवस गनाया गया। आज २६ जनवरी का दिन देश की खाधीनता के लिये हद प्रयत्न करने की शपथ हुहराने का पुनीन दिवस था। आज संसार को एक बार फिर यह याद दिलाने का दिव था कि आज हम भारतवामी अपनी स्वाधीनता लेन के लिये पहिले की अपेका अधिक हद-प्रतिश्च हैं और अब इसे ऑनिच्छुक हाथों से ले लेन में संसार की कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती।

गान्धीजी श्राज प्रातःकाल हीरापुर में श्रापनी कुटी से जब बन्ना चलन को नैयार हुए, तो श्रापकी श्राज की यात्रा में सीथ चलने को उद्यत सभी लोगों ने एक साथ 'बन्देमातरम्' गायन गाया।

इसके बाद जब महात्माजी ने प्रस्थान किया, तो 'बंदेमातरम्' और 'श्रत्लाहा श्रक्षर' की गगन भेदी ध्वनि की गयी श्रीर चलने के साथ रामधुन भजन गाया जाने लगा। दूर-दूर के गाँवों में भी गाद्गीय गाने की ध्वनि गूंज उठी। यह गाना आज के अवसर के लिये विशेष रूप से नैयार किया गया था। यात्रा में गारते भर बराबर यह गाना गाया जाता रहा।

बन्सा हीरापुर से ठीक दो मील दक्षिण में है। ५४ मिनट में गान्धीजी ने यह दो मील का मार्ग पूरा किया और = बजकर ३४ मिनट पर बंसा आप पहुँच गये। वहाँ आप कविराज जर-बंधु सील के मकान पर ठहरे।

गांधीजी की कृटी में आज स्वाधीनता-दिवस मनाया गया। सरदार जीवन सिंह ने तिरङ्गा भएडा गान्धीजी की कृटी के सामने फहराया। गान्धीजी वहाँ से थोड़ी दूर पर मालिस करा रहेथे। भएडाभिवादन के समय आजाद हिन्द कीज के लोगों ने 'जन-गए-मन अधिनायक' गाना गाया और 'बंदेमातरम' 'अल्लाहों अकबर' 'महात्मा गांधी की जय' 'नेताजी की जय' आदि नारे लगाये गये। इसके अतिरिक्त अत्य कोई कार्य गांधीजी की कुटी में नहीं हुआ।

गांधीजी के साथ जलने वाले पत्र-सम्बाददाता कों ने भी, अपने खेमे में स्वाधीनता-दिवस गांधीजी के आशीर्वाद के साथ मनाया। अर्थ भाः काँगेस कमेटी और विधान सम्मेलन के सदस्य श्री यदुनंदन महाय न राष्ट्रीय भरणड़ा फहराया, जो बिहार सरकार की श्रोर से गांधीजी के साथ रहते हैं। गांधीजी के उर्दू 'हरिजन सेवक' के कार्य-करी तथा गांधीजी के पास आने वाली उर्दू चिट्टियों का उत्तर देन वाले मिन महमूद अह-

एक बङ्गा स्वी पत्रकार ने बङ्गला में दुहराया। श्री बोरेन्द्र सिनहा के नेतृत्व में राष्ट्रीय गान गाया गया। इसके बाद शही दों की स्मृति में दो मिनट तक सब लोग मौन रहे।

तीसरे पहर सम्बाददाता लोग श्रास-पास के गाँवों में गरे श्रीर प्रामीगों की सफाई में रहने, हिन्दू-मुस्लिम एकता श्रीर छुत्राछूत दूर करने की बात समभायी।

सन्ध्या सनय एक भोज हुन्ना, जिसमें हिन्दू-मुसलमान, हरिजन त्यादि मभी जातियों के लोगों ने भोजन किया। इस भोज के लिये गांधीजी से स्वीकृति ली गयी थी।

प्रातःकाल भएडाभिवादन के कार्य में सम्मिलित होने बाले प्रमुख सञ्जनों में प्रो० निर्मल बोह्य सरदार जीवन सिंह श्रौर श्री बीरेन्द्रनाथ गुह् भी है।

# अग्रेजों का भारत छोड़ना निश्चित है

बंसा में तीसरे पहर की गयी प्रार्थना-सभा में गानधीजी स्वाधीनता-दिवस के सम्बंध में भाषणं किया। श्रापने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा—'वङ्गाक के श्राभमान नेताजी ने विदेशों में भारत की स्वाधीनता के किये लड़ाई लड़कर केवल बङ्गाल के लिये लड़ाई नहीं लड़ी थी, बल्कि समस्त भारत के बास्ते लड़ी थी। नेताजी की सेना में सभी मजहवों के लोग थे, पर उन लोगों को एक ज़िए के लिये भी कभी यह ख्याल नहीं हुआ था कि वे किसी एक प्रान्त या किसी खास सम्प्रदाय के लिये लड़ रहे हैं। आज इस अवसर

पर उन महान नेताजी और स्वाधीनता के शानदार कार्य में अपने जीवन लगा देने वाले अन्य सभी लोगों का स्मरण करना चाहिये।

श्रागे गांधीजी ने कहा कि श्रंग्रेजों का भारत से जाना निश्चित है। इस समय श्रन्तराष्ट्रीय पिरिधित ऐसी है कि श्रंग्रेज लोग अब श्रधिक समय तक इस देश पर श्रपना श्रधिकार नहीं रख सकते। पर यदि हिन्दुस्तानी लोग श्रापस में लड़ते गये, तो दूसरी शक्तियों भारत के साधनों से लाभ उठाएंगी श्रोर उसे बेकार नहीं रहन देंगी। उस हालत में भारतीयों को केवल एक नहीं अनेक मालि गें के नीचे रहना होगा।

स्वाधीनता-दियस के सम्दंध में गांधीजी ने वहा कि २६ जनवरी का दिन भारत के लिये स्मरणीय दिवस है। इसी दिन भारत ने काँग्रेस के नेतृत्व में अपनी स्वाधीनता की घोषणा की थी। यद्यपि उसके पहिले भी भारतीयों में स्वाधीनता की भावना थी, किन्तु काँग्रेस के जन्म से उस भावना ने एक निश्चत रूप प्रहण किया। यह भावना सन् १५१६ से देश के प्रामीणों में भी फैलने लगी और स्वाधीनता का प्रस्ताव पास होने तक बराबर फैलती रहो। तब से २६ जनवरी का दिन जिस दिन कि स्वाधीनता का प्रस्ताव पास हुआ था, समस्त भारत में मनाया जाता है। स्वाधीनता के आन्दोलन में लाखों आदिमर्थी ने भाग लिया है और अगर हमारी विस्मत हमारे खिलाफ न हो गयी होती और हमारे अन्दर पूट न हो गयी होती, तो आज इस सभा में भी तिरङ्गा मंडा गव के साथ फहरावा नजर आता।

एक समय पहिले था, जब मुसलमान लोग भी इस भएंड को अपना भएडा समभते थे और वह समस्त भारतीयों की आकांचाओं का प्रतीक समभा जाता था। मगर आज हमारी बद्किस्मती है कि हमारे मुसलमान भाई इस भएंड से गर्व का अनुभव नहीं करते और यही नहीं बिल्क वे उस पर नाराजी जाहिर करते है।

इस समय मुसलमान पाकिस्तान चाहते हैं, पर अगर वे चाहते हैं कि अंग्रेज लोग पाकिस्तान हैं, तो बेशक अंग्रेजों को हिन्दुस्तान में बने रहने में महद पहुँचा रहे हैं। इनिलये ठोक गास्ता तो यह है कि पहिले आजादी हासिल की जाय और उसके बाद पाकिस्तान का सवाल तय किया जाय। अंग्रेजों का हिन्दुस्तान से जाना तो निश्चित है। अन्तराष्ट्रीय परिस्थिति ऐसी है कि वे अब इस देश पर अपनी हुकूमत नहीं कायम रख सकते। पर अगर हिन्दुस्तानी लोग आपस में लड़ते रहे, तो तीमरे लोग हिन्दुस्तान के विशाल माधनों को बेकार नहीं जाने देंगे और उससे फायदा उठाएँगे।

इसलिये आजादी से लाभ उठाना हमारे हाथ में है, पर अगर हमने अपनी मूर्वता दिखायी ता आजादी हमारे हाथ में निकल जायगी और उस हालत में विधान सम्मेलन स्वाधोनना की रज्ञा नहीं कर सकेगा अगर मभी दिन्दुस्थानियों ने मिलकर काम नहीं किया तथा स्वाधीनता के लिये नहीं लड़े।

#### पल्ला

#### [२७ जनवरी]

गानधी जी श्रपनी पैक्ल यात्रा के २२वें गाँव परला के लिये श्राज प्रानःकाल साढ़े सात बजे बंसा से रवाना हुए श्रोग लगभग श्राध घएटे में एक मील से कुछ श्रधिक का रास्ता नय कर = बजे परला, पहुँच गये। वहाँ श्राप जगतबंधु मील नामक एक हिन्दू जुलाहे के यहाँ ठहरे।

श्रात गान्धीजी का सोमवार का मीन-दिवस था, श्रातः अर्थना की सभा में श्रापका लिखित भाषण पड्कर सुनाया गया। गान्धीजी ने श्रपने भाषण में इस बात पर बड़ा संतोष अकट किया कि श्रापको एक जुलाहे मित्र के घर में ठहराया गया है। श्रापने कहा कि बङ्गाल में एक साधारण कोपड़ी पक्के महलों से कहीं श्राधक प्रिय लगी है। पक्के महल तो मुक्ते केदलाने की तरह लगते हैं। जिन घरों में प्रेम का साम्राज्य हो, जैसा कि इस भोपड़ी में है, वह उन महलों से कहीं बढ़कर है जहाँ प्रेम न हो।

यानधीजी ने कहा कि श्रापने ऐसे मुन्दर देश में मुके यह दंखकर बड़ा ही दुख होता है कि हिन्दू मुसलमान आपस में लड़ते हैं। क्या मजहबी मतभेद के कारण साम्प्रदायिक एकता नहीं बनायी रखी जा सकती? श्रागे गांधीजी ने कहा कि ऐसे मकानों का वक्कर लगाया है जो बिल्कुल नष्ट हो गये हैं श्रीर खाली पड़े हैं। बाजार श्रीर स्कूल मां खाली दिखायी देते हैं। इससे किसे फायदा हुआ, हिन्दुओं को या मुसलमानों को ? खेती बिल्कुल चीपट हो गयी, उसकी श्रीर कोई ध्यान नहीं दे पाता, जिससे आगे चलकर अकाल फेर पड़ता दिखाई देता है। गाँव सब गन्दे दिखायी देते हैं. वानी सब जगह गन्दा है। शिचा की कमी ता सर्वत्र है हा। वे सब खराबियाँ दूर की जानी चाहिये श्रीर शिचा के लिये नयी सकीम बनायो जानो चाहिये, जिनमे जनता में झान आवें श्रीर सब खराबियाँ दूर हों।

श्वन्त में गांधोजी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह हिन्दुओं भौर मुजलमानों में सुबुद्धि दे जिससे कि वे श्वपनी ये समस्याएं इस कर सकें तथा एकता के साथ रहें।

# पंचगाँव

#### [ २८ जनवरी ]

श्राज प्रातकाल साढ़े सात बजे महात्मा गांधी ने पल्ला से पक्कागांव के लिये प्रस्थान किया। श्राज श्रापके पीछे छोटे बचों का एक जुलूप चला। बच्चे छोटे-छोटे राष्ट्रीय मरुडे हाथों में लिये थे। यह जुलूस रास्ते भर गांधीजी के साथ था। एक स्त्री भी एक जलता हुआ दीपक हाथ में लिये थी।

लगभग डेढ़ घरटे की सफर के बाद गांधीजी ९ बजे पक्क-गाँव पहुँचे ऋौर वहाँ श्री भारतचन्द्र चक्रवर्ती के मकान पर ठहरे। रास्ते में गांधीजी तीन मकानों पर थोड़ी-थोड़ी देर रुके। पहिला मकान श्री रामकुमार दें का था। इस मकान को जाने वाले रास्ते पर गांधीजी के स्वागत में फूल बिछा दिये गये थे। घर की खियों ने गांधीजी का स्वागत किया और ऋापके ऊपर गुष्प-वर्षा की।

जब गांधीजी दूसरे मकान की श्रांर जा रहे थे, तो मांहम्मद रजा नामक एक श्रधेड़ मुसलमान दौड़ता हुआ गांधीजी के पास आया श्रीर श्रपने घर गांधीजी को चलने का आबह किया। गांधीजी मोहम्मद रजा की सभी भावना देखकर उसका अनुरोध टाल नहीं सके, हालांकि उसके घर जाने की बात आपके प्रोप्राम में नहीं थी। गांधीजी मोहम्मद रजा के घर के भीतर गर्य श्रीर स्त्रियों से भी बात-चीत की। तीसरे जिस मकान में गांधीजी गये, वह मुकलेसर रहमान नामक एक अन्य मुमलमान सज्जन का था। यह सज्जन गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। मकान के सत्मने गांधीजी के बैठने के लिये एक कँचा मक्क धनाया गया था और आस-पास के बहुत में मुसलमान भी आपके स्वागत के लिये उपस्थित हुए थे। गांधीजी मंच पर वैठाये गये। गांधीजी ने यहाँ उपस्थित मुसलमानों को थोड़ा उपदेश भी दिया।

पुलिस के कथनानुमार चाटिखन पुलिस थानेक एक श्राफसर श्रापने साथ तीन हिश्यारवन्द सिपादी लेकर याकू बश्रली नामक एक मुसलमान के घर नलाशी लेने का बारंट लेकर गये। वहाँ पहुँचने पर घर के लोगों ने श्राग लगान का को बार प्रयक्ष किया, पर पुलिस ने श्राग बुका दी।

मकान की तलाशों लेने पर लूट का माल बरामद हुआ और मकान मालिक गिरफ्तार किया गया। जब गिरफ्तार आद्मी को पुलिस अपने साथ ले जा रही थी, तो लगभग ३०० आद-मियों की भीड़ ने घातक हथियार लेकर पुलिस-दल को चारों खार से घेर लिया खीर उन पर हमला करना चाहा, मगर पुलिस ने एक राउंड गोली चलाकर भाड़ की मगा दिया। गोली से कोई घायल नहीं हुआ।

पंचर्गांव की प्राथंना सभा साधारण रूप से हुई। प्रार्थना के समय गांघोजी की मालून हुआ कि मुस्लिम लीग के लोगों को प्रार्थना की कुछ बातों के सम्बंध में एतराज है। गांधीजी ने सीग वालों की इस असहिष्णुता पर खेद प्रकट किया।

#### जयाग

#### [ २९ जनवरी ]

## लीगियों को खरा उत्तर

महात्मा गानधी ऋपनी यात्रा के २४वें गाँव जयाग में ऋाज गातःकाल सवा ऋाठ बजे के लगभग पहुँचे। पंचगाँव से ऋाप नित्य का भाँति पैदल ही चले ऋौर डेढ़ मील का मार्ग ४० मिनट में तय किया।

गान्धीजो से नोश्राखाली जिला मुस्लिम लीग को श्रांर में कुछ लोग लाग के मंत्री मिट मुजीबर रहमान की श्रध्यक्षता में डेपुटेशन के रूप में मिले श्रीर अनेक शिकायतें की। उन लोगों ने कहा कि श्रागर नोश्राखाली में स्थायी शान्ति श्रीर सद्भाव स्थापित करना है, तो कुछ बातों का होना श्रावश्यक है। उन्होंने कहा कि नोश्राखालों में बाहरी लोग नहीं रहने चाहिये, क्योंकि उनके रहने से हम लोगों के काम में बाधा पड़ती है। हम लोग श्रापके रहने में कोई हर्ज नहीं सममते, क्योंकि हमें विश्वास है कि श्रापके रहने से हमारा कोई नुकसान नहीं हो सकता। पर श्राप यहाँ के मुसलमानों को श्रपना सचाई का विश्वास दिलान के लिये कम से कम कुछ दिनों के लिये विहार जायें।

डेपुटेशन बालों ने यह भी कहा कि मुसलमान लांग सताये जा रहे हैं ऋौर बहुत से बूदे तथा बेगुनाह लोग गिरफ्तार किये गये हैं। मुसलमानों के साथ रियायत की जानी चाहिये, ताकि शान्ति स्थापित होने में जल्दी हो। डेपुटेशन वालों ने गांधीजी की प्रार्थना सभात्रों का भी उल्लेख किया और कहा कि श्रापकी प्रार्थनात्रों में कुरान की त्रायतों का पढ़ा जाना तथा उसका श्रर्थ लगाया जाना मुसलमानों को पसन्द नहीं त्रा सकता, क्योंकि श्राप हिन्दू हैं। यह भी एक वजह है जिससे मुसलमान श्रिधक संख्या में त्रापकी प्रार्थना सभात्रों में नहीं श्राते।

गांधीजी ने इन वातों का जवाब देते हुए कहा कि—'मैं तां हमेशा अपने को जनता का आदमी समसता रहा हूँ और जनता के ही लिये हूँ तथा हमेशा जनता के बीच में ही गहूँगा। अगर आप लीग मुस्लिम जनता के दिलों तक पहुँचन का कोई दूसरा प्रभावशाली रास्ता बतावें, तो मैं उसे मुनने के लिये तैयार हूँ। पर मैं नीआखाली से किसी भी तरह जाने को तैयार नहीं हूँ। जहाँ तक दूसरे लोगों का नीआखाली में काम करने का सम्बंध है, यह काम बङ्गाल सरकार का है कि वह देखें कि जो लोग यहाँ काम कर रहे हैं, उनसे नीआखाली में शान्ति स्थापित करने के उनके काम में क्या बाधा पड़ती है।'

श्रपने बिहार जाने के बारे में गांधी जी ने कहा कि में जानता हूँ कि मुस्लिम लीगी हलकों की यह राय है कि में बिहार जाऊँ। मगर में बिहार सरकार के बराबर सम्पर्क में रह रहा हूँ कि बिहार में मुस्लिम शरणार्थियों की सहायता के लिये क्या काम हो रहा है श्रीर बिहार सरकार का एक प्रतिनिधि मेरे नोश्रा-खाली के दीरे में बराबर मेरे साथ रहता श्राया है। श्रगर में श्रभी बिहार जाऊँ श्रीर वहाँ देखूँ कि मैंने जा कुछ कहा है, वह सब बिहार सरकार ने किया है, कुछ छोड़ा नहीं है, ता वह सब मुक्ते साफ-माफ सब कहना पड़ेगा श्रीर उससे सम्भव है कि मुस्लिम लीग वालों के काम में कोई महायता न मिले।

नोत्रास्त्रालों में मुसलमानों की ऋधिक संख्या में गिरफ्तारी के समबंध में गांधीजी ने कहा कि समाज सुधारक का कर्तव्य तां यह है कि ऋपनी जनता में ऐसी जागृति उत्पन्न करे कि लोग ऋपने ऋपराधों को स्वयं स्वीकार कर लें ऋौर बेगुनाह लोग न पकड़े जायं। ऋसली ऋपराधी लोग ऋगर ऋपने को गिरफ्तार करवा लें, तो निदंषि लोग गिरफ्तार होने ऋौर सजा पाने से बच जायेंगे। मगर जब तक यह नहीं होत, नव तक उपद्रवियों के नेता जहरूर परुड़े जाने चाहिये।

प्राथना के सम्बंध में गांधीजी ने कहा कि अगर लोगों में इतनी असिंह रागुता है कि कोई आदमी अपनी इच्छानुसार प्रार्थना भी नहीं कर सकता, तो में नहीं समभता कि बेचारे हिन्दुस्तान के भाग्य में क्या बदा है। में तो अपने एक खुदा परस्त दोस्त के ही कहने से अपनी प्रार्थना में कुरान की आयतों को भी शामिल किया था। इसमें सन्दंह नहीं कि मैं इस्लाम के सिद्धान्तों के विरुद्ध नहीं जाना चाहता पर साथ ही मैं किसी एक आदमो की या आध दर्जन आदमियों की वात भी सुनने को तैयार नहीं हूँ कि कुरान की कुछ आयतें पढ़कर मैं इस्लाम के खिलाफ जा रहा हूँ।

लीगियों के डेपुटेशन से मिलने के बाद गांधीजी अपनी

प्रार्थना सभा में गये छोर प्रार्थना के बाद अपने भाषण में आपने डेपुटेशन वालों से हुई अपनी वार्ता का उल्लेख किया। आपने कहा कि मुस्लिम जनता के हित के लिये ही मैं बिहार मरकार पर वरावर जार डालता आया हूँ और नोआखाली में भा जो कुछ कर रहा हूँ, उसमें भी मुमलमानों का अधिक हित है। में स्वयं इम ढक्न से नोआखाली में काम कर रहा हूँ कि मुसलमानों को किसी तरह की शिकायत न हो। मुसलमानों को ज्यादितयों की मैंने बहुत थोड़ी चर्चा कर और वह भी बहुत दवो जवान से की है। फिर भी अगर लोग इतना भी सुनना पमन्द नहीं करते और जिस संयत ढक्न से गैर-मुम्लिम हार्यकर्तागण नोआखाली में शान्ति स्थापना का काम कर रहे है, वह भी उन्हें पसंद नहीं आता, तो यह हिंदुम्तान की वदिकस्मती ही है।

प्रार्थना के बाद गांघीजी शाम को टह्लने के लिये निकले। टह्लते समय आपने अनेक प्रामीणों से, जिनमें हिंदू और सुसलमान दंशों थे, बातें की और उनका हाल-चाल पूछा।

जयाग में गान्धी जी ने शरणाथियों के कैम्प में एक स्कूल का उद्घाटन किया और उसमें विद्यार्थियों को कुछ पढ़ाया भी। छोटे बच्चों को गान्धीजी ने स्लेट पेन्सिल तथा पुस्तकें भी बटवायीं। उद्घाटन का उत्सव साद ढझ का था, लेकिन था बढ़ा आकर्षक। प्रामीणों तथा शरणाथियों ने गान्धीजी का अच्छा स्वागत किया था। के कुटुम्ब के रहने योग्य नमूने का एक मकान बनवायेशी, जिसमें एक सोने के लिये कमरा, एक रसोई-चर एक पाखाना रहेगा और यह मकान सरकार द्वारा मंजूर की गयी २४० ६० की रकम में बनाया जायगा।

इसी के साथ-साथ एक मकान श्री सतीशदास गुप्त ने खिजिरिखल कैम्प में बनवाने को कहा। श्रीदास गुप्त के श्रनुमान से ऐसे मकान में कम-से-कम ८०० रु० खर्च होगा।

## सरकार के बनाये मकान रहने योग्य नहीं

गान्धीजी ने श्रमकी से दूसरे गाँव में प्रार्थना के लिये जाते समय मि० जमन द्वारा बनवाया गया नमून का मकान देखा। उसे श्रच्छी तरह देखने के बाद गान्धीजी ने कहा कि मेरी राय में तो यह मकान मनुष्यों के रहने लायक नहीं है श्रापने कहा कि यह मकान न तो जाड़े में रहने लायक है श्रीर न गरमी में। मकान तो सरकार को ऐसा बनाना चाहिये, जो प्रामीणों के लिये नमूना हां श्रीर वे उसे देखकर श्रपना मकान बनवा सकें। श्रगर ऐसा न हुआ, तो मकान की समस्या शरणार्थियों की हल न होगी श्रीर वे मकान बनवा ही न सकेंगे।

गान्धीजी ने कहा कि भोपड़े नारियल की पत्तियों या दूमरी ऐसी चीजों से बनवाये जाय, जो बङ्गाल के इन हिम्सों में बहुतायत से मिलती हों। मि॰ जमन ने गान्धीजी के बताये अनुसार मकान बनवाना मंजूर किया और कहा कि ऐसा मकान बनवा कर आपको दिखाएँगे।

बाद में अपनी प्रार्थना सभा में भी गान्धीजी ने इस मोपड़े



१०--कट का अन्त-शिरोधी प्राममें गांधीजी की शिष्या कुमारी अमतुस सलाम २५ दिन के हण्यास के बाद गांधीजों के हाथ से नारंगी का रस प्रहण कर ग्हा है

का जिक किया। आपने कहा कि ऐसा मकान रहने योग्य नहीं है। मकान क्या केवल एक संदूक है। ये मकान गरमी के दिनों में भट्टी की तरह तपेंगे और इसमें रहने वाले भुन जायँगे। गान्धीजी ने कहा कि वाँस के फोपड़े बनवाये जायँ। ऐसे फोपड़े हवादार और उएढे होंगे और देखने में भी अच्छे लगेंगे।

प्रार्थना की सभा से लौटते हुए गान्धीजी एक मुसलमान के मकान पर गये। चूँकि गांधीजी उस मुसलमान से हिन्दी में बोल रहे थे, तो एक मुस्लिम सज्जन ने कहा कि हम लोग आपकी हिन्दुस्तानी नहीं समभ सकते। गांधीजी ने कहा कि मै बङ्गला भाषा सीख रहा हूँ और दो या तीन महीने में बङ्गला बोलने लगूँगा।

गांधीजी ने श्रमकी से एक वक्तव्य नागरी श्रौर फारसी लिपि के भगड़े के सम्बंध में प्रकाशित किया श्रौर कहा कि सब लोग दोनों लिपियाँ सीखें।



#### नवाग्राम

#### [३१ जनवरी ]

गांधी जी अमकी से दूसरे गाँव नवामास गये। यह गाँव अमकी से ढाई सील पर है। नवामास जाते हुए गांधीजी रास्ते में तीन सकानों पर थोड़ो-थोड़ी देर रुके, जिनमें से दो सकान सुसलमानों के थे। पहिला सकान हवीबुल्ला सास्टर का था, जो बहुत दूर से गांधीजी के स्वागत के लिये आये थे। गांधीजी यहाँ सकान के वाहर एक चारपाई पर बैठाये गये। आपने वहाँ जमा हए स्थानीय प्रामीणों से कुछ देर बातें की और कुमारी सनु गान्धी ने सकान के अन्दर जाकर खियों से वात-चीत की। कुछ फल इत्यादि गान्धीजी को भेट विये गये, जिन्हें आपने वहाँ उपस्थित बच्चों को बाँट दिया।

दूसरा मकान श्री आनन्दकुमार दाम का था। यहाँ स्त्रियों न गांधीजी का स्वागत किया। आप मकान के अन्दर भी लें जाये गये, जहाँ लड़कियों ने 'बंदेमातरम्' गाया। तीमरा मकान गुलावअसी व्यापारी का था। यहाँ भी गान्धीजी को कुद्र फल भेट किये गये, जिन्हें श्रापने वश्चों को दे दिया।

आज की यात्रा में गांधीजी के साथ फ्रेंड्स एम्बुनेन्स यूनिट दल के मि॰ एतेकजेण्डर होरेस भी थे। आप दो दिन उक गांधीजी के साथ रहे। यहाँ यह माल्म हुआ कि पूर्वी बङ्गाल के उपद्रव पीड़ित मभी चेत्रों से, जिनमें नोश्राखाली भी है, मरकार ने फौर्जी पहरा हटा दिया। फौज हटाने का काम एक हफ्ते से धीरे-धीरे हाँ रहा था।

नवात्राम में गान्धीजी को परिष्ठत जवाहरलाल नेहरू की एक चिट्ठी मिली, जो नेहरूजी को मध्यप्रान्त के एक जमीदार ने भेजी थी श्रीर जिसमें यह लिखा था कि मैं मध्यप्रान्त में अपनी जमीदारी में दो सी उपद्रव-पीड़ित लोगों को जमीन देने श्रीर वसाने के लिये तैयार हूँ।

गान्धीजी ने इसका उत्तर नेहरूजी को भेजते हुए लिखा कि मैं लोगों की आबादी एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त मे जाने के विकद्ध हूँ। गान्धीजी ने इस मामले की जिक्र अपनी प्रार्थनान्सभा में भी किया।

## तेभागा बान्दोलन पर गानधीजी का मत

नवायाम की प्रार्थना-सभा में नवायाम मिडिल स्कूल के कुछ कार्य-कर्ताच्यों ने गान्धीजी से बङ्गाल के कुछ हिम्मों मे शुरू हुए 'तेभागा' त्रान्दोलन के संबंध में प्रश्न किया चौर यह जानना चाहा कि त्रापका इस ज्ञान्दोलन के नार में क्या मन है।

यह आन्दोलन किसानों द्वारा उठाया गया है. जिसका उद्देश्य यह है कि जमीन की उपज में से जमींदार लोग किसानों में जो आधा हिस्सा ले लेते हैं, वह आधा न देकर विहाई हिस्सा दिया जाय। गांधीजीं ने इस सम्बंध में अपना मन प्रकट करने

हुए इस आन्दोलन का स्वागत किया और कहा कि मेरी राय तो यह है कि खेतों की सारी उपज किसानों की होनी चाहिये, क्योंकि मेरे विचार में जमीन किसी की नहीं है, वह ईश्वर की है और जो आदमी जमीन जातने-बोने में कोई मेहनत नहीं करता, उस का कोई हिस्सा उसकी उपज में नहीं होना चाहिये। जमीन तो किसी आदमी की नहीं बिल्क परमातमा की है, जा हम सब लोगों का मालिक है और उस पर इक उसी का हो सकता है, जो उसमें परिश्रम करे। मगर जब तक यह स्थिति न आ जाय, तब तक जमींदार का हिस्सा घटाने वाला आन्दो-लान उचित ही होगा। परन्तु गांधीजी ने आन्दोलन करने वालों को यह चेतावनी दा कि आन्दोलन में हिंसा या बल-प्रयोग से काम न खिया जाय। आपन कहा कि यदि इसमें हिंसा आदि से काम लिया गया, तो उसके प्रति मेंगे कोई सहानुभूनि नहीं होगी।

गांधीजी ने कहा कि यह तो ऐसा सुधार है, जो लोकमत का आदर करने वाले अधिकारियों को स्वयं करना चाहिये। इसिलेबे धर्म से काम लेना चाहिये। आन्दोलन यदि सचाई और शुद्ध भावना से चलाया गया, तो अवश्य सफल होगा, क्योंकि यदि साधन शुद्ध होगा, तो उद्देश्य अवश्य सिद्ध होगा। और यदि साधन तथा उद्देश्य ही शुद्ध नहीं होगा, तो ऐसा आन्दोलन कभी सफल नहीं होगा।

दूसरा प्रश्न गांधीजी से यह पूझा गया कि मुसलमानों ने हिंदुओं का बायकाट करना शुरू किया है और मझली पकड़ने बढ़ईगीरी अपित पेशों का काम हिंदुओं से न लेकर मुसलमानों ने म्वयं करना शुरू कर दिया है, जिसका नतीजा यह हो रहा है कि हिंदुओं के पेशे मुसलमानों से छूट रहे हैं और सब कुछ लूटे यां जला दिये जाने पर श्रव उनके पेट पर भी यह प्रहार हो रहा है।

गांधीजी ने इसके जवाब में कहा कि मैं यह समभता हूँ कि यह बात बढ़ा-चढ़ाकर बतायी गयी मालूम होती है, क्योंकि यह वायकाट तो कुछ ही लोग करते होंगे। मनव मेरे स्थाल में यह बायकाट चल नहीं सकता। ऋगर बाय-काट जारी रखा गया, तो इसका नतीजा यह भी हां सकता है कि हिंदू लोग छोड़कर हिंदू बहुमत प्रांतों में चले जाय श्रीर वहीं जाकर रहें श्रीर यह बात ऐसी है, जिसे कोई मुसल-मान पसन्द न करेगा क्योंकि मैंने किसी मुस्लिम लीगी नेता ्को यह कहते नहीं सुना और न वे इसके लिये प्रीत्साहन ही देते हैं। गांधीजी न यह सलाह दी कि वायकाट की बात अधिकारियों को बतानी चाहिये और वह बायकाट करने वालों को सजा दिलाने के विचार से नहीं बल्कि इसलिये कि त्रागर बायकाट की बात सही है, वो वह ऋधिकार रूप से उसे बना दें।

गांधीजी ने श्रोतात्रों से कहा कि सब लोग मिलकर ईश्वर से यही प्रार्थना करें कि वह हिंदुश्रों श्रीर मुसलमानों दोनों में सुबुद्धि लावे श्रीर वे एक दूसरे के प्रति घृणा का भाव निकाल कर भाई-चारे का भाव प्रहण करें।

# भाक्रमण होने पर स्त्रियाँ क्या करें

एक बूढ़ी हिंदू स्त्री ने गांधीजी से यह सवाल किया कि अगर कोई उपद्रवी आक्रमण करने आवे व मुसलमान बनाने को धमकावें, तो स्त्रियाँ क्या करें। इसके जवाब में गांधंजी ने कहा कि मजहब किसी आदमी के जीवन की साँम है और चूँकि कोई आदमी किसी के धमकाने या जबरदस्ती करने से माँस लेना नहीं छोड़ सकता, उसी तरह उसे किसी के जबरदस्ती करने से धम नहीं छाड़ना चाहिये। आपने कहा कि हिसा का मामना करने के लिये कोई तैयारी की जकरत नहीं है? उस हालत में सबसे सहज उपाय स्वयं अपनी जान दे देना है। उस दशा में आक्रमणकारी क्या कर सकेगा और उसके मन में भी ग्लानि होगी।

यह पूछे जाने पर कि स्त्रियाँ अपने पास हिथयार रखें या नहीं, गांधीजीने कहा कि हिथयार रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। जैसे स्त्री हिथयार चलाकर अपनी रहा करने का साहस कर सकती है, वह बिना हिथयार के भी अपनी रहा कर सकती हैं। किर एक सत्याप्राही हथियार रखने की मलाह कैसे दे सकता है। जिनमें साहस ही नहीं है, वह हथियार रखकर भी आकम- एकारी का सामना नहीं कर सकता। वास्तिक उपाय नो अपने में साहस लाना है और यदि किसी में माहस है, तो वह बिना हथियार के भी आकम-एकारी का सामना कर सकता है। सत्याप्रही तो अपने आत्म- बल से आकम- गकरी पर विजय प्राप्त करेगा और यदि उसमें वह सफल न होगा, तो अपने

प्राम्य का त्याग कर देने का सहल नुम्का उसके पास तो सदा रहेगा ही।

यह पूछे जाने पर कि क्या आपकी मलाह यह होगी कि धाक्रमणकारी द्वारा हमला होने पर क्या किसी के लिये यही उचित होगा कि आस्म-समर्पण करने की अपेचा वह अपना प्राण है है। गांधीजी ने कहा कि—िनस्मंदेह किसी खी के लिये यही उचित है कि वह आत्म-समर्पण करने की अपेचा स्थयं अपनी जान दे है। जान किस तरह से दी जाय. इस सम्बंध में गांधीजी ने कुछ नहीं बताया।

यह पूछने पर कि अगर ऐसी स्थित आ जाय कि चाहे आक्रमण्यारी की जान ते तें और चाडे अपनी जान दे दें, उस दशा में आप कौन सी बात पमन्द करेंगे, गांधीजी ने कहा कि उस दशा में में ते इसरे की जान नेनें की अपेचा अपनी ही जान देना पमन्द करेंगा।

# **ऋमीशापाड़ा**

#### [१ फरवरी]

नौत्राखाली के एक-एक गाँव में एक-एक दिन रहकर दौरा करते हुए महात्माजी को आज एक महीना पूरा हुआ। आज आप नवात्राम से अमीशापाड़ा गये। नवात्राम से अमीशापाड़ा का तीन मील का मार्ग आपने १। घण्टे में समाप्त किया। आप श्री भारतचन्द्र लोध के मकान पर ठहरे।

त्राज को यात्रा में गांधीजी के साथ एक डाक्टर भी थे। गांधीजी अमीशापाड़ा पहुँचने पर डाक्टर से मजाक में कहा कि मैं १२५ साल तक जीना चाहता हूँ, तो क्या आप उसके लिये कोई नुस्ला बता सकते हैं। डाक्टर ने कहा, आप कुछ दिन कलकत्ते में रहकर अपना स्वास्थ्य सुधारिये। गांधीजी ने कहा कि यह कैसे सम्भव है।

श्रमीशापाड़ा में गांधांजी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये बहुत लोग श्राये थे। उनमें १०० वर्ष की एक युद्धा भी थी। कमर मुकाये श्रीर लिठिया टेकते हुए वह गांधीजी के कमरे के बाहर तक पहुँच गर्या। उसे देखकर गांधीजी कमरे के बाहर श्रा गये श्रीर उसे श्रपने पास लिवा ले गये। वहाँ श्रापने प्रेम से उसे बैठाया श्रीर उसकी उम्र श्रादि पूर्जी। गांधीजी ने श्रपने गले से एक माला उतारकर युद्धा को पहिना दिया। बुढ़िया गदगद हो गयी श्रीर फूली न समाती हुई चली गयी।

श्रमीशापाड़ा आते हुए गांघीजी रास्ते में बर्म् मयाँ चौकीदार और श्रलीजमन मास्टर नामक दो मुम्लिम व्यक्तियों के मकानों पर कुछ देर रुके थे। दोनों जगह श्रापका फल-फूल श्रीर पान में स्वामत किया गया, जिसे वहाँ उपस्थित लोगों को बाँट दिया।

इस गाँव में जहाँ गांधीजी ठहराये गये थे, ७०० वर्ष का एक प्राचीन मन्दिर था। यहाँ इत सी स्त्रियाँ गांधीजी के दर्शन के लिये एकत्र थीं।

अमीशापाड़ा में गांधीजी से मिलने के लिये आज अनेक प्रमुख लोग आये थे, जिनमें आठ अंग्रेज फीजी अफसर, नोआखाली के अतिरिक्त कलेक्टर मि॰ जमन तथा गांधीजी के एक अंग्रेज मित्र मि॰ होरेस एलेकजेंडर भी थे। ये सभी लोग प्रार्थना में भी सम्मिलित हुए। इन अफसरों में एक आस्ट्रेलियन अफसर भी था, जिसने अपना परिचय देने हुए गांधीजी भें कहा कि मैं एक पत्रकार भी हूँ। गांधीजी ने मजाक में कहा कि पत्रकार लोग तो बड़े भयहूर जीव होते हैं हालांकि मैं भी पत्रकार हूँ। आपने यह भी कहा कि आस्ट्रेलिया तो सफेद चमड़े के लोगों की सम्पत्ति न केवल वर्तमान समय के लिये बिक्क भविषय के लिये भी बन गया है।

श्राज की प्रार्थना सभा विराट थी, प्रायः १४,००० पुरुषीं श्रीर कियों की भीड़ थी, जिनमें ५० प्रतिशत मुमलमान थे। गांधीजी ने श्राज की सभा में भी यह घोषित किया कि "नोत्रा-खाली से मैं तब हदूँगा जब मुफे निश्चय हो जायगा कि सब खोग हिन्दू श्रीर मुसलमान सच्चे दिलों से रहने लगे है। परन्तु मैं लोगों के धोग्वे और बहकावे मे नहीं आऊँगा और यदि देखूँगा कि लोग शान्ति और प्रम के साथ रहने का वादा नोड़कर मुके धोखा दे रहे है, नो मै यही नोआखाली में अपना प्राण दे दूँगा।"

## मुस्लिम श्रापत्तियों का उत्तर

इसके बाद गांधी जी ने कुछ ऐसे लीगों का जिक्र किया, जी प्रत्यच रूप से परचात्तार की भावना प्रकट करते हुए लूट का माल इसिल्यं वापन करने की तैयार है कि उन्हें गिरफ्तार न किये जायाँ। कुछ लीग यह कह रहे है कि लूट का थोड़ा माल लीटाकर वे एकता और प्रेम का प्रमाण देना चाहते हैं। परन्तु में इतने ही से मन्तुष्ट नहीं हूँ। में चाहता हूँ कि जो बुछ भी वे लीग करें, सच्चे दिल से करें। यदि किमी व्यक्ति में परचात्ताप की सच्चा भावना है और वह अपने दोषों का मुधार करना चाहता है, तो उसे विना गिरफ्तारी वगैरह के डर से अपना अपराध खुल्लस-खुल्ला स्वीकार करना चाहिये और जो उसमा नतीजा हो, उसे भोगना चाहिये। परन्तु मेरा विश्वास है कि उस दशा में अपराधी को लोग समा कर देंगे और पुलिस भी कोई कार्यवाई उनके खिनाएन न करेगी।

पिछले दिन की प्रार्थना सभा में एक गील प्री द्वारा यह एतराज किये जान पर कि गांधीजी को इस्लाम के सम्बंध में कुछ कहने का ऋधिकार नहीं है, गांधीजी ने कहा कि मुक्ते अपनी सारी जिन्दगी में हिंदुस्तान में और दूसरे देशों में भी मुसलमानों के बीच रहने का और उनके रिवाजों के सम्बंध में अपना मत प्रकट करने के कितने ही अवसर मिले हैं, परन्तु कभी किसी मुसलमान ने इस नरह की आपत्ति नहीं उठायी।

परदा प्रथा छोड़ने के सम्बंध में अपने कथन का जिक करते हुए गांधीजी ने कहा कि परदे की प्रथा विभिन्न देशों में भिन्न प्रकार की है और उस दिन मैंन इस सम्बंध में कुरान का जो उल्लेख किया था, उसमे यह कहा था कि कुरान में इसका कोई जिक नहीं है। मेरा यह विश्वास है कि इस्लाम ऐसा धर्म नहीं है कि उसके सम्बंध में किसी अन्य की अपना मत प्रकट करने की मनाही हो। यह बात इस्लामी शिचा के विकद्ध है।

गांधीजी ने आगे वहा कि उक्त मौलवी ने शम और रहीम तथा कृष्ण और करीम के नामों का साथ-पाथ उल्लेख पर भी एतराज किया था और कहा था कि इससे इस्लाम का अपमान होता है आपने कहा कि इससे मोलवी का अज्ञान ही प्रकट होता है। मालूम होता है कि वह यह समभते हैं कि राम और कृष्ण कोई साधारण मनुष्य रहे होंगे। उन्हें शायद यह पता नहीं कि राम और कृष्ण ईश्वर के ही नाम है। मनुष्य ईश्वर का ध्यान विभिन्न नामों से करता है और कुराज इसके विरुद्ध नहीं है और न इससे इस्लाम का अपमान होता है। धार्मिक मनुष्य का लच्चण यह है कि उसका हृदय शुद्ध हो। जो लोग दूसरों की जायदाद लुदने है, दूसरों की हत्या करते हैं और उसके साथ ही खुदा, का नाम भी लेते है, उन्हें धार्मिक या मजहब पर चलने वाला आदमी नहीं कहा जा सकता।

नोच्चाखाली में रखी गयी फौज इन दिनो हटा ली गयी थी।

सैनिकों के हटाये जाने पर उनका श्रफसर श्रमीशापाड़ा में गांधीजी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये श्राया था। श्रमीशापाड़ा में गांधीजी से मिलने के लिये ब्रिटिश गाइना के 'लेबर एडवांकेट' नामक पत्र के सम्पादक मि० श्रायृब मोहम्मद एमेल भी उनकी पत्री के माथ श्राये थे। इसके श्रितिरक्त हिन्दू सिक्ख संरच्चक बोर्ड के मंत्री श्री बी० जोशी. सीमा प्रान्त के सरदार गणेश सिंह श्रौर नोश्राखाली के सैयद मोहम्मद तजम्मुल हैदर चौधरी, मि० नफीजुल हैदर चौधरी श्री गांधीजी से मिले थे।

## लूटे हुए माल की वापसी

स्थानीय एकता बोड के अध्यक्त मौलवी लतीफुर्रहमान की अध्यक्तता में एक डेपुटेशन अमीशापाड़ा में गांधीजी से मिला और पिछने उपद्रवों के दिनों में खूटा गया माल वापस करने का प्रश्न गांधीजी के सामने रखा गया। यह कहा गया कि जिन कुछ गरीबों ने पिछली खूट-पाट में हिस्सा लिया था, वे अब जो कुछ माल उनके पास बचा है, उसे लौटाने को तैयार हैं।

नोत्राखाली के त्रांतिरिक्त कलेक्टर मि० जमन ने यहाँ एसोितएटेड प्रेस के प्रतिनिधि से बातें करते हुए कहा कि शरणार्त्रियों के लिये जिस नमूने का मकान मैंने बनवाया था, वह गांधीजो को पवन्द नहीं आया, इसिलये मैं अब एक दूसरे उन्न का मकान बनवा रहा हूँ और मेरा ख्याल है कि वह मकान गांधीजी को पसन्द आयेगा।

# सतघरिया

#### [२ फरवरी]

महात्मा गांधी श्रमीशापाड़ा से श्राज सबेरे सतघरिया पहुँचे। श्राज का रास्ता बहुत घुमाव का था, इसलिये श्रापको ८० मिनट का समय उसे समाप्त करने में लगा। ८ वजकर ४० मिनट पर श्राप सतघरिया पहुँचे।

सतविष्या जाते समय गाधीजी को रास्ते में एक स्थान मिला, जहाँ के सभी मकान जलाकर भस्म कर दिये गये थे और सिर्फ राख का ढेर दिखायी देता था। एक मकान के ९ श्रादमी मार डाले गये थे। जो लोग बच गहे थे, वे श्राँखों में श्राँसू भरे गांधीजी के सामने श्राये। गांधीजी ने उन्हें सान्त्वना दी और कहा कि रोना मनुष्यों का काम नहीं है। धैर्य और साहस से काम लेना चाहिये श्रौर वीरता के साथ श्रायी हुई विपत्ति का सामना करना चाहिये।

सत्विरिया पहुँचने पर गांधीजी की नोश्राखाली यात्रा का द्वितीय चरण समाप्त दुआ। दौरे के द्वितीय चरण में आपने नांश्राखाली जिले के प्रत्येक गाँव में पैदल जाने का क्रम आरम्भ किया था और एक गाँव में एक दिन आप रहते थे। परन्तु जैसा कि निक्रले किसी पृष्ठ में कहा गया है, गांधीजी ने यह महसूम किया कि केवल एक दिन एक गाँव के लिये बहुत कम

होता है, न तो आप सभी इच्छुक लोगों से गिल पात है और न सब काम अपने सन्तोपानुसार समाप्त कर पात हैं, अतः आपने यह निश्चय किया था कि अब आगे आप एक गाँव में दो दिन रहा करेंगे। उसी निश्चय के अनुसार आपने सतधिरया पहुँच कर एक गाँव में एक दिन रहने का क्रम समाप्त किया और दूसरे साधूरिक्ल नामक गाँव में आप दो दिन रहे, यद्यपि इसे आपने अभी नियम का रूप नहीं दिया और निश्चय यही किया कि जहाँ आप आवश्यक समकेंगे वहाँ दो दिन ठहा जयँगे और जहाँ नहीं समकेंगे नहीं ठहरेंगे। दोरे के द्वितोय चरण में आप अमेसत रूप से एक घएठे में तीन मील चला करते थे।

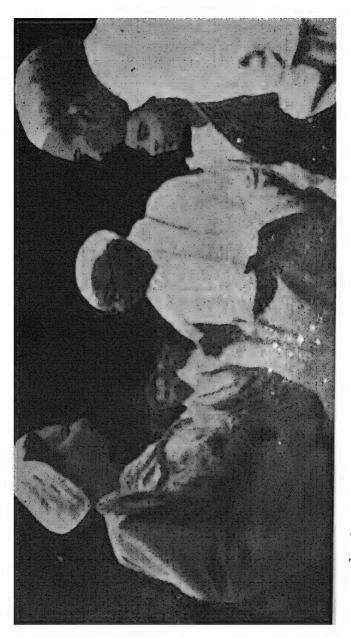
सतघरिया की प्रार्थना सभा में भाषण् करते हुए गांधीजी ने मुस्लिम लीग के अभी हाल में कराची में पास किये गये प्रस्ताव पर अपना मन प्रकट किया, जिसमे लीग के विधान सम्मेलन में सम्मिलित न हांने का निश्चय काँग्रेस पर तीन्न आचेप करते हुए किया गया था। गांधीजी ने कहा कि लीग काँग्रेस की अखिल-भारतीय कमेटी द्वारा पिछले पास किये गये प्रस्ताव को गैर, इमानदारी का प्रस्ताव नमभती है और उतन कहा है कि काँग्रेस ने जो बात प्रस्ताव में कही है, वह वास्तव में उसकी नियत में है नहीं। साथ ही लीग ने यह भी कहा है कि विधान रूम्मेलन का चुनाव जायज नहीं है।

गान्धीजी न कहा कि अगर लीग यह सममती है कि विधान सम्मेलन का चुनाव श्रीर उनकी कार्यवाही जायज नहीं है, तो उसके लिये जीधा सार्ग यह है कि वह इसका फैसला श्रदालन में करावे। नहीं तो, उसके इस आरोप का कोई अर्थ नहीं है। आपने इस बान पर खेद प्रकट किया कि लीग काँग्रेस की गेर-ईंगानदार सममती है। एक का दूसरे को बेईमान सममता यही अनुचित बान है और यह दोनों महान मंग्थाओं के लिये शोभा की वात नहीं है। जनना को भी यह नहीं समम्भना चाहिये कि काँग्रेस और लीग एक दूसरे की दुइमन है। राजनीतिक भगड़ा केंबल इन दो संग्थाओं के बड़े-बड़े लोगों में ही सीमित रहना चाहिये और गाँवों के लोगों में नहीं पहुँचना चाहिये, क्योंकि यदि बह गाँवों में पहुँचा, तो वह अत्यन्त दिनाशकारी होगा।

महात्माजी ने आगे कहा कि मुस्लिमलोग की विधान सम्मेलन में शा मेल होना चाहिये और उसमें उपस्थित प्रतिनिधियों के सामने अपना पक्ष उपस्थित कर उन्हें अपने मत में लाना चाहिये। परन्तु यदि वह ऐसा नहीं कर सकती और विधान सम्मेलन में जाना ही नहीं चाहती, तो उसे शान्ति के साथ प्रतीक्षा कर सम्मेलन की मचाई तथा ईमानदार्ग की परीक्षा लेनी चाहिये और देखना चाहिये कि विधान सम्मेलन मुस्लिम समस्या का किस प्रकार इल करता है। लीग का यह कहना ठीक नहीं है कि विधान सम्मेलन में केवल सवर्ण हिन्दुओं के प्रतिनिधि हैं। उसमें परिगणित जातियों, ईसाइयों, पारसियों, एंग्लोइंडियनों, सिक्खों आदि सभी सम्प्रदायों के प्रतिनिधि हैं। यह बड़ी उत्तम बात है कि डा॰ अम्बेदकर भी सम्मेलन में

सिम्मिलित हो रहे हैं। मुस्लिम लीग ने अपने प्रस्ताव में जो कहा है कि ब्रिटिश सरकार को चाहिये कि वह विधान सम्मेलन भक्क कर दे, उस सम्बंध में गान्धोजी ने कहा कि ब्रिटिश सरकार अपनी योजना तथा घोषणा को अमल में लाने के लिये वाध्य हैं और मुक्ते आशा है कि वह अपने वचन से हटेगी नहीं।

प्रार्थना से लौटते समय गान्धीजी हरगोबिन्दपुर गाँव में करीमबस्श मियाँ नामक एक मुस्लिम सज्जन के मकान पर गये। वहाँ गान्धीजी का म्वागत सन्तरे इत्यादि से किया गया, जिसे आपने वहाँ उपस्थित बच्चों को बाँट दिया। इसके बाद आप कुमारी मनु गांधी के साथ करीमबस्स के मकान के अन्दर गये और यह सलाह दी कि बच्चों को साफ-सुधरा स्सना चाहिये।



प्राथेना के बाद हेम बग्रहों में रेड क्रोंस केन्द्रका श्रीमती खलेक्जेंडर से गांधीजी बात कर रहे हैं

# साधूरखिल [३फरवरी]

# गान्धीजी को मुसलमानों का मान-पत्र

सतर्घारया से महात्मा गान्धी आज प्रानःकाल सादे आठ वज साधूरीखल नामक गाँव पहुँचे। यह गाँव सतघरिया से गान मील पर है। साधूरिखल आने समय गांधीजी के साथ बहुत लोगों की मीड़ आयी और वे सब माँम तथा करताल के माथ रामधुन गातें हुए आये। गांधीजी यहाँ श्री यशोदापाल के मकान पर ठहरे और दो दिन रहे। साधरिखल पहिला गाँव है. जहां गांधीजी दो दिन रहे।

यहाँ महात्माजी को उपद्रव-पीड़ितों की सहायता के लिये 50,000 रुं एक कारखाने से मिले और १०,000 रुं महाराज मोरवी से प्राप्त हुए। सहायता के लिये मिलने बाले रुपये, गांधोजी लोगों की खेती तथा अन्य पेशों के श्रीजार इत्यादि, देने में खर्च करेगे।

साधूरियल गाँव मे हिन्दुओं की संख्या पहिले ही से बहुत कम थी, किन्तु पिछले उपद्रवों के बाद यहाँ हिन्दू नहीं के बरान बर है। साधूरिखल में एक बड़ी महत्वपूण बात हुई, जो नोद्याखाली जिले के दोरे में अपने ढङ्ग भी प्रथम घटना थी। यहाँ की प्रार्थना सभा एक मुसलमान सज्जन सलाम उल्ला साहव के मकान पर हुई थी, जिसके लिये सलाम उल्ला साहब ने गान्धीजी से विशेष रूप से प्रार्थना की थी कि आज की प्रार्थना मेरे गरीबलाने पर की जाय। उन्होंने यह आश्वासन भी गांधीजी को दिया था कि रामधुन वाली यजाकर गाने पर मुसलमानों की आर से कोई एतराज नहीं किया जायगा। गांधीजी ने बड़ी प्रसन्नतों से यह प्रस्ति विश्वासन करें लिया और प्रार्थना सभा इन्हीं के मकान पर हुई।

प्रार्थना के बहुत पहिले से बहुत मुसलमान क्षकता हुए थे। प्रार्थना के बहु गान्धीजी की सुमलमानों की स्रोर से मान-पत्र में गांधीजी के प्रति सम्मान प्रकट करते के स्रविरिक्त कुछ अन्य प्रश्नों का मां उल्लेख किया गया था जैसे कि मरिजद के सामने याजा, गोहत्या दृत्यादि। इधर पिछले कई दिनों से प्रार्थना समामों में मुसलमानों का स्रोर से गांधीजी से कुछ प्रश्न पूछे जाते थे। प्रश्न प्रायः एक दी किम्म के दोते थे, जिनमें यह पूछा जाना था कि गांधीजी को इस्लाम के सम्बंध में कुछ कहने का क्या श्रिकतार है। उसी दृद्ध की कुछ बात स्राज के मान-पत्र में भी उठायी गयी।

गान्धीजी ते महितद के सामने बाजा बजाने में दिन्दुओं के अधिकार और मुसलमानों के गोकशी करने के अधिकार के सम्बंध में कहा कि ये प्रश्न कानून में सम्बंध रण्यते हैं, जिनके बारे में में कुछ नहीं कहना चाहता। मैं तो केवल एक बात जानता हूँ और वह यह कि दिन्दू और मुसलमान सब एक-दल हो जाय और एक दूसरे के विकद्ध जो भावनाएँ उनके दिलों में है उन्हें निकाल दें। अगर यह बात हो जाय, तो बाजा, गोकशी खादि के सब सवाल आप से आप हल हो जायेंगे। जब तक

दोनों के दिल' एक नहीं होते, तर्घ तक ये कराई बैराबर बने रहेंगे। और यह बम्किस्मती दोनों को हैंमेशा गुलाम बनाये रहेगी।

गान्धीजी ने आमे कहा कि बदला लेने की भावनी दिलों से निकाल देनी चाहिये। बादशाह खाँ ने पठानों के दिलों से यह भावना बहुम कुछ निकाल दी है, जो कि पठानों के पुरेत-दर-पुरन से चली आ रही थी और उनमें अहिन्सा की भावना भर दी है। में चाहना हूँ कि वहीं भावना नोआखाली के लोगों में भी भर जाय। अगर औप लोग सच्चे दिल से यह विश्वास नहीं करते कि बिना विभिन्न सम्प्रदायों के बीच असली शक्ति और प्रेम के न तो पाकिस्तान हो सकता है, और न हिन्दुसान ते यह सुलामी हमेशा आपके पल्ले पड़ी रहेगीं और उसे हालत में न प किस्तान हो सकेगा और न हिन्दुसान ।

गांधीजी ने कहा कि चार मुस्लिम युंचक मित्र मैरे पासं त्राये थे, जिन्होंने इस बात पर खंद प्रकट किया कि नोधालाली श्रीर ज्यास-पास के स्थानों में हुई हत्यात्रों की संख्या तो बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बतायी गयी है, उसे मैंने गलत क्यों नहीं कहा है श्रीर हत्याश्रों की ठीक संख्या क्यों नहीं वर्तायी है। मैंने उनसे कहा कि यह मैंने इसलिये नहीं किया है क्योंकि मैंने अपनी श्रीलों से जो खुछ देखा है, उस सबकों मैं प्रकट नहीं करना चाहता। पर अगर मेहे कहने से बात बनती हो, तो मैं यह कह सकता हूँ कि पहाँ हुई हत्यात्रों की जो संख्या थें, ०० बतायी गक्की है। उसके समर्थन में मुक्ते कोई प्रमाण नहीं मिला है।

हत्याओं की संख्या निम्तन देह इससे बहुत, कम है। मैं यह स्वीकार करने को तैयार हूँ कि बिहार में जितनी हत्याएँ हुई हैं खोर जैसी करिताएँ वहाँ की गयी हैं, उन्हें देखते हुए नोज्ञाखाली पीछे पड़ जाता है। परन्तु इसके साथ ही मैं यह नहीं कह सकता कि यहाँ से छाधिक सेवा मैं बिहार जाकर कर सकता हूँ। बिना स्वयं ध्वपने विश्वार के और किसी के कहने मात्र में मैं विहार नहीं जा, सकता।

अपने भाषण के अन्त में गांधीजी ने अपने सम्बंध में और अपने कार्यों के सम्बंध में भी कुछ वातें कहीं। आपने कहा कि गोधाखाली में रहकर यह दिखाना चाहता हूँ कि सच्चा पाकिस्तान स्थापित होते पर क्या किया जा सकता, है। हिन्दुस्तान में बङ्गाल एक ऐसा प्रान्त है जहाँ यह दिखाया जा सकता है। बङ्गाल न बड़े प्रतिभाशाली हिन्दू और बड़े प्रतिभाशाली मुसलमान उत्पन्न किये है और बङ्गाल न राष्ट्रोय संग्राम में बहुत बड़ा योग दिया है। अतः बङ्गाल के लिये यह उचित ही है कि वह दिखा दे कि हिन्दू और मुनलमान किस प्रकार एकता तथा प्रेम से एक साथ रह सकते हैं।

श्राथना के बाद गांधाजी माधारणतया टहलने के लिये निकल और इस समय में आपने कई जुलाये तथा नष्ट किये गांधे मकाना को देखा। रात में भी आप कुछ लोगों से मिले और साथ ही कुछ आये हुए पत्रों के उत्तर लिखवाये।

्रदूसरे दिन गांधीजी साधूरिक्ल में ही रहे। इस दिन प्रातःकाल टह्लने जाते समय श्रमीन उल्ला नामक एक मुस्लिम सज्जन ने गांधीजी की अपने घर श्राने का श्राप्तहः किया, जिसे श्रापने सहर्ष स्वीकीर किया।

यशोदापाल के मकान पर कार्य-कर्ताश्चों को उपदेश देते हुए गांधीजी ने कहा कि श्रपने को पूर्ण रूप से ईश्वर के हाथों में सोपकर श्रपन श्रन्दर निर्भी हता 'उत्पन्न करनी चाहिये। ईश्वर के हाथों में श्रात्मसमर्पित करने में ही मनुष्य में निर्भी-कता श्राती है। श्रपना श्रादश ऊँचा बनाये रखने के लिये लोग मृत्यु का भी निर्मीकता के साथ श्रालिंगन करते हैं। किसी भी परिस्थित में भी श्रपना श्रादर्श नहीं छोड़ना चाहिये। यही वैयक्तिक साहस है। यही श्रात्म-मन्मान है। बिना इन बातों के जीवन व्यर्थ है।

गांग्धीजी ने नांश्राखाली के श्रापन कार्य के सम्बन्ध में प्रोध जंद सीट कुमारच्या को एक पत्र लिखते हुए लिखा कि—'मैं यहाँ श्रंपने जीवन का सबसे कठिन कार्य कर रहा हूँ। मेरी राय में जो लीग देश का काम कर रहे हैं, 'वे श्रंपने श्रंपने चेत्रों में ही श्रंपिक लगन से 'वाम' कर मेरे यहाँ के कार्य में सबसे बड़ी सहायता पहुँचायेंगे। श्रंपने जो श्राम-सुधार का काम उठाया है उससे तो मेरे यहाँ के काम में बड़ी भारी सहायता मिलेगी, क्योंकि में यह जानतां हूँ श्रीर यहाँ एक गाँव से दूसरे गाँव जाकर मेंने यह देखा है कि प्रामीगों में काम करना, उन्हें सफाई से रहने की वर्त सिखाना श्रीर चरखा तथा करघा चलान के लिये प्रोत्साहित करना ही देश का जास्तिवक तथा सबसे बड़ा काम है।

# श्रीनगर

## ४ फर्बरी

# वर्तुमान राजनीतिक परिस्थिति पर गांधीजी का मत्

्रसाधूरिखल में दो दिन रहने के बाद महात्माजी ने आज ठीक साढ़े सात बजे अगले गाँव श्रीनगर के लिये प्रस्थान किया और ४० मिनट में दो मील का मार्ग चलकर आप के बजकर १२ मिनट पर श्रीनगर पहुँचे।

गान्धीजी धान के खेतों के अन्दर बनाये गये सक्ते से होकर चुत्ते थे। जिसे स्वयंसेवकों ने रातोंग्रात बनाया था। श्रीनगर में आपु श्री चन्द्रकुमार व्यापारी के मकान में दहरे।

महात्माजी ने आज की प्रार्थना-सभा में कुछ मुसलमाना हारा-पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देते हुए देश की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति पर अपना मृत प्रकट किया।

मुसलमानों के प्रश्न इस प्रकार थे—आपने प्रश्नों से कहा है कि ज़िन प्रान्तों में साहस और चमता हो, वे अपना विधान स्वयं बनावें और साथ ही आपने बिटिश सेना से चलें जाने को भी कहा है जिससे स्वाभीनता की प्राप्त प्रमाणित हो। अतः प्रान्तों में जो कि अपने को स्वतन्त्र घोषित करेंगे, महाभिकार का आधार क्या होगा ? क्या साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणाली के स्थान पर संयुक्त निर्वाचन प्रणाली जारी की जाय ? क्या प्राम्हीय

गात्थीजो ने इस अश्नीं के उत्तर में कहा—कोई भी प्रान्त अपना विधान स्वयं बना सकता है, संगर वह अत्याधिक बहुमत के द्वारा ही बनाया जो सकता है। केवल एक वोट के बहुमत से नहीं । उन लोगों को स्थतं नर्जता प्राप्त फरने से संसार की कोई भी शिक्त नहीं गेक सकती जो अपने विरोधियों को मारने को नहीं बल्क उनके द्वारों अपने को ही मारे जाते के लिये तैयोर हों। यह मेरा मत सन् १९१९ से है। ब्रिटिश मन्त्रि-दल की घोषणों का यही उद्देश्य है जहाँ तक मैंने उसे समकत है। किसी प्रान्त की उनकी इच्छा के विरुद्ध चलने को मजबूर नहीं किया जो सकता। जो बात एक प्रान्त के लिये लागू हैं, वहीं सभी प्रान्त के लिये हैं।

मनाधिकार के सम्बंध में गांधीजी ने कहा कि मैं तो बालिंग मताधिकार का पत्तपाती हूँ। २१ साल या १८ साल ही की उस्र के समस्त पुरुषों और श्रियों को बांट देने का अधिकार होना चाहिये। परन्तु मेरे सहश बूढ़ों को बांट देने के अधिकार का कोई उपयोग नहीं है। उनसे कोई लाभ नहीं है। भारत और समस्त संसार को अब उन ब्हों से क्या करना है, जो मृत्यु के मार्ग पर पाँच रखे हुए हैं। अतः मेरी राय में ४० वर्ष की आयु के बाद के लोगों को बांट देने का अधिकार नहीं होना चाहिये। इसी प्रकार सनकी लोगों और लफंगों को भी मताधिकार नहीं होना चाहिये। इसके साथ ही साम्प्रदायिकता के आधार पर

वोटाधिकार नहीं होना चाहिये, बल्कि संयुक्त निर्वाचन प्रणाली होनी चाहिये, जिसमें कुछ-सीटें रिजर्व रहें मगर किसी सम्प्रदाय के लिये—मसलन, मुसलमानों, सिक्खों, पार्मियों आदि को कोई पत्तपात या विशेष सुविधा नहीं होनी व्याहिये।

गांधीजी ने पश्नों के उत्तर में अहिंसा, पर जार दिया। आपने कहा कि स्वतन्त्र भारत अहिंसा पर, चलकर ही अपनी स्वतन्त्रताचनाये रख सकता है। यह समभना भारी भूल होगी कि तलवार के जोर से अंग्रेजों को हिंदुस्तान से हटाया जा सकता है। अंग्रेजों के साहस और दृढ़ निश्चय, के गुण का बहुतों की पता नहीं है। वे तलबार के आगे सिर नहीं भुका सकते. पर साथ ही अहिंसा के सामने भी वे नहीं ठहर सकते। अहिंसा से बढ़कर किसी में भी शक्ति नहीं है और अगर हिंदुस्तानियों को अभी तक असली आजादी नहीं मिला है तो उसका कारण यही है कि अभी पर्याप्त अहिंसा की भावना उनमें नहीं आरी है। जितनी भी अहिसा हमारे देश के लोगों में आयी है, उसी का यह प्रभाव है कि अंग्रेज यहाँ से हटने को तैयार हो गये हैं।

## धरमपुर

#### [६ फरवरी]

महात्मा गांधी नोत्राखाली जिले की अपनी पैदल यात्रा के ३१वें गाँव धरमपुर में आज सबेरे पौन नो बजे पहुँचे। धरम-पुर श्रीनगर के लगभग तीन मील पश्चिम में है श्रीर इसमें अधिकौंश श्रवादी मुसलमानों की दै।

श्रीनगर से लेकर धरमपुर का मार्ग खूब सजाया गया था। जगह-जगह फाटक बनाये गये थे, जिन पर 'बापूजी स्वागतम्', 'वन्देमातरम्', 'जय हिंद', 'हिन्दू-मुस्लिम एक हों' इत्यादि वाक्य लिखे हुए थे। एक फाटक पर श्रंप्रेजी में 'स्वागत' लिखा था, जिसे गांधीजी ने नापसन्द किया।

रास्ते में महात्माजी केवल एक मकान पर ठहरे, जो एक मुस्लिम सज्जन असगर भृइया का था। यहाँ वर प्रेम से आपका स्वागत किया गया और सन्तरे आदि फल भेट किये गये, जो तुरन्त ही बचों के हाथों में पहुँच गये। यहाँ पर सिकन्दर भृइया नामक एक मुसलमान ने गांघीजी से बड़ा मनोरञ्जक प्रश्न किया। उन्होंने एक पेड़ की एक डाली गांघीजों को दिखायी, जिसमें दो तरह की पत्तियाँ निकली थीं। उन्होंने पूछा—'बापूजी, यह कैसी बात हैं कि एक ही पेड़ में दो तरह की पत्तियाँ कैसे निकल आयीं ?' गांघीजों ने तुरन्त उत्तर दिया—यह उसी तरह

है जैसे हिंदुस्तान में हिन्दू श्रीर मुसलमान हैं। यह उत्तर सुनकर सब लोग बड़े जोर से हँस पड़े।

धरमपुर की प्रार्थना-सभा में भी महात्माजी से कुछ प्रश्न पूछे गये। आज प्रश्न देश के लिये विधान निर्माण के सम्बंध में किये गये थे। सबसे पहिले नोआखालों में शरणार्थियों को फिर से बसाने और सहायता के काम में संलग्न कुमारी बीणादास एम० एल० ए० ने प्रश्न किया कि क्या दिमार्गी काम करने वालों और शारीरिक परिश्रम करने वालों में कोई अन्तर नहीं है ? गान्धीजों ने उत्तर में कहा कि दिमागी काम भो बहुत महत्व रखता है और जीवन में उसका बहुत बड़ा उपयोग है, परन्तु इसके साथ ही शारीरिक परिश्रम भी सभी को करना चाहिये और कोई भी आदमी इस उत्तरदायित्व से मुक्त होने का दावा नहीं कर सकता।

भारत की स्वाधीनता के सम्बंध में किये गये प्रश्न का उत्तर दंते हुए गान्धी ने कहा कि जब हिन्दुस्तान स्वाधीनता लेने के लिये तैयार हो जायगा, तो न तो श्रंप्रेज लोग, न राजा लोग श्रोर न श्रनेक शक्तियाँ मिलकर भी उसे स्वाधीनता लेने से रोक सकतो हैं। यह पूछे जाने पर कि जो प्रान्त स्वतन्त्रतः च।हें उनके लिये किन प्रकार के विधान की सलाह श्राप देते हैं, गान्धीजी ने कहा कि समस्त भारत के लिये स्वाधीनता समान रूप की होगी।

प्रत-अगर भारत के एक दूसरे से जुड़े हुए प्रांत स्वाधीनता की घोषणा नहीं करते और द्वितरे हुए अलग-अलग प्रान्त ही म्बाधीनना घोषित करते हैं, नो क्या सङ्घ में सम्मिलित न होने वाले प्रान्त सामान्य हिन के मामले में शेष प्रान्तों के लिये कठि-नाई नहीं उपस्थित करेंगे ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महात्मा गान्धी ने कहा कि इसमें तो मुफे कोई कठिनाई नहीं दिखायी देती यदि समाज का रूप अथवा आचरण वही हो जिसकी मैं कल्पना करता हूँ, अर्थात् वह अहित्सा का अनुगामी हो । मान लीजिये कि विशाल आबाटी वाला बङ्गाल अपने प्रतिभावान टैगोरों और सहरावर्दियों को लेकर म्वाधीनता के आधार पर अपना विधान बनाता है और अफ मची आसाम पीनक लेना है. उड़ीसा अपने कंकालों को लेकर उसमें अलग रहना चाहता है तथा बिहार अपने कुटुम्बियों की हत्या में सलग्न रहता है, तो ये तीनों प्रान्त बङ्गाल से प्रभावित होंगे और उसके साथ आ जायँगे।

प्रश्न—मान लीजिये कि प्रान्तों का 'ए' समूह अपने लिये समान विधान बनाता है, तो क्या जो प्रान्त 'बी' अपीर 'सी' दल के रहेंगे, वे भी 'ए' दल में सम्मिलित हो सकते हैं यदि वे चाहें?

उत्तर—इमके तो कहने को आवश्यकता ही नहीं है कि यदि 'ए' समृह अच्छा विधान बनाता है, तो न केवल 'बी' और 'सी' समृहों को 'ए' में शामिल होने का अधिकार रहेगा बल्कि वे स्वतः उसकी और खिंच आएँगे।

# प्रसादपुर

## [ ७ फरवरी ]

महात्मा गान्धी धरमपुर से छाज प्रात:काल = वजकर १० मिनट पर प्रसादएर पहुँचे। छाप यहाँ श्री उपेन्द्र मजूमदार के घर में ठहरे।

गान्धीजी ने प्रमाद्युर की प्रार्थना-सभ। में शरणार्थियों को फिर से बसाने और उन्हें जीविका-उपार्जन के प्रबन्ध के प्रश्न का एक बार फिर इल्लेख किया। आज की प्रार्थना में दंश के श्रपंत-श्रपन चेत्र में काम करनेवान प्रधान कार्य क्रती ख़ौर गान्धीजी के प्रिय-पात्र मेजर जनग्ल शाहनवाज शामिल थे। सर्ताशचन्द्रदास गुप्त, कुमारचन्द्र जन आदि भी उपस्थित थे। श्रीमती बेला मित्र ने अपने मधुर कण्ठ से भजन गाया । गान्धीजी न कहा कि एक ध्यावहारिक आदर्शवादी की हैसियत से मैं पह नहीं चाहता कि शरखार्थियों की जीविका श्रादि की कोई ध्यवस्था के बिना में उनसे अपने गाँवों में बापस श्राने के लिये जोर हूं। उनके घापस श्राने के पहले यह प्रवन्ध होना चाहिये कि एक नहीं अलेक प्रकार के धन्धे उनके लिये रहें श्रीर दे तो घत्धा चाहें बुद्ध करें। श्रीर यदि कोई शरखार्थी शारीरिक रूप से काम करने के योग्य होते हुए भी काम करने से इन्कार करे, तो सरकार उससे छह सकती है कि एक महीन की नोटिस देने के बाद सहायता नहीं दी जायगी।

श्रापंत कहा कि यदि प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह सुविधा हो कि वह अपने मन चाहे ढङ्ग से आराम के साथ जिस तरह से सुविधा हो रह सके तो यह संसार उस दशा में स्वर्ग ही हो जाय। परन्तु यह सम्भव नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने कुटुम्बियों की उदर-पूर्ति के उत्तरदायित्व को यहन करना ही होगा। जो लोग अपने इस उत्तरदायित्व को यह कि करता ही होगा। जो लोग अपने इस उत्तरदायित्व को मार हैं। यह ठीक है करते, वे समाज के लिये, पृथ्वी के लिये भार हैं। यह ठीक है कि नोआवाली के शरणार्थी इस समय विपत्ति के मारे हैं, उनकी चुद्धि ठिकाने नहीं है और असहाय अवश्या में है। परन्तु जो देवी विपत्ति उन पर आ गयी है, उसका तो अब साहब के साथ उन्हें सामन। करना ही होगा।

शरणार्थियों के प्रश्न पर परामर्श करने के लिये आज गान्धीजी के पास नीश्राखाली के हिन्द्रिक मैजिन्द्रेट श्रुलिस हिन्द्रिक मैजिन्द्रेट मि॰ जमन और श्रुतिरिक्त सुपरिनटेंडेंट पुलिस श्राये थे। गान्धीजी ने इन व्यक्तियों के आगमन और उनसे हुई वार्ता का जिक्क करते हुए कहा कि ये अफसर शरखार्थियों को सहायता देने के मन्द्रन्थ में मेरी राख जानने के लिये आये थे। इस सम्बन्ध में इन खाधकारियों ने यह निश्चय किया है कि शारीरिक श्रम करने जांब शरणार्थियों के लिये सहकों की मरम्मत, प्राम पुनर्निर्माण, अपने ही खेबों की मरम्मत आदि का काम दिया जाय। गान्धीजी ने कहा कि शरणार्थियों को इन कामों से लाभ उठाना चाहिये और सरकार के साथ सहबोग करना चाहिये। आपने कहा कि बिबा शारीरिक परिश्रम किये राशन की आशा करना किसी भी नागरिक के लिये अच्छा नहीं है।

शरणार्थियों के लिये जीविका के प्रश्न पर अपना विचाः प्रकट करने के बाद महात्माजी ने आज फिर इस बात पर जोर दिया कि आप चाहते हैं कि जहाँ तब सम्भव हो सह आपको नोश्राखाली में काम करने के लिये अकेले छोड़ दिया जाय। आपने कहा कि लोग मेरी यात्रा में, मेरे टहलने जाने के समय, प्रायः सभी जगह अधिक संख्या में मुक्ते चेरे रहते हैं। खास कर संध्या समय अपने टहलने के समय मैं चाहता हूं कि मेरे साथ कोई न रहे और यदि कोई रहे भी, तो मेरे साथ के थोड़े से लोग रहें।

बङ्गाल सरकार ने गान्धीजी के साथ तीन पुलिस मेनों की तैनात कर दिया है, जो बराबर आपके साथ रहते है। एक उच्च पुलिस अधिकारी को हिदायत है कि वे गान्धीजी की हिफाजत के लिये बराबर उनके साथ रहें और जहाँ भी वे जाय, पुलिस वाले उनके साथ रहें।

# नन्दीग्राम

#### [ - फरवरी ]

गान्धीजी प्रसादपुर से आज सबेरे साढ़े सात बजे प्रस्थान वर श्रीर एक वण्टा २० मिनट में लगभग तीन मीस का मार्ग तय कर नन्दीप्राम पहुँचे। श्राज की यात्रा में मेजर जनरल शाहनवाज, श्रीमती बेसा मित्र और श्री हरीदास मित्र भी गान्धीजी के साथ थे। मेजर जनरस शाहनवाज दो दिन के लिये गान्धीजी के पास फिर आये थे।

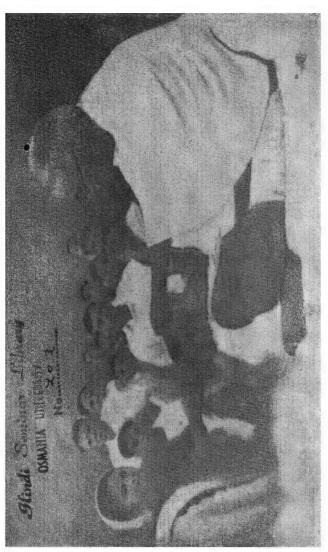
प्रसादपुर सं नन्दीधाम तक रास्ते भर बराबर भजन गाया जाता रहा। भजन और गांधीजी का आगमन सुनकर मार्ग के गाँवों के निवासी-स्त्री-पुरुष और बच्चे श्रपने घरों से बाहर निकल आते थे। कितन ही स्थानों में बूढ़ी स्त्रियों ने गांधीजी को मालाएँ पहिनायीं और श्रपने को धन्य माना।

नन्दीयाम में भी महात्माजी का यह आगमन द्वितीय बार हुआ है। नोआसाली की आरम्भिक यात्रा में भी आप एक बार यहाँ आ चुके हैं।

बङ्गाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यस श्री सुरेन्द्र मोहन कलकत्ते से आज गांधीजी से मिलने नन्दीमाम आये और प्रायः दो घण्टे तक बातें की । वार्ता किस विषय पर हुई यह झात नहीं हो सका। उसी शाम को श्री घोष कलकत्ते वापस चले गये। नंदीप्राम की प्रार्थना-सभा एक खुले मैदान में हुई। सभा में हिन्दू श्रोर मुसलमान दोनों सम्प्रदायों के लोग बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे, जिनमें स्त्रियाँ भी काफो थीं। श्राज की सभा में भी गांधीजी से बुझ प्रश्न किये गये। पहला प्रश्न मुसलमानों द्वारा हिन्दुश्रों के बायकाट के सम्बंध में था। गांधीजी ने कहा कि बायकाट को बात में पहलें भी सुन चुका हूँ श्रोर इस सम्बंध में पहले की कुझ सभाश्रों में श्रपने विचार भी प्रकट कर चुका हूँ। मुक्ते श्राशा है श्रोर में जानता भी हूँ कि यह बायकाट समस्त नोश्राखाली जिले भर में नहीं है। मगर यह बायकाट चाहे थोड़ी ही जगहों में क्यों न हो, यह निश्चित है कि इससे न तो बायकाट करने वालों का कोई हित होगा श्रोर न उन्हीं लोगों का जिनका बायकाट किया जाता है।

दूसरा प्रश्न यह किया गया कि आपके पिछले तीन महीनों की कोशिशों से हिन्दुओं की गनीवृत्ति में कोई परिवर्तन हुआ है? गान्धीजी ने कहा कि इस प्रश्न का उत्तर तो हिन्दू लोग ही अच्छी तगह दे सकते हैं। पग्न्तु जहाँ तक मेरा सम्बंध हैं, में तो यह विश्वास कर अपने को खुश कर ही लेता हूँ कि हिन्दुओं ने कम-से-कम फिलहाल तो अपनी कुछ कायरता तमाग ही दी हैं।

तीसरा प्रश्न किया गया कि आपकी उपिथिति से क्या शान्तिप्रिय मुमलमानों पर इतना प्रभाव पड़ा है कि वे अपने सम्प्रदाय के गुण्डे लोगों के उपद्रव करने पर उनके विरुद्ध खड़े हो सकते हैं और उनका विरोध कर सकते हैं ? गान्धीजी ने इसके



विजयनगर में गांधीजी—प्रार्थना के बाद गांधीजी उन मालाखों का बितरण
 कर रहे हैं जो उन्हें प्रामीणों ने पहनाथी थो।

उत्तर में कहा कि मुमे इस बात से प्रसन्नता हुई है कि प्रश्नकर्ता यह स्वीकार करते हैं कि नोत्राखाली के मुसलमानों में एक ऐसा दल है, जो शान्ति का प्रेमी है। अगर मुसलमानों में ऐसा कोई दल न हो, तो निस्सन्देह यह बड़े ही दुख की बात होती। गान्धीजी ने कहा कि इस प्रश्न का भी मेरा उत्तर वहीं होगा, जो अभी इससे पहले वाले प्रश्न का मैं दे चुका हूँ। अर्थात् यह कि इस प्रश्न का उत्तर अधिक निश्चयता से मुसलमान लोग ही दे सकते हैं, परन्तु मैं तो इतना विश्वास करता ही हूँ कि कितन ही मुस्लम मित्रों पर यह प्रभाव पड़ा है। मसलन, भटियालपुर में ही कई मुसलमानों ने यह घोषित किया था कि व नष्ट किये जाने वाले मन्दिरों की रज्ञा करेंगे। इसके अतिरिक्त मुमे अपनी यात्रा में ऐसे कई दूसरे उदाहरण भी मिले हैं।

त्राज की प्रार्थना सभा में भी मेजर जनरल शाहनवाज थे।
शाम को टहलने के समय गान्धीजी से एक मुसलमान ने अपने
घर आने का आग्रह किया। समय न होते हुए भी गांधीजी ने
उनके मकान पर कुछ देर रुके। मुस्लिम सज्जन ने गान्धीजी से
कहा कि मैं आपकी क्या खातिर कर सकता हूँ। गान्धीजी ने
कहा कि मैं तो और कुछ नहीं, केवल आपका हृदय चाहता हूँ।
गान्धीजी के साथ टहलने में मेजर जनरल शाहनवाज भी थे
और गान्धीजी उनसे वातें कर रहे थे।

# विजयनगर

#### [ ५ फरवरी ]

नन्दीमाम से निर्धारित समय पर प्रस्थान कर महात्मा गान्धी ९ फरवरी को ९ बजे ९० मिनट पैदल चलने के बाद विजयनगर पहुँचे । राम्ते में त्र्याप केवल श्री वसन्त कुमार मजूमदार के मकान पर थोड़ी देर कके, जहाँ कि त्र्याप रशीदपुर गाँव में जान पर ठहरे थे।

विजयनगर में गान्धीजी श्री जोगेश मजूमदार के यहाँ ठहरे श्रोर यहाँ दो दिन रहे।

विजयनगर की भी सभा में गान्धीजो से प्रश्न पूछे गये, जिनके उत्तर आपने दिये। अब इधर कुछ दिनों से प्रार्शनान्सभाओं में यह क्रम-सा चल गया है कि लोग, हिन्दू और मुसलमान दोनों, गांबोजी से प्रश्न पूछा करते हैं और गांधीजी सबकी शङ्काओं का समाधान करते हैं। आज के प्रश्न गाँवों में सहायता-कार्य करने वाले कार्य कर्ताओं के थे। ये लोग आज दिन में गान्धीजी से मिले थे और कुछ प्रश्न गाँवों के स्थानीय कार्य-कर्ताओं की दलवन्दी के सम्बन्ध में लिखित रूप में आपको दिये थे। गान्धीजी आज सोमवार का दिन होने के कारण मौन थे अतः आपने इन प्रश्नों के उत्तर भी लिखित रूप में दिये थे, जो प्रार्थना के बाद सभा में धुनाये गये।

गान्धीजी ने प्रश्नों के उत्तर के आरम्भ में इस बात पर हांभ प्रकट किया कि गांवों में भी दलवन्दी का गेग फैल रहा है। आपने कहा कि यह बड़े ही आफ्योस की बात है कि नगरों की भांति गांवों में भी कार्य-कर्ताओं में पार्टीवन्दी दिखायी दे। यदि दलवन्दी हमारे गांवों के अन्दर भी घुस गयी और कार्य-कर्ताओं में अपनी पदलांलुपता की भावना आ गयी, तो कार्यकर्ता गए। गाँवों की सहायना करने की अपेक्षा उलटे उनकी प्रगति में वाधा पहुँचावेंगे।

प्रार्थना के बाद गान्धीजी संध्या समय टहलने गये। रात में श्रापने यहाँ श्राये हुए अ० भा० राजनीतिक केंदी रिहाई कमेटी के संयोजक श्री हरीदास मित्र से दो घंट तक बातें की। श्री मित्र गांधीजी से मिलने के लिये आये थे। गान्धीजी से बातें करने के बाद श्री हरीदास भित्र ने अपना पूर्व निर्धारित प्रांप्राम मन्सूख कर दिया और किसी महत्वपूर्ण काम से यहाँ से दिल्ली चले गये।

#### ब्रिटिश मंत्रिदल की नीयत में विश्वास

विजयनगर में श्रपनं निवास के दूसरे दिन की प्रार्थना सभा में गान्धीजी ने कुछ विशेष महत्व के प्रश्नों के उत्तर दिये। एक प्रश्न आप से यह किया गया कि क्या यह ठीक नहीं है कि ब्रिटिश मंत्रिदल की दोहरी चाल के कारण ही काँग्रेस श्रौर मुस्लिम लीग में और उसके फल-स्वरूप हिन्दू तथा मुसलमानों में वर्तमान भगड़े फैले हुए हैं?

गांधीजी ने इस प्रश्न के उत्तर में कहा कि मैं ब्रिटिश मंत्रि-दल को दोहरी नीति पर चलने का दोषी नहीं ठहरा सकता। मंत्रिदल ने ईमानदारी के साथ समस्या का हल उपस्थित किया है, जिसे वह न्यायोचित सममता है। मंत्रिदल की घोषणा की खूबी यहीं है कि वह किसी दल को अपनी योजना म्वीकार करने के लिये वाध्य नहीं करता, पर यह जरूर है कि योजना को स्वोकार करने के बाद उसे कार्यान्वित करना लाजिमी है और एक बार उसे स्वीकार करने के बाद कोई दल उससे हट नहीं सकता।

इस तरह से पूर्व में आसाम और पश्चिम में बल्चिस्तान यदि प्रान्तों के समूद में सिम्मिलित होना नहीं चाहते, तो मंत्रिदल की योजना के अनुसार उन्हें समूह में शामिल होने के लिये संसार की कोई ताकत मजबूर नहीं कर सकती। फिर यदि, गांधीजी ने कहा, यह मान भी लिया जाय कि मंत्रि दल एक जाल है, तो काँमेस या लीग उसमें क्यों फँसे ?

# हेमचन्दी

## [ ११ फरवरी ]

विजयनगर के बाद गांधीजी ११ फरवरी को हेमचन्दी गये। हेमचन्दी विजयनगर से दो मील से कुछ दूर पर है, जिसका फासला गांधीजी ने ७० मिनट में तय किया और पीने नो बजे वहाँ पहुँच गये।

विजयनगर से हेमचंदी जाते हुए गांधीजी के राम्ते में जो गाँव पड़े, उनमें ज्यादातर आबादी मुसलमानों की है। रास्ता कुछ जगह शरारती लोगों ने तोड़-फोड़ दिया था, मगर गांधीजी के चलने के पहले कुछ स्वयंसेवक हमेशा आगे से जाकर रास्ता देख लिया करते हैं और उन लोगों ने तोड़े हुए रास्ते को दुरुस कर दिया। रास्ते में गांधीजी केवल एक मकान पर ठहरे, जो श्री शशिभूपण साहा नामक एक सज्जन का था और पिछले उपद्रव में भस्म कर दिया गया था।

हेमचंदी में प्राथंना-सभा गाँव के स्कूल के हाते में हुई। प्रार्थना के बाद गांधीजों ने इस दिनों के क्रम के अनुसार लोगों हारा किये गये प्रश्नों के उत्तर दिये। आपने अपने भाषण में हिन्दू-मुसलमानों के एकता के साथ रहने पर जोर दिया और कहा कि काँग्रेस तथा मुस्लिम लोग में समम्मौता होने का इन्तजार न करके गोवों में हिन्दुओं और मुसलमानों को भाई-भाई की

तरह प्रेम से रहना चाहिये। नोश्राखाली के लोगों को चाहिये कि वे ऐसी एकता दिखा दें कि सारे हिन्दुम्नान के लोग देखकर दङ्ग रह जायं। ऐसी ही एकता यहाँ स्थापित करने के लिये में पूर्वी बङ्गाल में श्राया हूँ श्रीर श्रपनी विशुद्ध श्रहिसा की यहाँ परीत्ता ले रहा हूँ। यदि मेरी श्रहिंसा विशुद्ध है, खरी है, तो उससे वह एकता अवश्य स्थापित होगी। यदि एकता नहीं होती, तो वह मेरी श्रसफलता होगी उसमें श्रहिंसा का दोप नहीं होगा। परन्तु मैं उसका प्रयोग यहाँ श्रपनी शक्ति भर करूगा श्रीर या तो नोश्राखाली में एकता स्थापित करूँगा अथवा यही प्राण दे दूँगा।

एक प्रश्न के उत्तर में गान्धीजी ने कहा कि अगर पाकिस्तान का अर्थ यह है कि मुस्लिम बहुमन प्रान्तों में स्वतन्त्रता केवल मुसलमानों के लिये हैं और इसी प्रकार हिंदू बहुमत प्रान्तों में वह सिर्फ हिंदुओं के लिये हैं, तो ऐमा पाकिस्तान कभी मंजूर नहीं किया जा सकता। खुशी की बात इतनी ही है कि किसी भी मुस्लिम नेता ने और निस्सन्देह कायदेशाजम जिल्ला साहब ने भी पाकिस्तान का ऐमा अर्थ नहीं बताया है।

# काफिलाटाली

#### [ १२ फरवरी ]

### जात-पाँत का मिटना श्रनिवार्य

हेमचन्दी में गान्धीजी ने रेडकास के सहायता केन्द्र का निरीच्या करने के बाद काफिलाटाली नामक गाँव के लिये त्राज प्रस्थान किया त्रीर पौन घएटे में डेढ़ मील का मार्ग तय कर नवा त्राठ बजे त्राप वहाँ पहुँचे। काफिलाटाली में एक कीर्तन मएडला ने गान्धीजी का स्वागत किया। रास्ते में भी एक बङ्गाली मएडली भजन गाते हुए गान्धीजी के साथ थी।

काफिलाटाली में गान्धीजी को एक मुस्लिम सज्जन ने अपने रथान पर शार्थना-सभा करने के लिये निमंत्रित किया था। यह स्थान गाँव के मद्रमा के सामने था। प्रार्थना-सभा में भाषण करते हुए गान्धीजी ने कहा मैं भारत की ऐसी स्वाधीनता चाहता हूँ, जिलमें न कोई करोड़पति हो और न कोई भिखारी रहे, कोई जात-पाँत न रहे, सभी लोग एक जाति के रूप में रहें और पूरी एकता के साथ रहें। सभी चीजें राष्ट्र की रहें और राष्ट्र सबके लिये रहे। इसी प्रकार की स्वाधीनता का स्वप्न मैं देखता हूँ और उसी की प्राप्त में अपना जीवन अपित कर देने की कामना करता हूँ।

यह भाषण गान्धीजी ने परिगणित जातियों के मिले हुए

एक डेपुटेशन का उल्लेख करते हुए किया था। डेपुटेशन के लोगों ने गांधीजी से मिलकर यह चाहा था कि उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाय, जैसा सवर्ण हिंदु श्रों के साथ होता है। श्रापने कहा कि यदि हिंदू जाति जीवित रहना चाहती है, तो जात-पाँत का भेदभाव मिटा दिया जाय श्रोर सभी हिंदू केवल एक जाति के रूप रहें। हिंदू समाज को श्रसंख्य जातियों श्रोर उप-जातियों के भेद ने विभाजित श्रोर जर्जरित बना रखा है। श्रापस के वैमनस्य श्रोर विघटन की सारी जड़ जात-पाँत है। इसी कारण मैंने श्रपने को किसी जाति का समक्षना छोड़ दिया है श्रोर श्रपने को भङ्गी कहता हूं।

दूसरा प्रश्न गांधीजी के सामने यह रखा गया कि नोत्रा-खाली के हिंदुश्रों को फिर से त्राकर वसने के लिके यह आवश्यक है कि कुछ केन्द्र स्थानों में कारखाने खोले जायँ। इस प्रश्न के उत्तर में गांधीजी ने कहा कि मैं इस बात को बहुत ना पसंद करता हूँ कि हिंदू लोग श्रलग केन्द्रों में रहें श्रौर उनके लिये श्रलग कारखाने खोले जायँ। इसका श्रर्थ होगा समस्त देश में जहरीला पाकिस्तान स्थापित करना श्रौर क्रगड़े की जड़ खड़ी करना।

प्रार्थना के बाद गाधीजी से एक अमेरिकन कार्यकर्ता मि० विलियम योडर की अध्यक्ता में रेडकास वालों का दल मिला और यह बताया कि नोआखाली के विभिन्न केन्द्रों में वह क्या काम कर रहा है।

श्रासाम के मनीपुर वालों का भी एक डेपुटेशन गांधीजी

से मिला श्रौर यह शिकायत की कि श्रासाम एसेम्बली में उन लोगों के प्रतिनिधि श्रलग से भेजे जाने चाहिये, जो मनीपुर वालों के हितों की रक्षा करें क्योंकि उनकी श्रपनी श्रलग संस्कृति है, श्रलग धर्म है श्रौर श्रलग परम्परा है।

गांधीजी ने डेपुटेशन वालों से कहा कि ४५ साल पहिले जब मैं लन्दन में पदता था, उस समय मैंने मनीपुर वालों की वीरता के बारे में बहुत कुछ जाना था। गांधीजी ने इन लोगों को भी जातपात का विचार त्यागने का उपदेश दिया श्रीर उनकी शिकायतों की श्रोर श्रासाम सरकार का ध्यान दिलाने को कहा।



# पुरबाकेरोत्र्या

### [ १३ फरवरी ]

महात्मा गांधी नोत्राखाली जिले की गाँव-गाँव श्रपनी यात्रा के ३६वें गाँव पुरवाकेरोत्रा श्राज पहुँचे। यह गाँव काफिलाटाली से दो मील की दूरी पर हैं। ४४ मिनट में यह फासला तयकर गांधीजी = वजकर १० मिनट पर यहाँ श्राये। श्राप यहाँ श्री नकुल साहा के मकान पर ठहरे।

काफिलाटाली से पुरवाकेरोत्रा तक रास्ते में स्वयं-सेवक लोग राष्ट्रीय भएडे लिये खड़े थे छौर मृक रूप से गांधीजी का स्वागत कर रहे थे। ये स्वयंसेवक गांधीजी के चलने के लिये बनाये गये पुलों छौर मार्ग की रच्चा के लिये तैनात किये गये थे, क्योंकि कुछ लोगों ने पिछले दिनों बनाये गये मार्ग को तोड़ा-फोड़। था और पुलों को नष्ट किया था। कुछ पुलों की तो दो बार मरम्मत करनी पड़ी। ये शरारत वे लोग कर रहे हैं, जो गांधीजी की नोआखाली यात्रा के विकद्ध है छौर चाहते हैं कि वे वहाँ से चले जायँ। परन्तु ऋहिंसा ब्रती स्वयंसेवक लोग बड़े धैर्य के साथ बार-बार नष्ट किये जाने वाले रास्तों और पुलों को फिर दुरुस्त करते हैं छौर कष्ट सहते हुए उनकी हिफाजत करते हैं।

पुरवाकेरोत्रा वड़ा गाँव है और इसकी ऋधिकांश आबादो मुसलमानों की है।

## जमीन पर किसानों का ऋधिकार

आज की प्रार्थना-सभा में गांधीजी ने किसानों के तेभागा त्रान्दोलन के सम्बंध में किये गये प्रश्न का उत्तर देते हुए एक बार फिर यह मत प्रकट किया कि जिस जमीन पर किसान खेती करते स्रोर रहते है, उस पर उन्हीं का ऋधिकार होना चाहिये श्रीर जमींदारों को चाहिये कि वे खेतो से होने वाली पैदावार मे श्रपना हिस्सा घटाकर एक तिहाई कर दें, परन्तु जमीदार की जमीन जप्त नहीं को जानी चाहिये। श्रापने श्रान्दोलन को अहिंसात्मक ढङ्ग सं चलाने पर जार दिया। आपने कहा कि अहिसा के आधार पर होने वाली शासन व्यवस्था में 'सकल भूमि गोपाल की' वाला सिद्धान्त माना जायगा। श्रापने कहा कि यदि तेभागा आन्दोलन हिंसात्मक ढङ्ग से चलाया गया, तो जमींदारों के विनाश के साथ-साथ किसानों की भी बरबादी होगी। गांधीजी ने किसानों के लिये सहयोग समितियों की बहुत श्रावश्यकता बतायी । परन्तु सहयोग समितियों का निर्माण भी त्रापने ऋहिंसात्मक ऋाधार पर करने पर जार दिया ऋौर कहा कि यदि हिसात्मक आधार पर यह आन्दोलन चलाया गया, तो देश के लिये वह विनाशकारी होगा।

जमीदारों को भी सलाह देने हुए गांधीजी ने कहा कि उन्हें ऋपनी जमोंन जप्त होने का खतरा उठाने की ऋपेचा पैदाबार में ऋपना हिस्सा घटा देना चाहिये और किमानों के हित का ध्यान रखना चाहिये। इसी में जमींदारों, किसानों और देश का भी हित है। त्राज की प्रार्थना सभा में भी बहुत थोड़े मुसलमान उपस्थित हुए थे, जिसका कारण यह है कि मुसलमानों में गान्धीजी के नोत्राखालों में रहने के विरुद्ध जोरों से प्रचार किया जा रहा है खोर मुसलमानों की सभाएँ की जा रही हैं। गांधीजी के मांग की सड़कें खोर पुल नष्ट करने की घटनायें भी अधिक होने की शिकायतें बढ़ती जा रही हैं। मुस्लिम जनता में गांधीजी के निवास के विरुद्ध फैलायी जाने वाली भावना के कारण इधर प्रार्थना सभाखों में मुसलमानों की संख्या घटती जा रही है। परन्तु मुसलमानों के बहुत कम संख्या में खाने पर भी आज की सभा में दर्शकों की भारी भीड़ एकत्र हुई थी।

# पश्चिमकेरोत्र्या

#### [ १४ फरवरी ]

महातमा गांधी १४ फरवरी को पुरवाकेरोत्रा से पिश्चम-केरोत्रा गाँव श्राये। दोनों गाँवों के बीच का लगभग दो मील का राक्ष्ता श्रापने ४० मिनट में पूरा किया। यहाँ के रास्ते में भी वालंटियर लोग राष्ट्रीय भएडे लिये तैनात थे श्रोर मार्ग की हिफाजत कर रहे थे।

पुरबाकेराश्चा में गांधीजी कविराज विषिनविहारीहास के मकान पर ठहरे। केरोश्चा एक भारी गाँव है, जिसके पुरवा श्चीर पश्चिम दो हिस्से हैं श्चीर ये दोनों भी श्चलग-श्चलग दो गाँवों के रूप में हो गये हैं। यहाँ भी ज्यादा श्चाबादी मुसलमानों की है।

पश्चिमकेरोन्ना की प्रार्थना-सभा में गांधीजी ने श्रोतात्रों के सामने मौलवी सुहरावदी द्वारा लिखित 'पैगम्बर के वचनों का संग्रह' में से दो वाक्य पढ़ सुनाये। इनमें से एक वाक्य में पैगम्बर ने यह कहा है कि सबसे श्रच्छा श्रादमी वह है, जो श्रच्छा काम करता है श्रौर सबसे खराब वह है, जो खराब काम करता है। गान्धीजी ने कहा कि ये बचन सभी लोगों के लिये हैं, केवल उन्हीं लोगों के लिये नहीं है, जो श्रपने को मुसलमान कहते हैं।

एक प्रश्न एक श्रोता ने छु श्राङ्क्त के सम्बंध में किया। इसके उत्तर में गांधीजी ने कहा कि मैं तो हमेशा से श्रीर पूरे बल के साथ यह कहता श्रा रहा हूँ कि छु श्राङ्क्त हिन्दू धर्म के लिये कलंक है श्रीर जब तक यह कायम रहती है, तब तक हिन्दुस्तान श्राजाद नहीं हो सकता।

## रामपुरा

#### [ १४ फरवरी ]

गांधीजी त्राज रामपुरा त्राये। रामपुरा पश्चिम केरोत्रा से लगभग दो मील पर है, जिसका रास्ता ४० मिनट में तयकर त्राप प्रातःकाल = बजकर १० मिनट पर पहुँचे। रामपुरा में महात्माजी दो दिन रहे।

रामपुरा में भी ऋघिकांश आबादी मुसलमानों की है। यहाँ आप स्वर्गीय श्री हरेन्द्रदास के मकान पर ठहरे। हरेन वाबू के मकान पर पहुँचते ही स्वयंसेवकों ने आपका स्वागत किया। छोटी लड़िकयों ने आपको मालाएँ पहिनायीं। गांधीजी के स्वागत में एक फाटक लगाया गया था, जिस पर राष्ट्रीय भएडा लगाया गया था। परन्तु कुछ मुसलमानों के एतराज करने पर भएडा भुका दिया गया था।

तीसरे पहर प्रार्थना-सभा हुई। सभा हरेन बाबू के हाते में हुई। सभा के बाहर कुछ मुसलमान खड़े थे और परचे बाँट रहें थे। परचों में मुसलमानों से कहा गया था कि वे गांधीजी की प्रार्थना सभात्रों में न जाया करें।

गांधीजी ने प्रार्थना-सभा में दो प्रश्नों का उल्लेख किया। एक प्रश्न मुसलमानों द्वारा हिन्दुच्चों के बायकाट के सम्बंध में था ख्रीर दूसरा सहकारिता के ख्राधार पर स्वेती के बारे में था। हिन्दुओं के बायकाट के बारे में गांधीजी ने कहा कि मैंने ऐसे बायकाटों की बातें सुनी हैं, पर आशा यही करता हूँ कि बायकाट जामृहिक रूप से नहीं होता होगा।

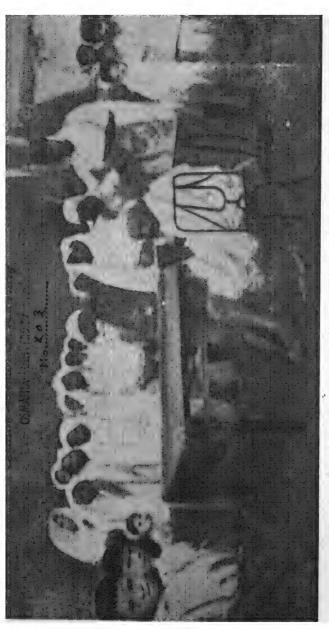
गांधीजी ने कहा कि अभी तीन-चार दिन हुए एक मुसलमान यात्री गुजरात से मुभसे मिलने के लिये आया था। मगर यहाँ उस पर बहुत नाराजी जाहिर की गयी और मुभसे मिलने का साहस करने के लिये लानत-मलामत की गयी। पर यात्री भी अपने निश्चय पर दृढ़ रहा और सब कुछ सहकर भी वह मुभसे आकर मिला। एक दूसरा बेचारा मुसलमान आज मेरे पास आया था। उसे भी बड़ी धमकियाँ दी गयी और मेरे पास आने से रोका गया।

रामपुरा थाने में एक रपट लिखायी गयी कि गाधीजी से मिलने के लिये बङ्गाल के बाहर के एक मुसलमान पर रामपुरा के कुछ लोगों ने हमला किया, उसे मारा-पीटा और उसका माल-मता छीन लिया। रिपोर्ट में कहा गया है कि पहले उस ख्यादमी से कहा गया कि गांधीजी से मिलने मन जाख्यो और खपने देश वापस चले जाख्यो। मगर उसने वापस जाने से इनकार किया, इस पर उसे मारा-पीटा गया और उसका सामान छीन लिया गया।

इन घटनाओं और बाँटे जाने वाले परचों का उल्लेख करते हुए गांधीजी ने कहा कि मैं अपने मुख्लिम दोस्तों और अन्य लोगों से भी कहना चाहता हूँ कि ऐसी बातों से डरे नहीं और अपने निश्चय से न विचलित हों। मैं तो यही समक्षता हूँ कि कुछ थोड़े से लोग ही यह सब करते होंगे। पर अगर यह सब व्याप-करूप से होता हो, तो सरकार का कर्तव्य है कि ऐसी परिस्थिति में वह उचित कार्रवाई करे।

श्रापने कहा कि परचों दीवारों पर भी चिपकाये गये हैं. जो एक दल के नाम से प्रकाशित हुए हैं। श्रापने यह भी कहा कि श्रगर बदिकस्मती से इसमें सरकारी नीति कुछ काम करती होगी, तो उस श्रवस्था में मैं इस प्रश्न पर श्रिहंसात्मक ढङ्ग से विचार करूँगा।

इसके बाद गान्धीजी ने दूसरे प्रश्न, ऋथीन् सहकारिता के श्राधार पर किसानों द्वारा खेती श्रह्न करने का जिक्र किया। श्रापन कहा कि सहकारिता के साथ खेती करना किसानों के लिये बहुत सुविधाजनक श्रीर लाभकारी होगा। मेरी दृष्टि में सहकारिता का सिद्धान्त यह है कि परस्पर सहयोग के साथ खेती की जाय श्रीर किसान लोग मिलकर खेत जोतें श्रीर बोहें। इससे परिश्रम, खर्च श्रौर सामानों की बचत होगी, किसानों के पास ऋधिक से ऋधिक खेती के ऋौजार हो जायंगे जिनसे पैदावार बढ़ाने में सहायता मिलेगी। तथा किसान ऋधिकाधिक समृद्धिशाली होंगे। इसके श्रतिरिक्त खेतों का रूप बदल जायगा, उत्सर जमीनें खेती के काम में श्रधिक मात्रा में काम में लायी जा सकेंगी श्रोर हिन्दुस्तान के किसानों की प्रसिद्ध गरीबी दूर हो जायगी। परन्तु यह तभी सम्भव है, जब किसान एकता श्रौर मित्रता की भावना से काम करें। इस तरह से किसानों की गरीबी दूर होने के साथ ही उनमें एकता बढ़ेगी, मुकदमे-



६-महियानपुर में इदिम पर्गिडत के प्रामें महासा जी गांधीजी के आगमन से मुसलमान श्रीरतों श्रीर बच्चों को बड़ी प्रसन्तता हुई

वाजियाँ बन्द हो जायँगी श्रौर सबसे बढ़कर साम्प्रदायिक समस्या हल हो जायगी।

## ्दूसरे दिन की सभा

रामपुरा के दूसरे दिन की प्रार्थना-समा में गान्धीजी ने अपने नात्राखाली के दौरे के सम्बन्ध में मि० फजलुलहक के विरोधी विचारों का उल्लेख किया। आपने कहा कि अखबारों में मि० फजलुलहक के जो भाषण छपे हैं, उन पर मुक्ते विश्वास नहीं होता और मैं नहीं सममता कि उन्होंने ऐसी वार्त कही होंगी।

गांधाजी का आज मौन-दिवस था, अतः उनका लिखित भाषण सभा में पढ़ा गया था। गांधीजी ने अपने भाषण में कहा था कि मि० हक के जो भाषण अखवारों में छपे हैं, उनमें यह कहा गया है कि मुक्ते इस्लाम मजहब के बारे में कोई बिचार प्रकट करने का अधिकार नहीं है और मेरे कथनों से दोनों सम्प्रदायों के बीच कटुता फैलती है। मगर मुक्ते विश्वास नहीं होता कि मि० फजलुलहक की स्थिति के व्यक्ति ने ऐसी बातें कही होंगी।

गांधीजी ने त्रागे कहा कि मैं अपने जीवन-भर विभिन्न सम्प्रदायों की एकता के लिये वाम करता रहा हूँ। मैं अपने को जिनना हिन्दू सममता हूँ, उतना ही मुसलमान भी सममता हूँ और इस्लाम के सम्बंध में जो कुछ कहता हूँ, वह पैगम्बर मोहम्मद के कथनों के श्राधार पर ही कहता हूँ। फिर भी मुस्लिम मित्रों को यह ऋधिकार है कि जो कुछ मैं कहता हूँ, उसे माने या न माने।

गांधीजी ने अखबारों में प्रकाशित मि० फजलुलहक के एक अन्य भाषण का उल्लेख किया, जिसमें यह कहा गया है कि मि० हक ने कहा कि जब गांधीजी दिच्चण अफ्रीका से लौटकर आये थे, तो मैंने उनसे कहा था कि आप मुसलमान हो जाय, तो गांधीजी ने यह जवाब दिया था कि मैं मुसलमान ही तो हूँ। मगर मुफ्ते गांधीजी के इस कथन से सन्तोप नहीं हुआ और मैने कहा था कि इस बात की घोपणा आप सार्वजनिक रूप से कर दें, मगर गांधीजी ने ऐसा करने से इनकार कर दिया।

गांधीजी ने मि० हक के इस कथन के मम्बंध में कहा कि मुक्ते तो याद नहीं आता कि मि० हक की मेरी ऐसी कोई बात-चीत हुई थी। इसी तरह की और भी वातें मि० हक द्वारा कही गयी छपी है, जिनके लिये मुक्ते विश्वास नहीं होता कि उन्होंने ऐसी बातें कही होंगी। मैं यह भी नहीं समभता कि मि० हक ने अखबारों में प्रकाशित अपने इन व्याख्यानों को देखा भी होगा। मैं तो तब तक इन व्याख्यानों पर विश्वास नहीं कर सकता, जब तक कि मि० फजलुलहक स्वयं यह खीकार न कर लें कि उन्होंने ऐसी बातें कही है। मुक्ते आशा है कि वे एक वक्तव्य प्रकाशित कर या तो इन कथनों का खण्डन करेंगे या उनकी तसदीक करेंगे।

यह प्रयत्न सफल होगा श्रीर न केवल बङ्गाल बल्कि समस्त भारत को इसमे लाभ पहुँचेगा।

गान्धीजी के साम्प्रदायिक एकता के इस सर्वथा नूतन प्रयोग की प्रशंसा भारत के विभिन्न सम्प्रदायों के प्रमुख नेतात्रों के त्रातिरिक्त त्रन्य देशों के भी प्रमुख राजनीतिज्ञां ने मुक्तकएठ से की है। भारत के लिये नियुक्त किये गये कनाड़ा के हाई-कमिश्नर मि॰ जानकीन ने कहा है- महात्मा गान्धी वर्तमान युग के खौर मंसार के सभी देशों में सर्वश्रेष्ठ खौर सर्वमहान व्यक्ति है। गान्धाजी ने अपनी इस वृद्धावस्था में पूर्वी वंगाल में साम्प्रदायिक एकता का जो महान श्रौर स्तुत्य कार्य उठाया है, उसमें उन्हें ऋवश्य सफलता प्राप्त होगी।' इंगलैएड के प्रमुख राजनीतिज्ञ मिं होरेस एलेकजंडर ने कहा है- गार्ग्धाजी पूर्वी वंगाल में जिस परस्पर भाई-चारे, सिहच्याता खौर एकता का प्रचार कर रहे है ऋौर घर-घर इसका संदेश पहुँचा रहे हैं, वह केवल बंगाल तथा भारत के लिये न होकर वर्तमान समस्त संसार के लिये है श्रीर मेरा विश्वास है कि संसार की स्थायी शान्ति के लिये यही माग श्रनुसरण करना ह गा। श्रमेरिका के सुप्रसिद्ध राजनातिज्ञ तथा लेखक लुई फिशर ने कलकत्ते के श्रमेजी पत्र 'हिन्दुस्तान स्टैंर्डड' के लिये विशेष हप से लिखे गये अपन एक लेख में लिखा है-'वर्तमान संसार गरीबी निर्धनता त्रीर बुभुत्त की दशा में तड़प रहा है। लोकतंत्र के सामने भयानक खतरा उपस्थित है, सुरचा और नैतिकता का संसार से लोप हो रहा है। ऐसे संकटपूर्ण समय में संसार की द्दांब्ट अपने त्राण के लिये एकमात्र महात्मा गांधी पर है, जो इस बात के प्रचारक हैं कि विशुद्ध ध्येय की प्राप्ति के लिये विशुद्ध साधन ही उपयोग किये जाने चाहिये। गान्धीजी जितने ऊँचे दरजे के राजनीतिज्ञ हैं, उतने ही ऊँचे दरजे के नैतिक श्रादशों का श्रनुसरण करने

वाले भी हैं। वर्तमान युग की मानव जाति को गान्धीजी के नेतृत्व की आवश्यकता है और इसी से उसका उद्धार होगा।'

गान्धीजी के इस कष्टपूर्ण दौरे श्रौर एकता के इस श्रभूत-पूर्व प्रयत्न का मुस्लिम संसार पर क्या प्रभाव पड़ा है, इसं स्थाना भाव के कारण विस्तृतरूप से न बताकर केवल इतना ही लिखकर सन्तोष प्रह्ण करना पड़ता है कि साम्प्रदायिक भावना से श्रोत-प्रोत श्रलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी की मुस्लिम लीग के संयुक्त मंत्री इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने गान्धीजी को लिखा कि—'नोश्राखाली में श्रापके एकता के प्रयत्न से मैं पूण रूप से सहमत हूँ श्रोर यदि श्राप श्राह्मा दें, तो मैं भी श्रापके साथ ग्रह कर एकता के लिये कार्य करूँ।'

स्वतः महत्मा गान्धी ने साम्प्रदायिक एकता के अपने इस नूतन प्रयोग को अपने जीवन का सबसे कठिन कार्य बताया है।

निस्तन्देह यह प्रयोग अत्यन्त महान श्रीर साथ ही अत्यन्त कठिन है, जिसे भगवान बुद्ध के वर्तमान श्रवतार महात्मा गान्धों ने विरोधियों के प्रवल बिरोध के बीच उठाया है। परन्तु देश की कोटि-कोटि जनता की यह आवाज श्रीर हार्दिक शुभ-कामना आपके साथ है—'देव! तुम्हारा यह महानतम प्रयोग सफल हो। और भारत को स्वाधीन कर तुम अपने विश्व-नेतृत्व से उस जगद्गुरू का उच्चतम पद अपने जीवन-काल में ही पुनः प्राप्त करा सको अरे

